सत्यमेव जयते

नूतन क्षितिज

सत्रहवां संस्करण

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

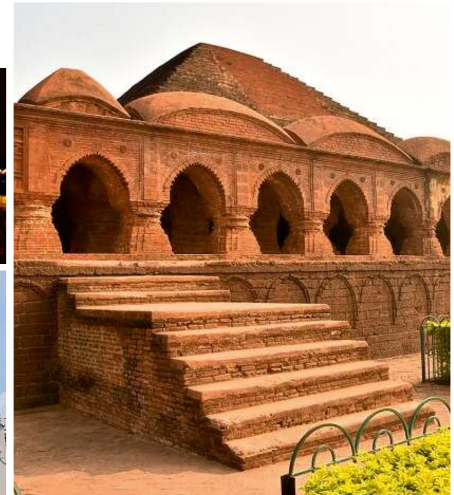

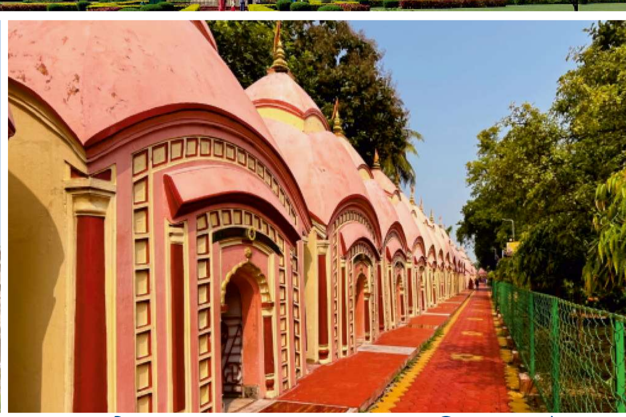

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II), पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700 064

पत्रिका परिवार

अधिकारियों के क्रम: श्री मनीष कुमार, प्रधान महालेखाकार महोदय (बाएं से चतुर्थ), श्री सतीश एम., उपमहालेखाकार/प्रशासन (बाएं से तृतीय), श्री अलतमश ग़ाज़ी, उपमहालेखाकार/ ए. एम. जी. IV (बाएं से पंचम), श्री वसीम मिन्हास, सहायक निदेशक (राजभाषा) (बाएं से द्वितीय), श्री राजीव दास, वरिष्ठ अनुवादक (बाएं से षष्ठ), श्री अमित कुमार साह, कनिष्ठ अनुवादक (बाएं से प्रथम), सुश्री सुमन कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक,(बाएं से अष्टम) तथा श्री सोनू कुमार, कनिष्ठ अनुवादक (बाएं से सप्तम)

संरक्षक

श्री मनीष कुमार

प्रधान महालेखाकार

मार्गदर्शक

श्री सतीश एम.

उपमहालेखाकार / प्रशासन

संपादक

श्री वसीम मिन्हास

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहयोगी संपादक मंडल

श्री राजीव दास

वरिष्ठ अनुवादक

श्री अमित कुमार साह

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुमन कुमारी

कनिष्ठ अनुवादक

श्री सोनू कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

नूतन क्षितिज

स्वत्वाधिकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II), पश्चिम बंगाल

प्रकाशन

नूतन क्षितिज (हिंदी पत्रिका)

वर्ष

2025

अंक

सत्रहवां

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

प्रकाशक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II), पश्चिम बंगाल
सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, तृतीय बहुतलीय कार्यालय भवन, पाँचवा तल
सॉल्ट लेक, कोलकाता - 700 064

* संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकार के विचार उनके स्वयं के हैं।

कार्यालय में राजभाषा हिंदी की प्रगति का संक्षिप्त विवरण

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) पश्चिम बंगाल का कार्यालय जितना अपने मूल विभागीय कार्य के प्रति सजग एवं दक्ष है उतना ही राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति भी समर्पित है क्योंकि राजभाषा नीति का सुचारु कार्यान्वयन करना सभी विभागों का संवैधानिक दायित्व है। कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन सुचारु ढंग से हो इसके लिए कार्यालय का हिंदी कक्ष मुख्यालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कैलेंडर के अनुसरण में कार्यालय में हिंदी के कार्यान्वयन की गतिविधियों का अनुपालन सुनिश्चित करवाने हेतु प्रयासरत है। कार्यालय में वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान हिंदी पत्राचार तथा हिंदी में टिप्पणी लेखन की प्रतिशतता, राजभाषा विभाग द्वारा “ग” क्षेत्र के लिए हिंदी पत्राचार तथा हिंदी टिप्पणी लेखन हेतु निर्धारित लक्ष्य से अधिक रही । कार्यालय में राजभाषा की प्रगति की समीक्षा हेतु विगत वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 तिमाही बैठकें आयोजित की गई।

वर्ष के दौरान कार्यालय में हिंदी के कार्य को बढ़ावा देने हेतु 4 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालयीन हिंदी, राजभाषा अधिनियम, नियम, प्रावधान, हिंदी तिमाही रिपोर्ट सटीक रूप से भरने जैसे इत्यादि विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया ।

साथ ही, कार्यालय में वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान दिनांक 14-09-2024 से दिनांक 27-09-2024 तक हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया तथा वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "नूतन क्षितिज" के 16वें अंक का विमोचन दिनांक 27.09.2024 को किया गया।

प्रधान महालेखाकार का संदेश

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), पश्चिम बंगाल, कोलकाता द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "नूतन क्षितिज" के 17वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति हमारे समर्पण, उसके संवर्धन और राष्ट्रीय भावना का जीवन्त दस्तावेज है।

हिंदी, न केवल भारत की राजभाषा है, बल्कि यह हमारी भावनाओं, विचारों और सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। हिंदी के माध्यम से हम अपने अतीत से जुड़ते हैं और भविष्य की ओर आशा भरी दृष्टि से देखते हैं। राजभाषा के रूप में हिंदी का कार्यालयीन उपयोग बढ़ाना हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी है, जिसे हम सबको सामूहिक रूप से निभाना है। वर्तमान समय में हिंदी ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी है। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि हम एक ऐसी भाषा से जुड़े हैं जो सरल, सजीव, सुबोध और व्यापक है।

"नूतन क्षितिज" पत्रिका का 17वाँ अंक कार्यालयीन परिवार के रचनात्मक भावों का एक समर्पित प्रयास है। यह पत्रिका हम सबके लिए एक ऐसा मंच है जहाँ हम अपनी भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता को हिंदी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

इस अंक में प्रकाशित रचनाएं हमारे कार्मिकों की सोच, कल्पनाशक्ति और सृजनात्मक प्रयासों को दर्शाती हैं। मैं पत्रिका के संपादक मंडल और उन सभी रचनाकारों को हृदयतल से बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस अंक को समृद्ध किया।

"नूतन क्षितिज" पत्रिका के 17वें अंक के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(मनीष कुमार)
प्रधान महालेखाकार

संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय), पश्चिम बंगाल, कोलकाता द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "नूतन क्षितिज" के 17वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी को संवारने और निखारने के लिए तथा राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना अनिवार्य है। "नूतन क्षितिज" पत्रिका के 17वें अंक का प्रकाशन इसी दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

"नूतन क्षितिज" पत्रिका का 17 वां अंक कार्यालय के उन सभी कार्मिकों की लेखनी का परिणाम है जिन्होंने हिंदी को आत्मसात कर अपनी रचनाओं से उसे सशक्त स्वर प्रदान किया है।

हिंदी भाषा ने सदियों से भारतीय जनमानस को जोड़े रखा है। यह भाषा आज न केवल साहित्य की, बल्कि तकनीकी, प्रशासनिक और व्यावसायिक दुनिया की भी भाषा बनती जा रही है। यह देश की विविधता में एकता को दर्शाने वाला वह माध्यम है जो राष्ट्र को भावनात्मक स्तर पर जोड़े रखता है। हिंदी को कार्यस्थल पर व्यवहारिक रूप से अपनाना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सतीश

(सतीश एम.)
उप महालेखाकार/प्रशासन

संदेश

"नूतन क्षितिज" का 17वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। "नूतन क्षितिज" पत्रिका का यह अंक हमारे कार्यालय के सभी सदस्यों की सृजनशीलता और हिंदी प्रेम का साक्षी है। पत्रिका का यह अंक हमारी भाषा-संवेदना, रचनात्मकता और हिंदी भाषा के प्रति निष्ठा का परिणाम है। हिंदी भाषा में प्रकाशित रचनाएँ न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम हैं, बल्कि वे हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी सहेजती हैं।

हिंदी को कार्यसाधक भाषा बनाना और कार्यालयीन कार्यों में उसका व्यापक प्रयोग सुनिश्चित करना हम सभी की जिम्मेदारी है। हिंदी भाषा का संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। इस पत्रिका के माध्यम से हमें हिंदी लेखन को प्रोत्साहित करने का सुअवसर प्राप्त होता है।

इस अंक में प्रकाशित रचनाएं हिंदी भाषा की सुंदरता और शक्ति को दर्शाती हैं। सभी रचनाकारों का हृदय से धन्यवाद जिन्होंने इस अंक को सारगर्भित और पठनीय बनाया तथा इस अंक को अपने सृजन से गौरवान्वित किया। आशा है यह अंक आप सभी के लिये प्रेरक सिद्ध होगा।

पत्रिका के संपादक मंडल के सभी सदस्यों और रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के श्रेष्ठ एवं निरंतर प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(शिशिर कुमार श्रीवास्तव)
उप महालेखाकार/ए.एम.जी. III

संदेश

कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "नूतन क्षितिज" का 17 वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। "नूतन क्षितिज" के 17वें अंक का प्रकाशन हम सभी के लिए एक गर्व और संतोष का विषय है। यह पत्रिका कार्यालयीन परिवार की सृजनात्मक ऊर्जा का सशक्त प्रमाण है, जो राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु एक सराहनीय पहल है। यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रति हमारे सामूहिक प्रयासों, भावनाओं और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का उत्कृष्ट प्रतीक है।

राजभाषा हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पहचान, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना का आधार है। हिंदी भाषा ने भारत की विविध भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं को एक सूत्र में पिरोया है। यह भाषा भावनाओं की भाषा है, जन-जन की भाषा है। आज जब हिंदी वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है, तब यह आवश्यक हो गया है कि हम सभी अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों और संवाद में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

हमें गर्व है कि हमारे कार्मिकों ने अपनी लेखनी से इस पत्रिका को समृद्ध किया है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं विविध विषयों को स्पर्श करती हैं, और पाठकों को आत्मीय अनुभूति कराती हैं। आप सभी पाठकों से अपेक्षा है कि आप इस अंक का आनंद लें । मैं सभी रचनाकारों को उनके योगदान हेतु साधुवाद देता हूँ। साथ ही संपादक मण्डल को भी उनके रचनात्मक संयोजन के लिए बधाई देता हूँ।

अलतमश ग़ाज़ी

(अलतमश ग़ाज़ी)
उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-IV

संपादकीय

राजभाषा को समर्पित हिंदी गृह पत्रिका "नूतन क्षितिज" का 17वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। "नूतन क्षितिज" पत्रिका के एक और नए अंक के प्रकाशन के साथ हम फिर से अपने राजभाषायी दायित्वों के निर्वहन की ओर अग्रसर हैं।

हिंदी हमारी बोलचाल की भाषा के साथ-साथ राजकाज की भाषा भी है| हम सब अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए राजभाषा को प्रगति पथ पर ले जाने में सफल हो रहे हैं| मीलों हम आ गये और मीलों हमें जाना है और यह तभी सम्भव हो सकेगा जब हम सभी हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास में अपना योगदान देते रहेंगे |

कार्यालय में हिंदी के कार्य में निरंतर वृद्धि होना इस बात का प्रमाण है कि हिंदी गृह पत्रिका "नूतन क्षितिज" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है तथा इसका प्रत्येक अंक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा है । पत्रिका के प्रत्येक नए अंक का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति पाठकों की सोच, समझ और ज्ञान को विकसित करता है। यह पत्रिका एक माध्यम है, हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की अभिव्यक्ति का, उनकी रचनात्मक और सृजनात्मक प्रतिभा को मुखरित करने का।

"नूतन क्षितिज" पत्रिका के 17वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं प्रधान महालेखाकार महोदय, सभी उप महालेखाकार तथा हिंदी प्रेमी रचनाकारों का बहुत आभारी हूँ जिनके योगदान से पत्रिका का यह अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

मुझे विश्वास है कि हिन्दी गृह पत्रिका "नूतन क्षितिज" के माध्यम से कार्यालय के सभी सदस्यों को राजभाषा में कार्यालयीन कामकाज करने और राजभाषा से जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी तथा यह अंक भी आप सभी को पसंद आएगा। आपकी प्रतिक्रियाएं आगामी "नूतन क्षितिज" पत्रिका के अंक को और बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।

शुभकामनाओं सहित।

वसीम मिन्हास

(वसीम मिन्हास)
सहायक निदेशक/राजभाषा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	प्रयागराज का इतिहास	श्री शिशिर कुमार श्रीवास्तव	1
2.	बंधन	श्री कृष्ण शंकर झा	3
3.	सरहद के सिपाही : घर से दूर, देश के लिए समर्पित	सुश्री सुमन कुमारी	4
4.	अंतरात्मा का दीपक	श्री मनोरंजन कुमार	5
5.	दक्षिणेश्वर काली मंदिर: एक आध्यात्मिक ओएसिस (Oasis)	सुश्री सुमन कुमारी	6
6.	कोमल-सा मन	सुश्री रश्मि कुमारी	7
7.	प्रजातंत्र एवं भारत में निहित विविधता में एकता	सुश्री रश्मि सिंह	8
8.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	श्री संजय बनर्जी	11
9.	ऑपरेशन सिंदूर: भारतीय सेना की वीरता और राष्ट्रप्रेम का प्रतीक	श्री सुजय प्रसाद	12
10.	काव्य-दर्शन भाग I	श्री कमल कुमार	15
11.	भारत-एक गाथा	श्री आशुतोष कुमार पाण्डेय	16
12.	काव्य-दर्शन भाग II	श्री कमल कुमार	17
13.	प्रकृति के साथ सामंजस्य - सुविधा या दुविधा	श्री कृष्ण शंकर झा	18
14.	चुप	श्री कमल कुमार	22
15.	मित्रता: जीवन की सबसे सच्ची साझेदारी	सुश्री प्रीति कुमारी	23
16.	मेरा प्यारा स्कूल	श्री दिव्यांश प्रसाद	25
17.	धरती का स्वर्ग – मेरी कश्मीर यात्रा (एक यात्रा-वृत्तांत)	सुश्री नीलम प्रसाद	26
18.	खुद को बदलो, दुनिया बदलेगी	श्री राजेश चौधरी	28
19.	भारतीय समाज में आधुनिक नारी की स्थिति	श्री सुमन दत्त	29
20.	दुनिया हैरत में है	सुश्री सोनिया	31
21.	बेरोजगारी: भारत के समक्ष एक जटिल और विकराल सामाजिक-आर्थिक समस्या	श्री राजेश चौधरी	32
22.	रवि-रजनी का मधुर- मिलन	श्री संतोष कुमार ठाकुर	34
23.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता - आशीर्वाद या अभिशाप	श्री कौशिक चक्रवर्ती	36
24.	संघर्ष की स्याही से	श्री शेखर प्रियदर्शी	38
25.	जीवन – एक अबूझ पहेली	श्री मनोरंजन कुमार	39
26.	हम थक क्यों जाते हैं?	श्री संजय बनर्जी	40
27.	गौतम बुद्ध और विश्व शांति	श्री करुणाकर साहू	41
28.	दिल्ली का बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल)	श्री राजीव दास	44
29.	संगीत - अनुपम अनुभूति	श्री अमित कुमार साह	47
30.	हमारे जीवन में मोबाइल फ़ोन का दखल	श्री वसीम मिन्हास	49
31.	युवा मानसिक स्वास्थ्य : बहुआयामी दृष्टिकोण और सुधार की राह	श्री अजय चौधरी	51
32.	भारत देश महान	सुश्री सोनिया	54
33.	श्री राना देब, व.लेप.अ. द्वारा रचित आलेख (ICMAI) के मासिक जर्नल में प्रकाशित	श्री राना देब	55
34.	कार्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ		56-60

प्रयागराज का इतिहास

प्रयागराज के नाम के संबंध में हिंदू मान्यता के अनुसार यह कहा जाता है कि, यहां सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि कार्य पूर्ण होने के पश्चात् प्रथम यज्ञ किया था। इसी प्रथम यज्ञ के प्र और याग (यज्ञ से याग) से मिलकर प्रयाग बना और इस स्थान का नाम प्रयाग पड़ा जहाँ भगवान श्री ब्रम्हा जी ने सृष्टि का सबसे पहला यज्ञ सम्पन्न किया था।

प्रयागराज, अपने गौरवशाली अतीत एवं वर्तमान तीर्थनगरी के रूप में जाना जाता है । इसके साथ प्रयागराज भारत के ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरों में से एक है। यह हिंदू, मुस्लिम, सिख, जैन एवं ईसाई समुदायों की मिश्रित संस्कृति का शहर है। प्रयागराज जो की इलाहबाद के नाम से प्रसिद्ध है, मुग़ल सम्राट अकबर के मत दीन ए इलाही से लिया गया बताया जाता है

इलाहबाद जो वर्तमान में प्रयागराज के नाम से प्रसिद्ध है, उत्तर प्रदेश के बड़े जनपदों में से एक है। यह तीन नदियों- गंगा, यमुना तथा गुप्त सरस्वती के संगम पर स्थित है। संगम स्थल को त्रिवेणी भी कहा जाता है इसलिए यह शहर त्रिवेणी के नाम से भी जाना जाता है। यह हिन्दुओं के लिए विशेषकर पवित्र स्थल है। प्रयाग (वर्तमान में प्रयागराज) में आर्यों की प्रारंभिक बस्तियां स्थापित हुई थी।

प्रयागराज के सम्बन्ध में निम्न लोकोक्तियाँ भी प्रसिद्ध है :

"प्रयागस्य पवेशाद्वै पापं नश्यति: तत्क्षणात्।"— प्रयाग में प्रवेश मात्र से ही समस्त पाप कर्म का नाश हो जाता है ।

"गंगे तव दर्शनार्थ मुक्ति" का शाब्दिक अर्थ है: "हे गंगा, केवल तुम्हारे दर्शन मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होती है।" अर्थ और भावार्थ: यह वाक्य गंगा नदी के प्रति गहरी श्रद्धा और उसकी पवित्रता को व्यक्त करता है। भारतीय संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं में गंगा को केवल एक नदी नहीं, बल्कि "मां गंगा" के रूप में पूजा जाता है।

इस पावन नगरी के अधिष्ठाता भगवान श्री विष्णु स्वयं हैं और वे यहाँ माधव रूप में विराजमान हैं। भगवान के यहाँ बारह स्वरूप विद्यमान हैं। जिन्हें द्वादश माधव कहा जाता है। सबसे बड़े हिन्दू सम्मेलन महाकुंभ की चार स्थलियों में से एक है, शेष तीन हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक हैं। हिन्दू धर्मग्रन्थों में वर्णित प्रयाग स्थल पवित्रतम नदी गंगा और यमुना के संगम पर स्थित है। यहीं सरस्वती नदी गुप्त रूप से संगम में मिलती है, अतः ये त्रिवेणी संगम कहलाता है, जहां प्रत्येक बारह वर्ष में कुंभ मेला लगता है।

प्रयाग सोम, वरुण तथा प्रजापति की जन्मस्थली है। प्रयाग का वर्णन वैदिक तथा बौद्ध शास्त्रों के पौराणिक पात्रों के सन्दर्भ में भी रहा है। यह महान ऋषि भारद्वाज, ऋषि दुर्वासा तथा ऋषि पन्ना की ज्ञानस्थली थी। ऋषि भारद्वाज ने यहां लगभग 5000 ई०पू० में निवास करते हुए 10000 से अधिक शिष्यों को पढ़ाया। वह प्राचीन विश्व के महान दार्शनिक थे।

वर्तमान झूंसी क्षेत्र, जो कि संगम के बहुत करीब है, चंद्रवंशी (चंद्र के वंशज) राजा पुरुरवा का राज्य था। पास का कौशाम्बी क्षेत्र वत्स और मौर्य शासन के दौरान समृद्धि से उभर रहा था। 643 ई० में चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने पाया कि जो इस स्थान में निवास करते थे, वे इस जगह को अति पवित्र मानते थे।

प्रयागराज के ऐतिहासिक महत्त्व के कुछ वर्षो का उल्लेख नीचे किया जा रहा है

1575 ई० — संगम के सामरिक महत्व से प्रभावित होकर सम्राट अकबर ने "इलाहाबाद" (वर्तमान में प्रयागराज) के नाम से शहर की स्थापना की जिसका अर्थ "अल्लाह का शहर" है। मध्ययुगीन भारत में शहर का सम्मान भारत के धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्र के तौर पर था। एक लंबे समय के लिए यह मुगलों की प्रांतीय राजधानी थी जिसे बाद में मराठाओं द्वारा कब्जा कर लिया गया था।

1801 ई० — शहर का ब्रिटिश इतिहास इस वर्ष शुरू हुआ जब अवध के नवाब ने इसे ब्रिटिश शासन को सौंप दिया। ब्रिटिश सेना ने अपने सैन्य उद्देश्यों के लिए किले का इस्तेमाल किया।

1857 ई० — यह शहर आजादी के युद्ध का केंद्र था और बाद में अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का गढ़ बन गया।

1858 ई० — आजादी के प्रथम संग्राम 1857 के पश्चात ईस्ट इंडिया कंपनी ने मिंटो पार्क में आधिकारिक तौर पर भारत को ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया था। इसके बाद शहर का नाम इलाहाबाद रखा गया तथा इसे आगरा-अवध संयुक्त प्रांत की राजधानी बना दिया गया।

1868 ई० — प्रयागराज न्याय का गढ़ बना जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय की स्थापना हुई।

1871 ई० — ब्रिटिश वास्तुकार सर विलियम ईमरसन ने कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल डिजाइन करने से तीस साल पहले आल सैंट कैथेड्रल के रूप में एक भव्य स्मारक की स्थापना की।

1887 ई० — इलाहाबाद विश्वविद्यालय चौथा सबसे पुराना विश्वविद्यालय था। प्रयागराज भारतीय स्थापत्य परंपराओं के साथ संश्लेषण में बने कई विक्टोरियन और जॉर्जियाई भवनों में समृद्ध रहा है।

यह शहर ब्रिटिश राज के खिलाफ भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का केंद्र था जिसका आनंद भवन केंद्र बिंदु था। इलाहाबाद (वर्तमान में प्रयागराज) में महात्मा गांधी ने भारत को मुक्त करने के लिए अहिंसक विरोध का कार्यक्रम प्रस्तावित किया था। प्रयागराज ने स्वतंत्रता के पश्चात भारत को सबसे अधिक प्रधानमंत्री पद प्रदान किया है – जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, वी.पी.सिंह। पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे।

प्रयागराज मूल रूप से एक प्रशासनिक और शैक्षिक शहर है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश के महालेखा परीक्षक, रक्षा लेखा के प्रमुख नियंत्रक (पेंशन) पीसीडीए, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, पुलिस मुख्यालय, मोती लाल नेहरू प्रौद्योगिकी संस्थान, मेडिकल और कृषि कॉलेज, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईआईटी), आईटीआई नैनी और इफ्को फुलपुर, त्रिवेणी ग्लास यहां के कुछ प्रमुख संस्थान हैं।

सभ्यता के प्रारम्भ से ही प्रयागराज विद्या, ज्ञान और लेखन का गढ़ रहा है। यह भारत का सबसे जीवंत राजनीतिक तथा आध्यात्मिक रूप से जागरूक शहर है।

श्री शिशिर कुमार श्रीवास्तव
उप महालेखाकार/ए एम जी III

बंधन

एक बंधन ममता का
माँ की आँचल का
निश्चल निर्मल प्रेम का
धरा पर देवी के साक्षात्कार का
बिना किसी स्वार्थ के बारहों याम
करुण रस के प्रवाह का ।

एक बंधन जन्मभूमि का
बचपन के अनछुए एहसास का
मिट्टी में लोटने का
धरती के आलिंगन का ।

एक बंधन सहपाठी का
छलरहित लगाव का
बिना समझे तकरार का
कपटरहित शाश्वत झुकाव का ।

एक बंधन सहचर का
अंजान से आत्मिक स्नेह का
प्रेम की पराकाष्ठा का ।

एक बंधन मुक्ति का
तमस से ज्योति का
स्वजन से सर्वजन का
वसुधेव कुटुंबकम का
स्वयं को जानने का ।

एक बंधन आत्मा का
अनेक से अद्वैत का
साकार से निराकार का ।

एक बंधन प्रकृति का
पेड़ों की छाँव का
नदियों की गहराई का
पर्वत की अडिग शक्ति का
हरितिमा में बसी जीवन की महिमा का ||

एक बंधन संस्कारों का
पूर्वजों के आशीष का
ऋषियों की वाणी का
मर्यादा और संयम का
मानवता की साधना का ।

एक बंधन एकांत का
सतत निरत तपस्या का
आत्मा के परिष्कार का
मन के विकारों के प्रक्षालन का
परम शांति के द्वार का ।
एक प्रयास मोह-क्षय का
सर्वस्व के त्याग का
शव से शिव का
नर से नारायण का
ब्रह्म से परब्रह्म का ।

श्री कृष्ण शंकर झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

सरहद के सिपाही: घर से दूर, देश के लिए समर्पित

जब हम अपने घरों में चैन की नींद सोते हैं, त्योहारों पर खुशियां मनाते हैं, या अपने परिवार के साथ समय बिताते हैं, तब देश की सीमाओं पर तैनात सीमा सुरक्षा बल (BSF) के जवान अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद रहते हैं। ये वो जाँबाज़ सिपाही है जो अपने परिवार, अपने घर की सुख-सुविधाओं और व्यक्तिगत खुशियों को त्यागकर देश की सुरक्षा को सर्वोपरि रखते है। इनका आदर्श वाक्य है- "जीवन पर्यंत कर्तव्य" जिसका अर्थ है "मृत्यु तक कर्तव्य"। सीमा सुरक्षा बल भारत की सीमाओं की सुरक्षा और संरक्षा करने के अलावा, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत कार्यों, बचाव आदि में भी शामिल है।

परिवार से दूरी का दर्द :

सीमा सुरक्षा बल के जवान जब घर से दूर, दुर्गम परिस्थितियों में ड्यूटी पर होते हैं, तो उनका जीवन किसी चुनौती से कम नहीं होता। रेगिस्तानों की तपती रेत हो या बर्फीले पहाड़ों की जमा देने वाली ठंड, घने जंगलों की चुनौतियां हो या नदियों का तेज बहाव – हर मौसम, हर परिस्थिति में वे अडिग खड़े रहते है। परिवार से दूर रहना उनके लिए सबसे बड़ी अग्निपरीक्षा होती है। त्योहारों पर जब पूरा देश जश्न मनाता है, तब उनके मन में अपने परिवार की यादें कौंधती है, लेकिन देशप्रेम का जज़्बा उन्हें कमजोर नहीं पड़ने देता। अपने बच्चों की किलकारी, पत्नी का साथ, माता-पिता का आशीर्वाद – ये सब कुछ वे अपने कर्तव्य के आगे गौण कर देते है।

अपने घर और परिवार से दूर रहना इन जवानों के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। त्योहारों पर, जन्मदिन पर या किसी भी पारिवारिक समारोह में वे अपने प्रियजनों के साथ नहीं होते। उनके बच्चे अपने पिता को याद करते हैं, पत्नियाँ अपने पतियों का इंतजार करती हैं, और माता-पिता अपने बेटों की सलामती की दुआ करते हैं। यह दूरी उनके दिल में एक टीस बनकर रहती है, लेकिन देश सेवा का जज्बा उन्हें हर मुश्किल का सामना करने की शक्ति देता है। वे जानते हैं कि उनकी अनुपस्थिति ही उनके परिवार और देश को सुरक्षित रखती है।

मानसिक और शारीरिक दृढ़ता :

इस तरह के जीवन के लिए सिर्फ शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता भी बेहद ज़रूरी है। लगातार तनाव, खतरे का डर और परिवार से दूरी का सामना करते हुए भी वे अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा से करते है। उनका हौसला और जुनून ही उन्हें इन सब चुनौतियों से लड़ने में मदद करता है। वे जानते हैं कि उनकी एक भी चूक देश के लिए भारी पड़ सकती है, इसलिए वे हर पल चौकन्ने रहते हैं। उनकी दिनचर्या बेहद कठोर होती है। सुबह से शाम तक गश्त, चौकसी, निगरानी और किसी भी घुसपैठ या खतरे का सामना करने के लिए हर पल तैयार रहना। कई बार तो उन्हें हफ्तों तक ऐसे इलाकों में रहना पड़ता है जहाँ मूलभूत सुविधाओं का भी अभाव होता है। मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत होना उनके लिए अत्यंत आवश्यक है। वे सिर्फ बाहरी दुश्मनों से ही नहीं लड़ते, बल्कि अकेलेपन, उदासी और विपरीत परिस्थितियों से भी जूझते हैं फिर भी, उनके चेहरे पर एक अलग ही तेज और आंखों में देश के प्रति समर्पण का भाव साफ झलकता है। उन्हें पता है कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं, वह देश के करोड़ों लोगों की सुरक्षा और शांति के लिए है। उनके त्याग और बलिदान से ही हम सब सुरक्षित महसूस करते हैं। जब भी कोई जवान अपनी ड्यूटी पर शहीद होता है, तो वह पूरे देश के लिए एक प्रेरणा बन जाता है।

सीमा सुरक्षा बल के जवानों का यह बलिदान, समर्पण, तथा घर से दूर रहकर भी देश के लिए मर मिटने का जज़्बा वाकई अतुलनीय है। हमें उनके योगदान को कभी नहीं भूलना चाहिए और उनके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहना चाहिए। वे सच्चे मायनों में हमारे देश के नायक हैं।

"परिवार से दूर रहकर, वो निभाते हैं सबसे बड़ा फर्ज़,
उनकी शहादत नहीं, उनका बलिदान है हमारा गर्व।''

जय हिन्द, जय भारत

सुश्री सुमन कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक

अंतरात्मा का दीपक

जब संसार की राहें उलझ जाएँ,
और मन का आँगन सूना हो जाए,
तब भीतर झाँक, ओ पथिक,
वहीं एक दीपक सुलगता है।

उस दीपक की लौ में न मोह है, न माया,
केवल शुद्ध प्रकाश है, केवल सत्य की छाया।
वो हर आँसू को मोती बना दे,
हर घाव को प्रेम से सहला दे।

किसी मंदिर में ढूँढे ना तू,
ना मस्जिद, ना गिरजे में पाए,
वो ईश्वर तो बैठा तेरे दिल में,
बस एक पल, नज़र मिलाए।

साँसों में वही तो गूँजता,
धड़कन में वही तो बजता,
हर नाम में वही समाया,
हर रूप में वही रमाया।

राह भटक भी जाए अगर,
उसके प्रकाश को याद कर,
आत्मा की आवाज़ सुन,
संसार में फिर मुस्कान भर।

मन का दीप जले जब भीतर,
हर तिमिर को हर ले वो,
अंतरात्मा का ये उजाला,
तेरा सच्चा सहारा हो।

श्री मनोरंजन कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

दक्षिणेश्वर काली मंदिर: एक आध्यात्मिक ओऐसिस (oasis)

पश्चिम बंगाल के हुगली नदी के तट पर स्थित दक्षिणेश्वर काली मंदिर, सिर्फ एक पूजा स्थल नहीं है, बल्कि लाखों भक्तों के लिए एक आध्यात्मिक आश्रय है। यह मंदिर, देवी काली को समर्पित, अपनी भव्यता, ऐतिहासिक महत्व और स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे महान संतों से जुड़ाव के लिए प्रसिद्ध है।

इस मंदिर का निर्माण 1855 में रानी रासमणि ने करवाया था, जो एक परोपकारी और देवी काली की प्रबल भक्त थीं। कहा जाता है कि रानी को एक सपना आया था जिसमें देवी काली ने उन्हें एक भव्य मंदिर बनवाने का निर्देश दिया था। इस सपने के बाद, रानी ने इस विशाल परिसर का निर्माण करवाया, जिसमें मुख्य काली मंदिर के अलावा शिव के बारह मंदिर और राधा-कृष्ण का एक मंदिर भी शामिल है।

दक्षिणेश्वर मंदिर की वास्तुकला अत्यंत आकर्षक है। यह नौ-गुंबद शैली में बना है, जो पारंपरिक बंगाली वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मुख्य मंदिर में स्थापित काली की मूर्ति, जिसे भवतारिणी के नाम से भी जाना जाता है, काले पत्थर से बनी है और सोने तथा चांदी के आभूषणों से सुसज्जित है। यह मूर्ति अत्यंत जीवंत प्रतीत होती है और भक्तों में गहरी श्रद्धा जगाती है।

इस मंदिर का महत्व सिर्फ इसकी वास्तुकला या मूर्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्वामी रामकृष्ण परमहंस के साथ अपने घनिष्ठ संबंध के कारण भी अत्यंत पूजनीय है। रामकृष्ण परमहंस, एक महान आध्यात्मिक गुरु और विचारक, ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा यहीं बिताया था। उन्होंने यहीं पर गहन साधना की और देवी काली के प्रत्यक्ष दर्शन किए। उनके जीवन के कई महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अनुभव और उपदेश इसी मंदिर परिसर से जुड़े हुए हैं, जिससे यह स्थान आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए एक तीर्थ बन गया है।

प्रत्येक दिन, विशेष रूप से मंगलवार और शनिवार को, मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। दुर्गा पूजा और काली पूजा जैसे त्योहारों के दौरान तो यहाँ का माहौल और भी भक्तिमय हो जाता है। लोग देवी का आशीर्वाद लेने, अपनी मनोकामनाएं पूरी करने और शांति प्राप्त करने के लिए यहाँ आते हैं। मंदिर परिसर में गंगा नदी के किनारे घाट भी हैं जहाँ भक्त पवित्र स्नान करते हैं।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर सिर्फ एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह बंगाली संस्कृति, आध्यात्मिकता और वास्तुकला का एक जीवंत प्रतीक है। यह हमें भक्ति, त्याग और आंतरिक शांति की प्रेरणा देता है। जो भी इस पवित्र भूमि पर कदम रखता है, वह निश्चित रूप से एक अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करता है, जो उसके मन और आत्मा को शांत कर देता है।

"ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं हूँ हूँ हीं हीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ हीं हीं स्वाहा।"

कालिकाये नमः

सुश्री सुमन कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक

कोमल-सा मन

बहुत अनमोल है ये जीवन और तुम्हारा कोमल-सा मन,
जब लगे की, जीवन मुश्किल है अभी,
तो सोचना कोई तरस रहा होगा, इस जीवन के लिए कहीं,

जब लगे थक गए हो, जीवन की उलझनो से,
जिम्मेदारियों से, चार लोगों की बातों से,
तो रुकना, ठहरना, शांत हो जाना,
और सोचना की क्या चाहता है तुम्हारा मन ?
वो जो कोमल-सा था, चोट लग के चोटिल न हो जाए कहीं,
फिर भी तुम इसे मजबूत बनाना, कठोर नहीं।

लोगों से बातें करने से पहले खुद से बातें करना,
और पूछना अपने कोमल-मन से कि क्या अधूरा रह गया अन्दर,
जो किसी को दिखा नहीं, तुम उसे पूरा करना।

जीवन जीने के बना दिए गए कई नियम, कई दायरे,
लेकिन नहीं बना कोई नियम बदलते परिस्थितियों में ढलने का,
संभलना होगा खुद हीं, चलना होगा खुद हीं अकेले,
जीवन तुम्हारा है, तो फैसला भी तुम्हारा होगा।

जीवन में जैसे हो, वैसे बने रहना,
आए कभी रोना, तो रो लेना, तभी तुम खुल के हँस सकोगे,
जीवन के हर पड़ाव पर, मन के बोझ को उतार देना,
तभी तुम आगे बढ़ सकोगे।

दूसरो को जो इज्जत देते हो, खुद को भी वही देना,
परिपूर्ण नहीं हो तुम लेकिन खुद में ही तुम पूर्ण हो,

समय लगेगा, दिन बदलेगा, तुम धैर्य से आगे बढ़ना,
सबको जो खुश रखते हो, पहले खुद को खुश रखना,
क्योंकि वही तो सच है, वो तुम्हारा कोमल-सा मन
और अनमोल जीवन!

सुश्री रश्मि कुमारी
लेखापरीक्षक

प्रजातंत्र एवं भारत में निहित विविधता में एकता

कोई भी व्यक्ति जन्म से एक अच्छा नागरिक नहीं होता है; कोई भी राष्ट्र जन्म से प्रजातंत्र नहीं होता है। बल्कि, दोनों ऐसी प्रक्रियाएं हैं जो जीवनभर विकसित होती रहती हैं। – कोफी अन्नान

प्रजातंत्र की परिभाषा:

अब्राहम लिंकन के शब्दों में– "प्रजातंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन है।"

प्रजातंत्र की विशेषताएँ:

यह सरकार का एक राजनीतिक रूप है जिसमें शासन सत्ता, लोगों से सर्वसम्मति, प्रत्यक्ष जनमत संग्रह द्वारा, या जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा प्राप्त की जाती है।

इसमें चर्चा एवं विचार–विमर्श को प्रथम स्थान दिया जाता है। यह स्वतंत्रता का संस्थागतकरण है।

यह एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें जनता की प्रमुख हिस्सेदारी होती है।

अर्थातः–

प्रजातंत्र का महत्व:

भारत के सतत् विकास, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और साझा जिम्मेदारियों की प्राप्ति के लिए यह एक महत्वपूर्ण तंत्र है।

विविधता में एकता:

भारत एक ऐसा देश है जो एकजुट रहते हुए भी अपनी विविधता का जश्न मनाता है। पर्वत शृंखलाएँ, मानसून, सिंचित कृषि भूमि, नदियाँ, नाले, जंगल और रेगिस्तान सभी ने विभिन्न जातियों, नस्लों, पंथों, धर्मों और भाषाओं के लोगों के बीच भारत की असाधारण विविधता में अपना योगदान दिया है। प्रत्येक राज्य और क्षेत्र का अपना अलग रंग, संस्कृति और जलवायु है। इतनी विविधताओं के बावजूद सभी भारतीय कहलाने में जो गौरव महसूस करते हैं, इसे ही विविधता में एकता कहा जाता है।

विविधता में एकता का अर्थ:

विविधता में एकता स्थायी अंतर के बावजूद सामंजस्य या अखंडता को परिभाषित करती है। जाति, संस्कृति, धर्म, परंपराओं, शारीरिक विशेषताओं, त्वचा के रंग आदि में व्यक्तिगत अंतर को विविधता में एकता की अवधारणा में विवाद का स्रोत नहीं माना जाता है। अपितु ये विविधताएँ समाज एवं देश को लाभ ही पहुँचाती हैं।

विविधता के क्षेत्र:

भौगोलिक विविधता – उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक जो भारत वर्ष का विस्तार है एवं इस विस्तृत देश में गोवा के समुद्र तट, केरल के बैकवाटर, हिमालय में बर्फ से ढके पहाड़, कश्मीर की झीलें, दिल्ली में ऐतिहासिक स्थल सभी भारतवर्ष की भौगोलिक विविधता का प्रतीक हैं और इस विविधता को भारत की सीमा रेखा एकता के सूत्र में बाँधकर रखती है।

धर्म और जाति में विविधता – भारत में विभिन्न धर्म और जातियाँ हैं, जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, आदि शामिल हैं। इस धार्मिक विविधता के लिए भारत विश्व प्रसिद्ध है। किन्तु हम भारतीय इंसानियत के धर्म को सर्वोपरि मानते हुए सभी धर्मों को एकता के सूत्र में बांधकर एक विशालता कायम किए हुए हैं।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम,वतन है, हिन्दोस्तां हमारा

सांस्कृतिक एवं सामाजिक विविधता : भारत में असंख्य परंपराएँ, रीति–रिवाज और ज्ञान विज्ञान की प्रणालियाँ हैं, जिन्हें सदियों से अक्षुण्ण रखा गया है। प्रारंभ से ही स्थानीय को क्षेत्रीय के साथ और क्षेत्रीय को राष्ट्रीय के साथ परिवार, विवाह और बंधुता जैसे संस्थागत– साधनों के माध्यम से जोड़ने पर बल दिया जाता रहा है। सामाजिक विज्ञान के अध्ययनों से यह पता चलता है कि भारतीय

परिवारों के ढांचे में भी कई तरह की विविधताएँ हैं जो वैवाहिक संबंधों, माता-पिता-संतान संबंधों और सहोदर भाई-बहनों के संबंधों पर निर्भर होती हैं। संरचनात्मक विविधताओं के बावजूद भी कुछ नियमों जैसे कि एक संयुक्त परिवार में रहना, बुजुर्गों की देख भाल करना, बच्चों के प्रति स्नेह रखना, पारिवारिक आय को सभी की भलाई में खर्च करना और पर्वोत्सव को मिलकर मनाना, अपने परिवार के नाम को अपनाना और आगे तक ले जाना, इन विविधताओं को एक रूप देते हैं।

भाषा में विविधताएँ:

विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम से भारत में लगभग 1600 भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषाओं की जननी संस्कृत इन विविध भाषाओं को एकसूत्र में पिरोए हुए है।

नस्लीय विविधता - भारत में कई नस्लें हैं, जैसे कि आर्य, द्रविड़, पूर्वोत्तर, आदिवासी नस्ल और अन्य।

अन्य क्षेत्रों में - भारत में उत्सव, त्योहार, खान-पान, शिक्षा और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विविधता भले ही दिखाई दे, लेकिन भावनात्मक दृष्टि से एक ही भाव दृष्टिगोचर होती है, प्रसन्नता एवं उल्लास की भावना एक जैसी रहती है। उदाहरण के तौर पर, लोहड़ी, मकर संक्राति, बिहू, वैशाखी देश के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नामों से मनाए जाते हैं, परंतु मुख्य उद्देश्य प्रथम फसल की पूजा करना ही होता है।

कला के क्षेत्र में - संगीत के क्षेत्र में हिन्दुस्तानी और कर्नाटक शैली, नृत्य के क्षेत्र में भारत नाट्यम, कुचिपुडी, कथक, कथकली, ओडिशी, मणिपुरी जैसे नृत्य रूपों की प्रस्तुति, वास्तुकला के क्षेत्र में नागर, बेसर, द्रविड़ और कलिंग शैलियों के वास्तु निर्माण में विविधता के बीच संकल्पनात्मक एकता देखने को मिलेगी।

विविधता में एकता का महत्त्व :

विविधता में एकता किसी भी देश के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय एकीकरण के लिए - विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारों वाले लोगो को विभाजित करना आसान है इसलिए विविधता में एकता अत्यावश्यक है। यदि लोग अपने मतभेदों के बावजूद भी एकजुट होकर रहते है तो किसी भी राष्ट्र को नष्ट करना जटिल होगा। प्रजातंत्र इसमे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शांति के लिए - विविधता अर्थात विचारों में भिन्नता आंतरिक संघर्ष उत्पन कर सकते है। लेकिन विभिन्न संस्कृतियों और मूल्यों वाले व्यक्तियों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व बनाए रखने के लिए एकता महत्वपूर्ण है।

विश्व में मान्यता - एकजूट देश भले ही विविधताओं से घिरा हो राष्ट्र के लिए मूल्यवान होता है और दुनिया भर में पसंद किया जाता है। यह उन व्यक्तियों के आदर्शो और नैतिकताओं को उजागर करके सभी देशों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है जो अपनी विभिन्न पृष्ठभूमियों और संसकृतियों के बावजूद एक दूसरे का सम्मान और समर्थन करते है।

किसी देश की विकास और वृद्धि - एकता के सूत्र में पिरोया राष्ट्र, निरंतर विकास के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा, देश की सफलता के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विविधता में एकता के लाभ :

विविधता में एकता होना कार्यस्थल, कंपनी और समुदाय में व्यक्तियों के मनोबल को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विविधता में एकता, जनसमुदाय में सहयोग - साझेदारी और पारस्परिक संपर्क को बढ़ाने, प्रदर्शन, कार्य की गुणवत्ता, उत्पादकता और जीवन शैली को बढ़ाने में सहायता करता है।

इससे संकट के समय, सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी संचार को बढ़ावा मिलता है।

ये मानव के बीच मानवीय संबंधों को जोड़ने का मूलमंत्र है एवं फलस्वरूप संघर्षों को नियंत्रित करना आसान हो जाता है।

ये सभी के समान अधिकारों की रक्षा करता है एवं इससे लोगों को सामाजिक बुराइयों से दूर रखने में मदद मिलती है।

पर्यटन में लाभ - विविधता में एकता के फलस्वरूप भारत को पर्यटन में बड़ा लाभ होता है। दुनिया भर से पर्यटक विविध जीवन-शैली, संस्कृतियों, विश्वासों और पहनावे वाले लोगों की ओर आकर्षित होते हैं।

पर्यटन के परिणामस्वरूप विश्व के लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता का प्रयास हो रहा है, भले ही वो एक-दूसरे से जाति, रंग-रूप, वेश-भूषा में भिन्न हों।

यह देश की सांस्कृतिक राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक विरासत को मजबूत और संवर्धित करता है।

विविधता में एकता से हानि:

क्षेत्रवाद : भारत विविधताओं का देश है और इतनी सारी विविधताओं ने क्षेत्रवाद को जन्म दिया है।

देश के कई हिस्सों में यह भ्रष्टाचार गंदी राजनीति और अशिक्षा को जन्म देता है।

यह राज्यों और विभिन्न भाषाओं वाले प्रदेशों के लोगों के मध्य सामाजिक तनाव पैदा करने का कारण भी है।

इसके वजह से कृषि प्रधान क्षेत्रों, चारागाह क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण, बिजली की कमी, पानी की समस्या, अविकसीत नींव जैसे अन्य कारकों के कारण खराब जीवनशैली की वजह बन सकता है।

आर्थिक पिछड़ापन:- सामाजिक-आर्थिक विकास के असमान प्रतिरूप के कारण क्षेत्रीय विषमताएँ पैदा होती हैं, उदाहरणस्वरूप आंध्र प्रदेश से तेलंगाना का विभाजन और विदर्भ सौराष्ट्र के लिए अलग राज्य की मांग।

भूमि पुत्र का सिद्धांत:- इस सिद्धांत के अनुसार एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र के समस्त संसाधनों पर केवल उन्हीं लोगों का अधिकार होना चाहिए जिनका जन्म उस क्षेत्र में हुआ हो, जैसे कि मराठों के लिए महाराष्ट्र और गुजरातियों के लिए गुजरात।

राजनीतिक दलों का उदय:- गठबंधन की राजनीति और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उदय ने क्षेत्रवाद को वोट हासिल करने हेतु एक राजनीतिक उपकरण के रूप में प्रेरित किया है।

प्रजातंत्र एवं विविधता में एकता:

अधिकारों की असमानता तथा अवसरों की विविधता आंदोलन को जन्म देती है। इसी प्रकार राजतंत्र तथा कुलीनतंत्र के ध्वंसावशेषों पर प्रजातंत्र राजनैतिक समानता के सिद्धांत के साथ उदित हुआ। यह निस्संदेह अपने आप में एक उच्च सामाजिक आदर्श है। ब्रिटिश लेखक जार्ज बर्नार्ड शॉ के अनुसार-

"प्रजातंत्र एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका लक्ष्य सामान्य जनता के सर्वाधिक कल्याण में निहित है, न कि एक वर्ग विशेष के कल्याण में।"

निष्कर्ष -

सही मायने में देखा जाए तो प्रजातंत्र एवं भारत की राष्ट्रीय एकता एक दूसरे के पूरक हैं। यदि देश में एकता नहीं होगी तो प्रजातंत्र कायम नहीं रह पाएगी। एवं यही विविधता यदि शिक्षित और समझदार जनता के बीच एकता लाए तो इसे सर्वोत्तम शासन व्यवस्था कहा जा सकता है क्योंकि इस प्रणाली में जनता को अपनी बात कहने का पूर्ण अधिकार होता है। यदि हम राष्ट्र का विकास चाहते हैं तो लाखों विविधताओं के बावजूद एकजुट होकर प्रजातंत्र स्थापित कर उचित नायक चुनना होगा जिससे की देश का सर्वोत्तम सतत् उत्थान हो सके।

सुश्री रश्मि सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

योग भगाए रोग
जागो विश्व के लोग
21 जून के योग दिवस पर
सबको करता हूं आवाहन
सकल विश्व का स्वस्थ नागरिक
घर में करो योग का संचालन।

सब मिलके करेंगे योग शुरू
भारत बनेगा एकदिन विश्वगुरु
ऋषि मुनियों का मिला वरदान
सकल विश्व का होगा कल्याण।

तप बल से सब बढ़ाओ
अपने अंदर शक्ति पुंज
रोग दोष, भय भगाओ
करके ओम् ध्वनि का गूंज।

रखो पवित्र ये काया सुंदर
प्रभु बैठा है दिल के अंदर
सब करो योग, भगाओ रोग
स्वस्थ हो जाएंगे सब लोग।

श्री संजय बनर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ऑपरेशन सिंदूर:
भारतीय सेना की वीरता और राष्ट्रप्रेम का प्रतीक

प्रस्तावना

7 मई 2025 को भारतीय सशस्त्र बलों ने "ऑपरेशन सिंदूर" के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) में आतंकवादी ठिकानों पर सुनियोजित हमले किए। यह कार्रवाई जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले का प्रतिशोध थी, जिसमें 26 पर्यटकों की जान गई थी। ऑपरेशन का नाम "सिंदूर" रखा गया, जो भारतीय संस्कृति में विवाहित महिलाओं के सौभाग्य का प्रतीक है, और यह भारतीय सेना की वीरता और राष्ट्रप्रेम को दर्शाता है।

ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य और रणनीति

ऑपरेशन सिंदूर का मुख्य उद्देश्य पाकिस्तान और PoK में स्थित आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करना था। इसमें भारतीय सेना ने अत्याधुनिक तकनीक और खुफिया जानकारी का उपयोग किया। ऑपरेशन सिंदूर की योजना में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, और भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। ऑपरेशन सिंदूर भारत सरकार द्वारा एक सामरिक और मानवीय मिशन के रूप में चलाया गया विशेष अभियान है। हालांकि "ऑपरेशन सिंदूर" नाम विशेष रूप से किसी एक आधिकारिक अभियान के लिए व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त नहीं है (जैसे ऑपरेशन विजय, ऑपरेशन मेघदूत आदि हैं), फिर भी यह नाम अक्सर मीडिया या स्थानीय स्तर पर किसी विशिष्ट सैन्य, बचाव या आतंकवाद-रोधी अभियान से कम नहीं।

ऑपरेशन सिंदूर को किसी किताब के पन्ने में नहीं उतारा जा सकता, फिर भी निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता है।

1. ऑपरेशन सिंदूर का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व

"सिंदूर" भारतीय संस्कृति में विवाहित महिलाओं के सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक है। यह सिंदूर (लाल रंग का चूर्ण) नारी के सम्मान और विवाहित जीवन का प्रतीक है जिसे हिंदू विवाहित महिलाओं द्वारा परंपरागत रूप से अपने मांग (सिर के बीच की रेखा) में भरा जाता है। यह "सिंदूर" **पति के दीर्घायु जीवन, संपूर्णता,** और **पारिवारिक अखंडता** का प्रतीक है। "ऑपरेशन सिंदूर" का

नाम इसी प्रतीक से जुड़ा हुआ है, जो भारतीय सेना की वीरता और राष्ट्रप्रेम को दर्शाता है। यह नाम आतंकवाद के खिलाफ भारत की दृढ़ता और संकल्प को भी प्रदर्शित करता है। इसलिए, **"ऑपरेशन सिंदूर**" नाम उस भाव को दर्शाता है जहां **रक्षा, सुरक्षा और संरक्षण** का लक्ष्य स्त्री और परिवार के मूल्यों की रक्षा से जुड़ा हो।

2. त्याग और बलिदान का प्रतीक

इस अभियान में ऐसे कई प्रसंग और कथाएं सामने आती हैं जो आंखों को नम कर देती हैं और हृदय को गर्व से भर देती हैं। जिन वीर पत्नियों ने अपने पति को खो दिया, उन्होंने न केवल अपने दर्द को सहा बल्कि वें समाज के लिए प्रेरणा भी बनी । कुछ ने तो अपने पति के नक्शे-कदम पर चलकर सेना में भर्ती होने का निर्णय लिया, तो कुछ ने अपने बच्चों को वीर सपूत बनाने का संकल्प लिया।

3. संस्कृति और मातृभूमि के प्रति श्रद्धा

ऑपरेशन सिंदूर एक सांस्कृतिक और भावनात्मक पहल है, जिसमें **संस्कृति और मातृभूमि के प्रति श्रद्धा** है। भारतीय स्त्री केवल परिवार की रक्षक नहीं, बल्कि राष्ट्र की सच्ची सेविका भी है। वह अपने सिंदूर का त्याग कर भी गर्व से कहती है – **"मेरा सुहाग देश पर कुर्बान हुआ है।**"

4. बलिदान की अमर गाथा:

जिन महिलाओं ने अपना सिंदूर खोया, उन्होंने अपनी पीड़ा को भी शक्ति में बदला है। वे न केवल अपने परिवार की रीढ़ बनीं, बल्कि अन्य अनेक महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत भी बनीं। कई विधवाओं ने अपने पति की वर्दी की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए अपने बच्चों को फौज में भेजा या स्वयं समाज सेवा का व्रत लिया।

5. नारी शक्ति का सशक्त उदाहरण:

'ऑपरेशन सिंदूर' यह संदेश देता है कि देश की रक्षा केवल पुरुषों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि इस क्षेत्र में महिलाएं भी उतनी ही सक्षम हैं। यह अभियान नारी शक्ति, साहस, और देशभक्ति का प्रतीक है। शहीदों की पत्नियां सिर्फ दुख की मूर्ति नहीं हैं, वे साहस और शक्ति की जीवंत प्रतिमाएं हैं। वे अपने दर्द को प्रेरणा में परिवर्तित कर समाज को नई दिशा देने का कार्य कर रही हैं।

6. ऑपरेशन सिंदूर की सफलता और राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने भारतीय सेना की रणनीतिक क्षमता और साहस को उजागर किया। इसकी सफलता पर देशभर में उत्सव मनाए गए और भारतीय सेना को सलामी दी गई। गोरखपुर में लोगों ने ढोल-नगाड़ों की गूंज और "भारत माता की जय" के नारों के साथ इस सफलता का जश्न मनाया। यह उत्सव न केवल भारतीय सेना की बहादुरी की सराहना का प्रतीक था, बल्कि शांति और सुरक्षा की ओर एक कदम बढ़ाने का संदेश भी था।

7. समाज और सरकार की भूमिका:

"ऑपरेशन सिंदूर" की सफलता केवल सेना की नहीं, बल्कि **समाज और सरकार** के सहयोग की भी जीत है। सरकार ने अवसर और संसाधन दिए तथा समाज ने विश्वास और समर्थन। यदि यह समन्वय यूं ही चलता रहा, तो वह दिन दूर नहीं जब हर क्षेत्र में महिलाएं सबसे आगे होंगी और "सिंदूर" केवल एक शृंगार नहीं, बल्कि शक्ति का प्रतीक बन जाएगा।

8. विश्व मंच पर "ऑपरेशन सिंदूर" की पहचान:

भारत की सैन्य परंपरा और सामाजिक मूल्यों की यह अनोखी पहल जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहुँची, तो कई देशों और संगठनों ने इसकी सराहना की। जिससे संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुए निम्नलिखित हैं:

(i) संयुक्त राष्ट्र में मानवीय पहल की सराहना:

संयुक्त राष्ट्र ने "ऑपरेशन सिंदूर" जैसे अभियानों को *"grassroots human resilience"* (नींव से जुड़ी मानवीय मजबूती) का उदाहरण बताया। इसने युद्ध के बाद के सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य किया।

(ii) विदेशों में बसे भारतीय समुदाय का सहयोग:

अमेरिका, कनाडा, यूके, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों में बसे भारतीय समुदायों ने शहीद परिवारों के लिए धन एकत्र करने, सम्मान समारोह आयोजित करने और "ऑपरेशन सिंदूर" के संदेश को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(iii) अंतरराष्ट्रीय मीडिया कवरेज:

कई विदेशी मीडिया हाउसेज़ — जैसे BBC, Al Jazeera, The New York Times आदि — ने इस अभियान पर विशेष रिपोर्टें प्रकाशित कीं, जिसमें

भारतीय महिलाओं की हिम्मत और बलिदान को वैश्विक प्रशंसा मिली।

(IV) अन्य देशों की सेनाओं ने अपनाया मॉडल:

ऑपरेशन सिंदूर के प्रभाव से प्रेरित होकर कुछ देशों की सेनाओं (जैसे इजराइल, फ्रांस और दक्षिण कोरिया) ने भी अपने शहीद सैनिकों के परिवारों के लिए भावनात्मक सहायता कार्यक्रमों की शुरुआत की।

सैन्य अभियान के दृष्टिकोण से ऑपरेशन सिंदूर:

कश्मीर के पहलगाम में जो आतंकवादी हमला हुआ वह केवल आम पर्यटकों पर हमला नहीं था, अपितु धर्म के नाम पर हिंदु नागरिकों को निशाना बनाया गया और नरसंहार किया गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इस नरसिंहार का शिकार अधिकतर पुरुष थे। कुछ परिवार वालों को जिसमें विशेषत: महिलाएँ शामिल थीं, उन्हें इसलिए छोड़ा गया ताकि वें इस आतंकवादी हमले की बर्बरता की घटना को सुना सकें । जाति और धर्म के नाम पर गंदा खेल खेला गया । अब प्रश्न यह उठता है की इन आम नागरिकों के परिवार वालों की रक्षा कौन करेगा? "ऑपरेशन सिंदूर" भारतीय नारी की गरिमा की रक्षा के साथ साथ एक सैन्य अभियान भी था, जिसकी जरूरत तब पड़ जाती है जब देश की सीमाओं पर खतरा उत्पन्न होता है या आतंकी गतिविधियां बढ़ जाती हैं, तब ऐसे ऑपरेशन आवश्यक हो जाते हैं ताकि सैनिक सीमा पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रख सके, आतंकवादियों या दुश्मनों को अपने देश की सीमांत क्षेत्रों से बाहर निकाला जा सके, और देश की संप्रभुता की रक्षा की जा सके।

"ऑपरेशन सिंदूर" के दौरान, प्रधानमंत्री ने भारतीय सैनिकों के साहस, समर्पण और देशभक्ति की अत्यंत प्रशंसा की। उन्होंने सैनिकों को यह संदेश दिया कि वे देश की सबसे बड़ी ताकत हैं और उनके दृढ़ संकल्प और बलिदान से ही देश की सुरक्षा सुनिश्चित होती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सैनिकों को हर परिस्थिति में साहस बनाए रखना चाहिए और देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए अपने कर्तव्य का निर्वहन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करना चाहिए। उनका यह भी मानना था कि सैनिकों का मनोबल सबसे ऊंचा रखना जरूरी है ताकि वे हर चुनौती का सामना गर्व और आत्मविश्वास से कर सकें।

निष्कर्ष

"ऑपरेशन सिंदूर" भारतीय सेना की वीरता, रणनीतिक क्षमता और राष्ट्रप्रेम का एक सशक्त प्रतीक बन चुका है। यह अभियान केवल आतंकवाद के विरुद्ध एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी, बल्कि यह भारत की **अडिग संकल्पशक्ति** और **सांस्कृतिक मूल्यों** का जीवंत प्रमाण भी है। इस ऑपरेशन के माध्यम से भारत ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि हम न केवल अपनी **सीमा की रक्षा** करना जानते हैं, बल्कि अपने **मूल्यों, संस्कृति और आत्मसम्मान** की रक्षा के लिए भी हर चुनौती का सामना कर सकते हैं। इस अभियान को "सिंदूर" नाम देना भी अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतीकात्मक है। **सिंदूर,** भारतीय नारी का प्रतीक है — त्याग, प्रेम और शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

"ऑपरेशन सिंदूर" नाम ने इस अभियान को केवल एक सैन्य घटना नहीं रहने दिया, बल्कि इसे एक **सांस्कृतिक आंदोलन** बना दिया, जो भारत की **एकता, अखंडता और नारी शक्ति** का प्रतिनिधित्व करता है। "ऑपरेशन सिंदूर" के माध्यम से भारतीय सेना ने न केवल **भारत के भीतर देशभक्ति और नारी शक्ति** को मजबूती दी, बल्कि **सीमा पार पाकिस्तान** को भी यह सोचने पर विवश कर दिया कि भारत एक ऐसा देश है जो युद्ध लड़ता है **रणनीति से,** जीतता है **साहस से,** और रक्षा करता है **सम्मान और पूर्ण निष्ठा** से। इस प्रकार, यह अभियान भारत के लिए एक **नई सैन्य और सांस्कृतिक चेतना** का प्रतीक बन गया है — एक ऐसा प्रतीक जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

श्री सुजय प्रसाद
लेखापरीक्षक

काव्य दर्शन (भाग-I)

घूमते विचारों से उपजती,
कल की कल्पनाओं का चलचित्र।
आत्म ज्योति से दृश्यमान,
जीवंत लगता ये आभासी चरित्र।
तीव्र हो इच्छाएं अगर,
अचेतन में यह बनता अरित्र।
स्वप्न बन निद्रा में है आता,
कल की कल्पनाओं का चलचित्र।
मन में उपजी संदेह से विचलित,
दिखता फिर ये ख्वाब विचित्र।
अग्निपथ का जो पथिक,
परिकल्पित चिंता से त्रस्त हो जाता
कल्पनाओं का यह चलचित्र।

श्री कमल कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत- एक गाथा

भारत केवल एक देश नहीं, बल्कि एक गाथा है — एक ऐसी गाथा जो वर्षों से चलती आ रही है। इसकी कहानी सहस्रों वर्ष पुरानी है, जिसमें अनेक उतार-चढ़ाव, संघर्ष और विजयों की अमिट छापें हैं। भारत की गाथा उसकी विविधता, संस्कृति, परंपराओं और असाधारण सहनशीलता में बसती है। यह एक ऐसी परंपरा है, जो सदियों के ज्ञान-विज्ञान और धरोहरों को खुद में समेटे हुए है तथा जो चिरकाल से आधुनिक समय तक हमें भारतीय संस्कृति के मूल्यों एवं परंपराओं से समयानुसार अवगत कराती रहती है।

भारत का इतिहास प्राचीन सभ्यताओं से भरा पड़ा है। सिंधु घाटी की सभ्यता, जो विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है, इसी भारत की मिट्टी से जन्मी थी। विभिन्न सभ्यताओं का सामंजस्य समेटे हुए यह एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस देश ने अनेक धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक विचारों को जन्म दिया है। यहाँ वेदव्यास, आदि शंकराचार्य, रामानुज, संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम तथा तुलसीदास जैसे महान विद्वानों ने धर्म एवं दर्शन के अमूल्य उपहार हमें प्रदान किए। इनके द्वारा प्रदान किए गए वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण जैसे महान ग्रंथों ने मानवता को गहरा ज्ञान दिया। वहीं आर्यभट्ट, वराहमिहिर, जीवक, चरक जैसे महान विद्वानों ने हमें ज्ञान एवं विज्ञान से साक्षात्कार कराया।

भारत की गाथा में अनेक महापुरुषों के नाम अमर हैं। भरत, चाणक्य, चंद्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्य, कनिष्क, हर्षवर्धन, कृष्णदेवराय, अकबर एवं शिवाजी जैसे महान शासकों ने शासन के उत्कृष्ट स्वरूप से हमें अवगत कराया। वहीं महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं जवाहरलाल नेहरू जैसी विभूतियों ने इस देश को नई दिशा दी। चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफाक उल्ला खाँ जैसे महान क्रांतिकारियों सहित लाखों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दी, जिससे आज हम स्वतंत्र भारत में साँस ले रहे हैं। इनकी गौरवगाथाएँ सदियों तक हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी।

भारत की विविधता उसकी सबसे बड़ी ताकत है। यहाँ कई भाषाएँ, धर्म, जातियाँ और संस्कृतियाँ मिलती हैं। फिर भी, यहाँ का हर व्यक्ति एक-दूसरे का सम्मान करता है और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को अपनाता है। यही गाथा भारत को विश्व में एक विशेष स्थान दिलाती है।

आज का भारत विज्ञान, तकनीक, कला और खेल के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह गाथा अब नई ऊँचाइयों को छू रही है। हम नित नए प्रयोग कर रहे हैं एवं निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। हमारे देश के युवा इस गाथा के नए लेखक हैं, जो देश को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा रहे हैं।

इस प्रकार, भारत केवल एक भौगोलिक नाम नहीं, बल्कि एक गाथा है — जो अनंत काल तक गूंजती रहेगी, प्रेरणा देती रहेगी और दुनिया को अपनी विविधता, सहिष्णुता और समृद्धि का संदेश देती रहेगी।

श्री आशुतोष कुमार पाण्डेय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

काव्य-दर्शन (भाग-II)

शून्य में भी तलाश थी
भौतिकता में भी तलाश है
स्वच्छंदता पाने का ही प्रयास है
खुद से अपूर्ण है
उस विवेकशील सम्पूर्णता
की तलाश है
युगों से भटकते
फिर भी उस अंतिम सुधार की तलाश है
अंतर्द्धन्द्धों के उस आखिरी विजेता
उस भौतिकता की तलाश है

श्री कमल कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृति के साथ सामंजस्य- सुविधा या दुविधा

विज्ञान और तकनीक मानव की प्रतिभा, सतत लगन और जिज्ञासा का परिणाम है, जिसने जीवन को सुगम, तेज़ और प्रभावशाली बनाया है। लेकिन जब यही तकनीक प्रकृति पर नियंत्रण के माध्यम के रूप में उपयोग होने लगे, तब यह मानव और पर्यावरण — दोनों के लिए विनाश का कारण बन सकती है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में जीवन प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व में था — नदियाँ देवी थीं, वृक्ष देवता और जड़ वस्तुएं पूजनीय । लेकिन आधुनिक युग में, तकनीकी उन्नति के नाम पर प्रकृति को उपेक्षित किया गया है। परिणामस्वरूप जलवायु संकट, स्वास्थ्य समस्याएँ, सामाजिक विषमता और वैश्विक आपदाएँ सामने आई हैं।

क्या आपने कभी पहली बारिश की मिट्टी की भीनी खुशबू महसूस की थी? क्या याद है वो मेंढक की टर्र- टर्र और मोर का नृत्य जो बिना किसी मौसम वैज्ञानिक के ही बरसात का संकेत दे देती थी ?

हमारी संस्कृति ने सिखाया था —**"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।"** -अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोग रहें। इसमे केवल इंसान का नहीं, बल्कि पेड़, पशु, पक्षी, जल, वायु, और मिट्टी का भी कल्याण शामिल था।आयुर्वेद, पंचांग, ज्योतिष इंसान को प्रकृति के साथ तालमेल में जीना सिखाते थे, पर जैसे ही विज्ञान ने रफ्तार पकड़ी, इंसान ने प्रकृति को अपने अधीन समझना शुरू कर दिया। यही घमंड आज हमारे सामने संकट बनकर खड़ा है।

कभी आँगन में तुलसी की पत्तियों की महक हवा को पवित्र करती थी, पीपल के छाँव गाँव भर को राहत देते थे, केले के पत्तों पर परोसा गया प्रसाद मिट्टी की सोंधी खुशबू से जुड़ाव का एहसास कराता था।कुम्भ में गंगा का स्नान केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं था, बल्कि जल और जीवन के प्रति सम्मान था। छठ में डूबते और उगते सूरज को दिया गया अर्घ्य प्रकृति को दिया जाने वाला सम्मान था। हवाओं में प्रचुर मात्रा में जीवनदायिनी ऑक्सीजन सहज ही मिलती थी, वृक्षों से छनकर वह हमारे प्राणों में घुलती थी - बिना किसी मूल्य के, बिना किसी भय के। किसान पंचांग और अनुभव से ऋतुओं को समझता था।

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"
– पृथ्वी मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।
"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्"
– जहाँ सारा संसार एक ही घोंसले जैसा हो।

हमारे शास्त्रों में पूजे जाने वाले शालिग्राम सिर्फ पत्थर नहीं, बल्कि चेतन और प्रकृति के प्रति हमारी कृतज्ञता के प्रतीक थे । ऋतु, नक्षत्र और ग्रहों के अनुसार खेती, विवाह, पर्व — सब तय होते थे।मौसमी फल और सब्जियाँ थाली में सजती थीं, गाय का ताज़ा दूध सीधे घर आता था, पानी बावड़ियों में सहज ही उपलब्ध रहता था। सभी में एक तालमेल था। विज्ञान और तकनीक हमारे साथी थे, प्रकृति के मालिक नहीं। सूरज की किरणें, मिट्टी की महक,हवा का बहाव, जल की मिठास —ये सब जीवन के साथी थे, कोई व्यापारिक उत्पाद नहीं। आज वही तुलसी बालकनी के गमले में कैद है, पीपल बोनसाई बनकर ड्राइंगरूम की शोभा बन गया। केले के पत्तों की जगह प्लास्टिक की थाली आ गई। गंगा अब आरओ फिल्टर से छनकर आती है और सूरज की गर्माहट विटामिन डी की गोलियों में बिकती है। ताज़ा आहारों की जगह डिब्बाबंद फ़ास्ट-फूड और जंक फूड ने ले ली है। माँ का अमृत दूध अब ठोस पाउडर बनकर बिकता है, फलों का रस रसायनों में खो गया है। नदियाँ प्लास्टिक और कचरे से भरी नालियों में बदलती जा रही है, कुछ तो अपनी अंतिम साँसें गिन रही हैं।

हमने वृक्ष काटकर कंक्रीट की दीवारें खड़ी की। अब छाँव नहीं, सिर्फ गर्म दीवारें हैं। रात में भी शहर ठंडा नहीं होता क्योंकि हमने प्राकृतिक हवा खो दी और बदले में पाया एयर कंडीशन— जिसका बिल हमें बिजली में भी चुकाना पड़ रहा है,और पर्यावरण में भी। कभी खेतों को सींचने वाली नहरें अब सूखी हैं, किसान कर्ज में डूबा है। कभी बच्चों के खिलौने मिट्टी के होते थे, अब स्क्रीन पर चलते कार्टून हैं। माँ की कहानियाँ खत्म हो गई और उनका स्थान शॉर्ट वीडियो (संक्षिप्त चलचित्र) ने ले लिया है । पेड़ों की छाँव, नदी की ठंडक, और मिट्टी की महक बंद कमरों में खो गई है ।पहले हवाओं में प्रचुर मात्रा में जीवनदायिनी ऑक्सीजन सहज ही मिलती थी, लेकिन आज वही ऑक्सीजन सिलिंडरों में बिकती है। कभी ब्रह्ममुहूर्त और गोधूलिबेला में पक्षियों का कलरव मानो ईश्वर का मधुर संदेश होता था, अब वे पक्षी केवल चित्रों और यादों में

दिखते हैं। कभी मिट्टी की सोंधी खुशबू बरसात में आत्मा तक को प्रफुल्लित कर देती थी, आज वही मिट्टी रसायनों की दुर्गंध के बोझ तले अपनी वास्तविकता ही खो बैठी है | नदियों में कभी मछलियाँ निर्भय होकर नृत्य करती थी, अब विषाक्त जल में श्वास लेने को भी तरस रही है। चाँदनी रातें कभी चौपालों में गीत और हँसी का समां बांध देती थी, अब कृत्रिम प्रकाश उस आत्मिक एहसास को भी फीका कर देती है। क्योंकि प्राकृतिक चक्र ही उलट-पुलट गया है। "यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।"- जिसके पास अपनी बुद्धि नहीं, उसके लिए कोई शास्त्र भी क्या करेगा ?

हमने हर प्राकृतिक चक्र को तोड़ दिया — मौसम का चक्र, दिन-रात का क्रम,भोजन और नींद की मर्यादा | रातों की शांति अब रोशनी के शोर में खो गई है, सूरज की किरणें और हवा तक कंक्रीट की ऊँचाई में कैद हैं।

दिल्ली आज गैस चेंबर बन चुका है, मानो हर श्वास जानलेवा हो गयी हो। लोनार झील, जो कभी उल्कापिंड का चमत्कार थी, अब रसायनों में घुट रही है।अरावली की पहाड़ियाँ, जिन्होंने सदियों तक रेगिस्तान को थामा, अब अतिक्रमण और खनन के दबाव में टूट रही है जैसे धरती की हड्डियों में दरारें पड़ गई हों। पूर्वी और पश्चिमी घाट, जहाँ न जाने कितनी प्रजातियाँ पलती थी आज कॉफी और रबर के बागानों के विस्तार के कारण नष्ट हो रहा है। झरिया की खान में धरती अंदर ही अंदर सुलग रही है और पहाड़, जिनकी छाती पर हरियाली मुस्कुराती थी अब खदानों के घाव झेल रहे है। जब पुरुष प्रकृति को दोहन की वस्तु मान लेता है, तभी विनाश शुरू होता है।

कुछ वैज्ञानिक खोजें और प्रयोग ऐसे भी रहे है जिन्होंने संपूर्ण मानवता के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर दिया। ये प्रयोग भले ही विज्ञान की दृष्टि से मील के पत्थर रहे हो, लेकिन इनके परिणाम भयावह सिद्ध हो सकते थे:

1. मैनहट्टन प्रोजेक्ट और ओपेनहाइमर का परमाणु प्रयोग

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका में 'मैनहट्टन प्रोजेक्ट' के तहत परमाणु बम विकसित किया गया। इस परीक्षण के समय वैज्ञानिकों को यह भय था कि कहीं यह परीक्षण पृथ्वी के वायुमंडल को जला न दे। हालाँकि ऐसा नहीं हुआ, पर यह प्रयोग मानव इतिहास में परमाणु भय की शुरुआत थी।

2. Large Hadron Collider (LHC) का ब्लैक होल विवाद

CERN द्वारा किया गया यह प्रयोग ब्रह्मांड की उत्पत्ति को समझने हेतु किया गया था, लेकिन यह आशंका थी कि इससे सूक्ष्म ब्लैक होल उत्पन्न हो सकते हैं जो पृथ्वी को निगल सकते हैं। यद्यपि यह आशंका निराधार सिद्ध हुई, पर इससे विज्ञान के जोखिम का स्तर स्पष्ट होता है।

3. जैविक हथियारों का विकास

द्वितीय विश्व युद्ध से लेकर कोल्ड वॉर तक, विभिन्न देशों ने जैविक हथियारों जैसे एंथ्रैक्स, प्लेग और वायरस आधारित हथियारों का विकास किया। ये हथियार मानवता के लिए अत्यंत खतरनाक साबित हो सकते थे और आज भी इनका खतरा बना हुआ है। कोरोना इसका जीवंत उदहारण है |

4. परमाणु परीक्षण और पर्यावरणीय प्रभाव

20 वीं सदी के उत्तरार्ध में अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, और भारत सहित कई देशों ने भूमिगत और समुद्री परमाणु परीक्षण किए, जिनका दूरगामी प्रभाव समुद्री जीवन, भूगर्भीय संरचना और मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब विज्ञान का प्रयोग विवेकहीनता से होता है, तब विकास नहीं विनाश का मार्ग प्रशस्त होता है। इसलिए विज्ञान के साथ विवेक आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

वर्तमान युग की जटिलताएँ और तकनीक से उत्पन्न संकट :-

1. शहरी क्षेत्र में हीट वेव और कंक्रीट स्ट्रक्चर का प्रभाव

आजकल के शहरों में अत्यधिक कंक्रीट संरचनाएँ और कम हरियाली के कारण हीट वेव (गर्मी की लहरें) अधिक तीव्रता से महसूस की जाती हैं। सड़कें, दीवारें और भवन गर्मी को अवशोषित करते हैं और रात के समय उसे धीरे-धीरे छोड़ते हैं, जिससे तापमान सामान्य से अधिक बना रहता है। इसे 'अर्बन हीट आइलैंड इफेक्ट' कहा जाता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है।

2. जल संकट

दुनिया के कई हिस्सों में भूमिगत जलस्तर गिर रहा है, नदियाँ सूख रही हैं, और बोतलबंद पानी उद्योग का रूप ले चुका है। कई देश और शहर प्रतिवर्ष जल संकट से जूझते हैं, जिससे कृषि, उद्योग और आम जनजीवन प्रभावित होता है।

3. बार-बार उभरती बीमारियाँ और उनके नए-नए वेरिएंट

हलाहल बनकर हर मौसम में नया वायरस आता है — कभी कोविड, कभी मंकीपॉक्स। डॉक्टर भी थक चुके हैं। दवाएँ बेअसर हो रही हैं। बैक्टीरिया और कीट इतने शक्तिशाली हो गए हैं कि उन्हें मारने को और शक्तिशाली एंटीबायोटिक्स तथा ज़हरीले रसायन चाहिए। खेती में कीटनाशकों और चिकित्सा में एंटीबायोटिक का अत्यधिक प्रयोग अब 'रेसिस्टेंस' की समस्या पैदा कर रहा है। इसका अर्थ है कि रोगजनक जीवाणु और कीट अब दवाओं और रसायनों के प्रति प्रतिरोधक बन चुके हैं। इससे सामान्य उपचार भी असफल हो रहे हैं, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरे की घंटी है।

4. वाहनों से प्रदूषण और इलेक्ट्रिक वाहनों की चुनौती

विद्युतीय वाहन (EV) भले ही पेट्रोल चालित गाड़ियों की तुलना में कम प्रदूषण करते हों, लेकिन उनकी बैटरी, विशेषकर लिथियम, कोबाल्ट और निकल जैसे खनिजों के खनन व प्रसंस्करण में अत्यधिक पानी की आवश्यकता होती है, इनकी बैटरियों का निपटान भी आने वाले समय में परमाणु कचरे के समान चुनौती बन सकता है।

हमने धरती की मिट्टी को रसायनों से जहर बनाया, नदियों में प्लास्टिक बहाया, हवा में धुआँ घोला, इतना ही नहीं, अब हम एक कदम और आगे बढ़कर अंतरिक्ष तक को गंदा करने लगे हैं। सैटेलाइट्स और रॉकेटों का टूटा मलबा, धरती के चारों ओर एक अदृश्य कब्रिस्तान बनाता जा रहा है।जिस अंतरिक्ष को हमने ज्ञान, विज्ञान और शांति का प्रतीक माना था, वही अब युद्ध की नई रणभूमि बनने की तैयारी में जुटी है। यह अंतरिक्ष मलबा आने वाली पीढ़ियों तक हमारी लापरवाही का सबूत रहेगा और हो सकता है इसका दूरगामी परिणाम सुरसा के मुख जैसा हो। जहाँ से हमने सितारों को देखने का सपना सीखा, वहीं अब कबाड़ और हथियारों की होड़ बिछाई जा रही है| हमने हर क्षेत्र को विषाक्त कर दिया है:-

प्राथमिक क्षेत्र — हरित क्रांति के नाम पर एनपीके (NPK) जैसे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अति-प्रयोग हुआ। पंजाब में पहले सोने सी मानी जाने वाली जमीन अब जहरीले पानी और बंजर खेतों में बदल रही है। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश में भी रसायनों ने मिट्टी की सेहत और जैव विविधता को नष्ट किया। महाराष्ट्र में गन्ने की खेती के लिए पानी और रसायनों का अंधाधुंध दोहन हुआ, जिससे मराठवाड़ा में लोग पलायन करने लगे। न जाने वनस्पति और जीव-जंतु की कितनी प्रजातियाँ नष्ट हो चुकी हैं और कितनी IUCN की गंभीर संकटग्रस्त सूची में आ चुकी हैं।

द्वितीयक क्षेत्र — उद्योगों का धुआँ, रंगाई-छपाई का रसायन, कानपुर जैसे चमड़ा उद्योग से बहते ज़हरीले पानी, सीमेंट-स्टील उत्पादन की गर्मी सबने हवा, पानी, जमीन को बीमार कर दिया।

तृतीय क्षेत्र — एसी, फ्रिज, और ऊँची इमारतों ने शहरों को हीट आइलैंड बना दिया। पहले ओजोन परत के लिए खतरनाक सीएफसी (CFC) हटाए गए, लेकिन उनकी जगह आए एचएफसी (HFC) भी ग्रीनहाउस गैस बनकर तापमान बढ़ा रहे हैं। एक समस्या को हटाकर हमने दूसरी समस्या खड़ी कर दी।

चतुर्थ क्षेत्र — डेटा सेंटर और एआई, (AI) जिन्हें ठंडा रखने के लिए लाखों लीटर पानी चाहिए, उनकी गर्म हवा भी पर्यावरण को बिगाड़ रही है। ई-कचरे का पहाड़ जिसमें जहरीले धातु और प्लास्टिक शामिल हैं, इनका सुरक्षित और सुव्यवस्थित निपटान अब नई चुनौती है।

"अति सर्वत्र वर्जयेत्"

- किसी भी चीज की अधिकता का सर्वत्र त्याग किया जाना चाहिए।

कोविड ने हमें आईना दिखाया — इंसान चारदीवारी में बंद था, पेड़, नदियाँ, पक्षी आज़ाद थे। मानो प्रकृति कह रही थी — "तुम्हारे बिना मैं जी सकती हूँ, पर तुम मेरे बिना नहीं।"

भारत के उत्तर-पूर्व में झूम पद्धति अगर संतुलन और विराम के साथ अपनाई जाती तो मिट्टी को अपनी उर्वरक क्षमता लौटाने का अवसर भी मिलता और जंगलों को भी फिर से साँस लेने का समय मिलता, पर जब इसका लालच बढ़ा, तो जंगल बर्बाद हुए,मिट्टी थक गई और आज भी कई समुदाय उस नुकसान को झेल रहे हैं।

इसी तरह मध्य अमेरिका में गाँवों ने जब फिर से मैंग्रोव रोपे,तो बाढ़ का खतरा घटा और मछलियाँ पुनः वापस आ गई | कोस्टा रिका में इको-टूरिज्म ने जंगल और आजीविका दोनों बचाए। अफ्रीका में हाथियों का संरक्षण बीजों और जंगलों के लिए वरदान बना। ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी समुदाय जंगल में नियंत्रित आग लगाकर बड़ी भीषण आग को रोकते हैं —यह प्रकृति के साथ तकनीक का तालमेल दिखाता है। भारत में भी यदि परंपरागत जलसंचय जैसे बावड़ी, तालाब जीवित रखे जाएँ, तो सूखे गाँवों में फिर हरियाली लौट सकती है।

"प्रकृति रक्षति रक्षितः।"

-प्रकृति की रक्षा करने वाला स्वयं भी सुरक्षित रहता है।

प्रकृति हार नहीं मानती। कैलिफोर्निया में ऊदबिलाव लौटे, तो नमी वापस आई, मछलियाँ, पक्षी, कीड़े लौट आए। राजस्थान में बिश्नोई समाज ने खेजड़ी के पेड़ बचाए तो रेत की आँधियाँ रुकी, हरियाली लौटी। कच्छ में जोहड़ों ने सूखे गाँवों को फिर पानीदार बना दिया। दिल्ली के कुछ तालाबों में हरा शैवाल और जलकुंभी ने भारी धातुओं को सोखकर पानी को थोड़ा शुद्ध किया। जर्मनी में लौटे भेड़ियों ने हिरणों की संख्या नियंत्रित कर जंगल का संतुलन बरकरार कर दिया।

हम जिस पर घमंड करते हैं, वह भी प्रकृति की ही देन है। पहिया — गोल आकार से। हवाई जहाज — पक्षियों की उड़ान से। बुलेट ट्रेन — बाज़ और चीते की रफ्तार से। गुंजन पक्षी की मंडराती उड़ान — हेलीकॉप्टरों का मँडराना (hovering)।

पर इन सबके लिए भी पेड़ कटे, ज़मीन खोदी गई, जैसे अपनी रफ्तार का मोल हमने प्रकृति से ही वसूला। दरअसल हमने जिस रफ्तार से प्रकृति का दोहन किया उससे असंख्य वनस्पतियों, जीव-जंतुओं का विनाश और अनगिनत नई बीमारियों का जन्म हुआ मानो हमने मुसीबतों का पिटारा (Pandora's box) खोल दिया।

"पृथिव्यां धारयाम्यहम्।"

- धरती ही हमें धारण करती है, हम उसे नहीं।

विकास वही है जो प्रकृति के हाथ से हाथ मिला कर बढ़े न कि उसे बेड़ियों में जकड़कर अपनी उड़ान तय करे। यदि विज्ञान का सही उपयोग किया जाए तो यह विकास की नई गाथाएँ रच सकता है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारा हमसाया बन सकता है, परंतु यदि मनुष्य ने विज्ञान का उपयोग समझदारी से नहीं किया और इससे होने वाले बहुआयामी खतरों से नहीं बचाया, तो यह भस्मासुर की तरह अपने ही विनाश का कारण बन जाएगा।

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् "। - हम सब एक साथ चलें; एक साथ बोलें; हमारे मन एक हो।

श्री कृष्ण शंकर झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

चुप

हाँ मैं चुप हूँ, चुप हूँ
पर, बिना कुछ कहे भी मैं
बहुत कुछ कह जाता हूँ
अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति
नि:शब्द ही प्रकट कर जाता हूँ
प्रियजन की कड़वी बातें
अनुच्चरित ही सहन कर जाता हूँ
और किसी बात का
मौन समर्थन दे पाता हूँ
तर्कहीन वार्तालाप में भी
चुप्पी का ही बेहतर
विकल्प अपनाता हूँ
अनाचार के प्रतिकार में
मूक प्रतिरोध जताता हूँ
हाँ मैं चुप हूँ, पर फिर भी
बहुत कुछ कह जाता हूँ
दृढ़ संकल्प से, अपने कर्म पथ पर
चुपचाप अग्रसर हो जाता हूँ।

श्री कमल कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मित्रता: जीवन की सबसे सच्ची साझेदारी

मित्रता एक ऐसा रिश्ता है जो न खून के रिश्तों पर निर्भर करता है, न सामाजिक वर्ग, न उम्र और न परिस्थितियों पर। यह एक भावनात्मक बंधन है, जो विश्वास, स्नेह और सहानुभूति पर आधारित होता है। जीवन के हर पड़ाव पर मित्रता का स्वरूप बदलता है, लेकिन उसका महत्व कभी कम नहीं होता। बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक, हर अवस्था में मित्रता एक नई परिभाषा, एक नई भूमिका और एक नया सहारा बन जाती है।

1. बचपन: माता-पिता से दूर होने का पहला सहारा

बचपन में जब बच्चा पहली बार अपने माता-पिता से दूर होता है—जैसे नर्सरी या किंडरगार्टन में भेजा जाता है—तो मित्रता ही वह पहला रिश्ता बनता है जो बच्चे को मानसिक और भावनात्मक बल देता है। वह अनजानी जगह, अनजाने चेहरे और एक नई दिनचर्या में अपने पहले मित्र की संगति में सहजता महसूस करने लगता है। एक खिलौने के लिए लड़ना, फिर अगले ही पल उसे साझा करना—यही दोस्ती की शुरुआती शिक्षा होती है।

2. स्कूली जीवन: समाज की विविधता से साक्षात्कार

स्कूल वह स्थान होता है जहाँ हम समाज के विभिन्न वर्गों, भाषाओं, संस्कृतियों और पारिवारिक पृष्ठभूमियों से आए बच्चों से मिलते हैं। यहाँ मित्रता हमें **समावेशिता** सिखाती है। कोई बच्चा अमीर है, कोई गरीब; कोई तेज है, कोई धीमा; कोई शहरी है, कोई ग्रामीण—लेकिन मित्रता इन सब भिन्नताओं को मिटा देती है। हम उनके साथ खेलते हैं, हँसते हैं, रोते हैं और जीवन की प्राथमिक चुनौतियों से सामूहिक रूप से निपटना सीखते हैं।

3. किशोरावस्था: भावनात्मक सहारा और आत्म-संवेदना

किशोरावस्था एक संवेदनशील अवस्था होती है, जहाँ शारीरिक और मानसिक परिवर्तन हमें अस्थिर करते हैं। माता-पिता से संवाद कठिन हो जाता है, और तब मित्र ही वे लोग होते हैं जिनसे हम अपने मन की बातें खुलकर कह पाते हैं। कभी-कभी यह मित्रता सीमाओं को लांघ जाती है और प्रथम प्रेम का रूप भी ले लेती है। इस अवस्था में दोस्ती आत्म-परिचय और आत्म-विश्वास को जन्म देती है।

4. वयस्कता का प्रारंभ: स्थितिजन्य मित्रता और साझा लक्ष्य

स्कूल और कॉलेज के बाद जब हम अपने गृहनगर से बाहर निकलते हैं—चाहे पढ़ाई के लिए, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए या नौकरी के लिए—तब एक नई प्रकार की मित्रता जन्म लेती है जिसे **स्थितिजन्य मित्रता** कहा जा सकता है। इसमें समान उद्देश्य (जैसे युपीएससी की तैयारी, इंजीनियरिंग, बैंकिंग आदि) होते हैं लेकिन आयु, भाषा और जीवन शैली अलग होती है। ये दोस्त हमारे संघर्ष के साथी बनते हैं। ये न पुराने मित्रों की तरह होते हैं, न भावुकता में गहरे; लेकिन इनका व्यावहारिक महत्व अपार होता है।

5. नौकरी और कार्यस्थल: औपचारिकता और पदानुक्रम के बीच दोस्ती

जब हम किसी संस्थान में कार्यरत होते हैं तो वहाँ दोस्ती का एक नया स्वरूप सामने आता है। यहाँ पदानुक्रम (hierarchy), प्रतिस्पर्धा, और अपेक्षाएं होती हैं। दोस्ती होती भी है तो उसमें सीमाएँ होती हैं—जैसे 'बॉस' से दोस्ती और 'सहकर्मी' से मित्रता में फर्क। फिर भी, लंच टाइम, टीम प्रोजेक्ट्स, और कॉर्पोरेट स्ट्रेस के बीच ये मित्रता मानसिक सुकून देती है। कभी-कभी यहाँ से जीवन भर के गहरे मित्र भी मिल जाते हैं।

6. विवाह: मित्रता की कसौटी और नया प्रारूप

विवाह चाहे प्रेम से हुआ हो या पारंपरिक व्यवस्था से, अंततः सफल विवाह वही होता है जहाँ पति-पत्नी एक-दूसरे के मित्र बन जाएं। दो भिन्न व्यक्तित्व, भिन्न रुचियाँ, और भिन्न जीवनशैली में सामंजस्य बैठाने के लिए मित्रवत दृष्टिकोण जरूरी होता है। पति-पत्नी अगर एक-दूसरे के हितैषी, आलोचक, मार्गदर्शक और सहयात्री मित्र बन जाएं तो हर संकट पार किया जा सकता है।

7. वृद्धावस्था: मित्रों की स्मृति और आत्म-मंथन

जीवन के अंतिम पड़ाव में, जब शरीर थकने लगता है और अधिकांश पुराने मित्र दुनिया छोड़ चुके होते हैं, तब बची रहती है सिर्फ यादें। वही कॉलेज के दिनों की ठहाके, वही चाय की दुकान पर घंटों चर्चा, वही किताबें साझा करना—इन सबकी स्मृति जीवन को आत्मिक संतोष देती है। कभी-कभी बच्चे ही हमारे मित्र बन जाते हैं। हम उनसे सलाह लेते हैं, उनके साथ जीवन की शेष यात्रा साझा करते हैं।

8. जीवन में मित्रता के विविध आयाम

मित्रता सिर्फ सहपाठी या सहकर्मी तक सीमित नहीं रहती—

- **माता–पिता :** कई बार हम अपने माता या पिता से इतनी खुली बातचीत करने लगते हैं कि वे हमारे मित्र बन जाते हैं। विशेषकर किशोरावस्था पार करने के बाद यह समीकरण बदल जाता है।
- **शिक्षक :** जब हम उच्च शिक्षा में आते हैं, तो कई शिक्षक हमारे मेंटर और फिर मित्र बन जाते हैं। उनके अनुभव और सलाह हमारे जीवन को दिशा देते हैं।
- **संतान :** 60 वर्ष के बाद जब हम जीवन को शांत दृष्टि से देखते हैं, तब अपनी संतान को हम मित्र की तरह देखते हैं। उनके निर्णयों में भरोसा रखते हैं, सलाह मांगते हैं, और अपने अनुभव साझा करते हैं।

9. बदलती प्रकृति और तकनीकी मित्रता

आज का डिजिटल युग मित्रता की एक नई परिभाषा लेकर आया है। सोशल मीडिया, वीडियो कॉल, गेमिंग कम्युनिटी और ऑनलाइन समूह ने मित्रता के क्षेत्र को वैश्विक बना दिया है। कभी–कभी वे लोग जो हमने जीवन में कभी देखे नहीं होते, हमारे गहरे मित्र बन जाते हैं।

लेकिन इस डिजिटल मित्रता में भावनात्मक गहराई की चुनौती भी है। इसलिए पुराने मित्रों का महत्व कभी कम नहीं हो सकता।

10. निष्कर्ष: जीवन का अमूल्य उपहार

मित्रता जीवन की वह डोर है जो हर अवस्था में हमें जोड़ती है—बचपन में माता–पिता से, किशोरावस्था में आत्म से, वयस्कता में लक्ष्य से, और वृद्धावस्था में स्मृतियों से। यह रिश्ता न रक्त पर निर्भर है, न जाति, भाषा या उम्र पर। यह बस एक मानव से दूसरे मानव के दिल का जुड़ाव है। जब बाकी रिश्ते औपचारिक हो जाते हैं, तब मित्रता ही वह रिश्ता है जो सहज, नि:स्वार्थ और आत्मिक सुख का स्रोत बन जाता है।

सुश्री प्रीति कुमारी
लेखापरीक्षक

मित्रता केवल एक संबंध नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक शैली है।

मेरा प्यारा स्कूल

मेरा स्कूल है सबसे प्यारा,
मेरा स्कूल है सबसे न्यारा ।
पढ़ना-लिखना, चलना-फिरना,
सपनों को फिर सच में गढ़ना।।

सुबह-सवेरे घंटी बजती,
हम सबको वो आवाज़ बुलाती।
हँसी-खुशी से स्कूल भागे आते,
दोस्त सभी गले लग जाते।।

कक्षा में होती ज्ञान की बातें,
गुरुजी हमें दिशा दिखलाते।
अनुशासन, मेहनत, सच्चाई,
यहीं सिखी हमने सारी अच्छाई।।

गुरुजन हैं दीपक जैसे,
हम सब उनके शिष्य।
वो ही दिखाएँ पथ हमें,
जिससे बन पाए विशेष।।

स्कूल का मैदान है विशाल,
कूदना, दौड़ना है कमाल।
संगीत, चित्र और कविता,
हर हुनर को मिलती यही उड़ान ॥

मेरा स्कूल, मेरा अभिमान,
तू ही है मेरी पहचान।।

जहाँ से भरते है उड़ान सारे

जहाँ से भरते है उड़ान सारे ॥

श्री दिव्यांश प्रसाद
श्री सुजय प्रसाद, लेखापरीक्षक के सपुत्र

धरती का स्वर्ग – मेरी कश्मीर यात्रा (एक यात्रा-वृत्तांत)

"अगर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है." – जब मुगल सम्राट जहांगीर ने कश्मीर की वादियों को देखकर यह शब्द कहे थे, शायद उन्हें भी इस बात का अंदाज़ा नहीं रहा होगा कि ये पंक्तियाँ आने वाले युगों तक हर उस यात्री की जुबान पर होगी, जिसने कभी इस भूमि को छुआ हो। मेरी कश्मीर यात्रा, केवल एक भौगोलिक स्थान की यात्रा नहीं थी – यह एक अनुभव था। एक भावना, जो दिल को भी स्पर्श कर गई।

प्रस्थान की सुबह

कोलकाता से श्रीनगर की उड़ान मेरे जीवन की सबसे अमूल्य उड़ानों में से एक थी। जैसे ही विमान ने आकाश में उड़ान भरी और पहाड़ों की शृंखलाएँ दिखने लगीं, दिल की धड़कनें भी तेज़ होने लगीं। विमान से नीचे झाँककर जब पहली बार बर्फ़ से ढके हिमालय की चोटियाँ दिखीं, लगा मानो आसमान खुद झुक आया हो।

श्रीनगर – जन्नत की पहली सीढ़ी

श्रीनगर की धरती पर कदम रखते ही मन में एक अजीब-सी शांति समा गई। ठंडी हवाओं ने स्वागत किया और आँखों के सामने फैली झीलों और बाग-बगीचों की छवियाँ दिल को मोहने लगीं।

सबसे पहला पड़ाव था – डल झील

सूरज की सुनहरी किरणें झील की सतह पर नाच रही थीं। शिकारा धीरे-धीरे झील में तैर रहा था, और शिकारे वाले की गीत मानो झील की लहरों से बातें कर रही थीं। झील के बीचों-बीच स्थित हाउसबोट पर रात बिताना एक अलग ही अनुभव था। पानी की धीमी थपकियों के बीच, दूर किसी मीनार से आती अज़ान की आवाज़ – यह सब मिलकर एक दिव्य वातावरण का प्रतिरूप तैयार कर रहे थे।

गुलमर्ग – बर्फ की रजाई ओढ़े सपनों की घाटी

अगले दिन की सुबह हम रवाना हुए गुलमर्ग की ओर। रास्ते में ऊँचे-ऊँचे चीड़ के पेड़, ठंडी हवा, और बीच-बीच में बर्फ से लदी डालियाँ – यह सब किसी सपने से कम नहीं था। गुलमर्ग में पहुँचकर जैसे ही गंडोला (केबल कार) में बैठे, लगा हम बादलों में प्रवेश कर रहे हैं। ऊपर पहुँचते ही जो दृश्य सामने था – वह कल्पनाओं से परे था। चारों ओर सफेद बर्फ, ऊँचाई से नीचे दिखती घाटी, और बच्चों की खिलखिलाहट से गूँजता वातावरण। वहाँ गुजरते समय का कुछ पता ही ना चला।

पहलगाम – नदियों की सरगम, घाटियों का गीत

तीसरे दिन हम पहुँचे पहलगाम। कहते हैं, यहाँ की लिद्दर नदी एक संगीतमय आत्मा है, जो पहाड़ों से उतरकर इंसान के हृदय में समा जाती है। मैं सच कहूँ, तो पहली बार किसी नदी को "गाते हुए" सुना। उसका बहाव, उसकी चंचलता, उसकी स्वच्छता – सब कुछ मंत्रमुग्ध कर देने वाली थी। यहाँ पर घुड़सवारी की, कुछ देर बर्फ में खेली, और एक चाय वाले से गर्म कहवा पीकर पहाड़ी किस्से सुनी। वहाँ के ग्रामीणों की आँखों में जो अपनापन था, वह किसी शब्द में बयाँ नहीं किया जा सकता।

सोनमर्ग – सूरज की छाँव और बर्फ़ का बिस्तर

सोनमर्ग एक ऐसी जगह है जहाँ सूरज भी शर्माता है और बर्फ भी मुस्कुराती है। यहाँ पहुँचने के लिए घोड़े पर सवारी करनी पड़ी और रास्ते में कभी-कभी घोड़ा खुद रुक कर सामने की खूबसूरती को निहारने लगता। ऊपर पहुँचकर ऐसा लगता है जैसे कश्मीर ने अपने सारे गहने यहीं उतार दिए हों – ग्लेशियर, हिमनद, नदियाँ, और रंग-बिरंगे फूलों से सजी पगडंडियाँ।

स्थानीय संस्कृति और स्वाद

कश्मीर केवल अपनी वादियों के लिए नहीं, अपनी संस्कृति और स्वादों के लिए भी जाना जाता है। यहाँ का खाना – रोगन जोश, दम आलू, यखनी, और गरमा-गरम कहवा – आत्मा तक गर्म कर देती हैं। कश्मीरी लोग शांत, सरल और सौम्य हैं। उनके पहनावे में 'फिरन', भाषा में नज़ाकत, और जीवन में संतुलन है। उनसे बात करके लगा, जैसे सादगी और सौंदर्य ने कश्मीर में ही जन्म लिया हो।

विदाई के क्षण

यात्रा का अंतिम दिन सबसे भारी होता है। जब श्रीनगर एयरपोर्ट पर वापसी की उड़ान का समय आया, तो लगा जैसे कोई अपने घर से विदा हो रहा हो। मैंने झील की ओर आखिरी बार देखा, और मन ही मन कहा "मैं लौटूंगी.. फिर लौटूंगी तुम्हारी गोद में बैठने, तुम्हारे फूलों को चूमने, और तुम्हारी कहानियाँ सुनने..."

निष्कर्ष

कश्मीर केवल देखने की चीज़ नहीं है, वह महसूस करने की चीज़ है। यह यात्रा मुझे भीतर तक बदल गई। आज भी जब आँखें बंद करती हूँ, तो डल झील की लहरें, पहलगाम की नदी, गुलमर्ग की बर्फ़, और सोनमर्ग की ठंडी धूप, सब एक-एक करके सामने आ खड़े होने लगते हैं। कश्मीर वाकई में एक जादू है – जो एक बार छू जाए, तो जीवन भर दिल से नहीं जाता।

सुश्री नीलम प्रसाद
सुजय प्रसाद, लेखापरीक्षक की पत्नी

खुद को बदलो, दुनिया बदलेगी

हर दर्द में छुपा हो उजाला,
हर हार से मिले सिख।
रोक न पाए कोई तुझे अब,
दिल में बस बदलाव की भावना।

जब सोच बदल जाए इंसान की,
बदलता है समूचा जहां भी।
छोटे कदम से बनती है राह,
जो बढ़ाए उम्मीदों की चाह।

जो अपनी सोच में लाए बदलाव,
छुपे अंधेरों को करे उजाला।
जिसका हर कदम हो सच्चाई से भरा,
वही दुनिया में फैलाए उजाला।

छोटे कदम भी बड़े जज़्बे लाते हैं,
धीरे-धीरे पहाड़ हिल जाते हैं।
मत सोचो क्या कर पाओगे,
एक विचार से तूफ़ान लाओगे।

बदलाव दूर की कोई बात नहीं,
हर सुबह में छुपी नई शुरुआत वहीं।
जो खुद से सच्चा सवाल करता रहे,
वही वक्त का सही अर्थ संजोता रहे।

तो चलो आज एक संकल्प लें,
अपने भीतर क्रांति की लौ जलाएँ।
जिस ज्वाला से उजियारा फैले,
वहीं से बदलाव की शुरुआत हो जाए।

न डरें मुश्किलों से, न थकें राहों में,
हर कदम पर हों नए अरमां साथ में।
जो दिल में हो सच्चा इरादा हमारा,
बदल डालेंगे हम ये जहाँ सारा।

श्री राजेश चौधरी
डाटा एंट्री ऑपरेटर

भारतीय समाज में आधुनिक नारी की स्थिति

सुंदरता का दूसरा नाम स्त्री है। जब कभी भी सुंदरता की बात आती है, तो उसका वर्णन किए बिना नहीं रहा जा सकता। ठीक उसी प्रकार, नारी की सुंदरता को भी नकारा नहीं जा सकता। प्रेम, धैर्य, त्याग, समर्पण और लज्जा का दूसरा नाम नारी है। नारी कभी अपनी कोमलता के कारण तो कभी अपने शक्ति-स्वरूपा रूप के कारण जानी जाती है। आधुनिक काल में राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जाग्रत होने के कारण वर्तमान में नारियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के कारण वह करुणा, ममता, कोमलता और स्नेह को पीछे छोड़कर सशक्तता की ओर अग्रसर है। उन्हें अब पुरुषों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। आज महिलाएँ हर पेशे से जुड़ी हुई हैं। कोई सफल डॉक्टर है, तो कोई वकील, पुलिसकर्मी, शिक्षक या राजनेता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही हैं।

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का रूप माना जाता है। हमारे प्राचीन वेदों से हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय समाज मातृसत्तात्मक था। नारी ही समाज का मूल आधार है तथा ईश्वर द्वारा समाज को दिया गया एक खूबसूरत उपहार है। वह समाज में माँ, बहन, पत्नी और बेटी के रिश्ते निभाती है। सुंदरता का दूसरा नाम स्त्री है। जब कभी भी सुंदरता की बात आती है, तो उसका वर्णन किए बिना नहीं रहा जा सकता; ठीक उसी प्रकार नारी की सुंदरता को भी नकारा नहीं जा सकता। प्रेम, धैर्य, त्याग, समर्पण और लज्जा का दूसरा नाम नारी है। नारी कभी अपनी कोमलता के कारण, तो कभी अपने शक्ति-स्वरूपा रूप के कारण जानी जाती है। अक्सर सुना है कि एक सफल व्यक्ति के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है। वह अपने कार्यों को ईमानदारी व जिम्मेदारी के साथ करती है और पुरुष के साथ हर सुख-दुःख में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहती है।

वैदिक काल में नारी का महत्वपूर्ण स्थान था। आध्यात्मिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी नारी की भूमिका अग्रणी थी। सीता, अनसूया, गार्गी एवं सावित्री इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं। इनका नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति समाज में उच्च श्रेणी की थी। उन्हें अपने स्वभाव और इच्छा के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता थी। महिलाएँ कम उम्र में ही शिक्षित हो जाती थीं। इस काल में महिलाएँ सभी धार्मिक कार्यों में भाग लेती थीं तथा विदुषी महिलाओं को पुरोहित का दर्जा भी प्राप्त होता था। बेटा हो या बेटी, उनके पालन-पोषण में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था।

मध्यकाल में आते-आते स्त्री का गौरव क्षीण या नष्ट होने लगा। कबीर, तुलसी और अन्य संतों ने भी नारी को विकार एवं ताड़ना का पात्र बताया। मुसलमानों के अत्याचारों के कारण महिलाओं को चहारदीवारी में कैद कर दिया गया था। इस काल में नारी की स्थिति दयनीय हो गई थी। उसे घर में गुलामी की जंजीरों में जकड़ा गया था। इस काल में पर्दा प्रथा जोरों पर थी और बाल विवाह को प्रोत्साहन दिया गया था। नारी को हर प्रकार की शिक्षा से वंचित रखा गया था। उन्हें सभी प्रकार की स्वतंत्रता से दूर रखा गया था। जन्म से लेकर मृत्यु तक उन्हें पुरुषों की निगरानी में रहना पड़ता था। इस काल में नारियों का शोषण होता था, उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता था और कई बार वेश्यालयों में बेच दिया जाता था।

आधुनिक काल में राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जागृत होने के कारण वर्तमान समय में नारियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। राजा राम मोहन राय और दयानंद सरस्वती ने भारतीय नारियों को पुरुषों के समकक्ष बिठाने का कार्य किया है। उन्होंने उनके लिए शिक्षा के द्वार खोले हैं। आज की नारी पूर्ण रूप से पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। शिक्षा और विकास के फलस्वरूप भारतीय नारी ने प्राचीन आदर्शों और मान्यताओं को तिलांजलि दे दी है। आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के कारण वह करुणा, ममता, कोमलता, स्नेह जैसे भावों को छोड़कर विलासिता की ओर अग्रसर हो रही है। अब उन्हें पुरुषों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। आज महिलाएं हर पेशे से जुड़ी हुई हैं। कोई सफल डॉक्टर है, तो कोई वकील, पुलिसकर्मी, शिक्षिका, राजनेत्री के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है।

मैथिलीशरण गुप्त ने द्वापर युग के एक प्रसंग में कहा था कि मानव समाज में 'नारी' शब्द का अर्थ सामान्य रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। उसका स्थान पुरुष से कहीं अधिक है। कोमलता, दृढ़ता ही नहीं, अपितु रूप, आकार, शरीर-सौष्ठव, जीवन-यापन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की सर्वोत्तम कल्पना है। 'नर धर्म' से संबंधित होने के कारण उसे 'नारी' कहा जाता है। ''ऋग्वेद

में नारी को 'मेना' कहा गया है, क्योंकि पुरुष उसे सम्मान देता है।'' ''उसमें लज्जा भाव की प्रधानता होने के कारण उसे 'स्त्री' कहा गया है।'' ''पुरुषों में लालसा जागृत करने के कारण वह 'ललना' कहलाती है।''

महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है— ''नारी ने पुरुष को ओज अंश प्रदान किया है और स्वयं के लिए रख ली है माधुरी। उसके लघु शरीर में सर्जन, पालन और संहार की समष्टि है। उसके अधरों में सुधा है, अंचल में पयस्विनी और नेत्रों में विष तथा अमृत का संगम है। उसके एक संकेत से सृष्टि हो सकती है और एक संकेत से प्रलय। जरा और मृत्यु, यौवन और जीवन, प्रलय और सृष्टि – ये सभी उसके परिवर्तन के ही रूप हैं।''

आज भारत की बेटी कल्पना चावला ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपने नाम का डंका बजाकर देश का नाम रोशन किया है। मदर टेरेसा ने समाज की उन्नति के लिए अनेक कार्य किए हैं, जो एक मिसाल है। सरोजिनी नायडू देश की पहली महिला राज्यपाल बनने का गौरव प्राप्त कर चुकी हैं। अनेक समाज सुधारकों ने देश में नारियों की स्थिति सुधारने के लिए कार्य किए है। उनके द्वारा किए गए कार्यों का प्रभाव वर्तमान में भारतीय नारियों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

लेकिन इसका दूसरा पक्ष भी हमारे समाज में दिखाई देता है, जहाँ आज भी महिलाओं की स्थिति पर प्रश्नचिह्न लगाया जा सकता है। उनकी वर्तमान स्थिति को इस प्रकार समझा जा सकता है—

एक ओर यही स्त्री दिल्ली के एक सुनसान इलाके में देर रात दरिंदों की हवस का शिकार बन जाती है, तो दूसरी ओर अमृतसर में पली-बढ़ी किरण बेदी नाम की एक बेटी उन्हीं दरिंदों की खाल खींचती दिखाई देती है। यदि वह स्वयं को अबला नारी माने, तो चहारदीवारी के भीतर अत्याचार सहते-सहते अपनी आँसुओं के साथ मर जाती है। किंतु यदि वह स्वयं को सबला माने, तो जापान के भीषण भूकंप में अपनी जान गंवाकर भी अपने बच्चे को नया जीवन दे जाती है।

महाराष्ट्र महिला आयोग की एक सदस्य द्वारा यह बयान दिया गया कि महिलाओं के साथ होने वाले दुष्कर्म के लिए उनका पहनावा और व्यवहार जिम्मेदार है। यह बयान सोचने को मजबूर करता है कि देश की छोटी-छोटी बेटियों के साथ—जिनकी उम्र 3 से 7 वर्ष भी नहीं होती—वे कौन सा उकसाने वाला पहनावा पहनती हैं? जिन्हें दुनियादारी की समझ भी नहीं होती, वे ऐसा कौन-सा व्यवहार करती हैं जिसके कारण उन्हें इन अपराधों का शिकार होना पड़ता है?

आधुनिक भारत की महिलाएं अब अन्याय नहीं सहती और परिस्थितियों का डटकर सामना करने की हिम्मत रखती हैं। आज महिलाएं सर्वोच्च पदों पर तैनात हैं और आत्मविश्वास के साथ परिवार में अपनी भूमिका निभा रही हैं। समाज का विकास तभी संभव है जब नारी को उचित सम्मान और दर्जा प्राप्त हो। संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण की माँग की जा रही है।

हर वर्ष 8 मार्च को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है। इस दिन महिलाओं की वर्तमान स्थिति के आलोक में उनके कार्यों की सराहना की जाती है। उन्हें अनेक आयोजनों द्वारा सम्मानित किया जाता है। समाज भी अब नारी के अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक और सतर्क हो गया है। अब परिवार के प्रत्येक निर्णय में महिलाओं की राय को भी महत्त्व दिया जाता है।

महिलाएं अब आर्थिक और व्यक्तिगत रूप से सशक्त तथा स्वतंत्र हो चुकी हैं, जो कि एक सकारात्मक बदलाव है। नारी की उन्नति केवल नारी के हित में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज के विकास की दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक है।

श्री सुमन दत्त
लिपिक

दुनिया हैरत में है

हरी भरी स्वर्ग सी प्यारी वादी,
पलक झपकते ही खून से सन गई,
प्यार भरी हँसी ठिठोली की जगह,
गोलियों की आवाज़ और चीख से गूंज गई,
ऐसा आतंकी मंजर देख दुनिया हैरत में है...

जिस हथेली पर सजी थी मेहंदी,
जिन कलाईयों में खनक रही थी चूड़ियाँ,
कुछ दिन पहले जो मांग सिंदूर से भरी थी,
आज पड़ी है सुनी और वीरान,
ऐसी हैवानियत देख दुनिया हैरत में है...

रक्षक के वेश में घुस आया भक्षक,
हर तरफ मच गया हाहाकार,
झेलम का पानी हो गया खून से लाल,
मानवता भी हो गई शर्मसार,
ऐसी हिमाकत देख दुनिया हैरत में है...

धर्म के नाम पर करते हैं बंटवारा,
दंगा करते हैं और कराते लूटपाट,
इंसान को जो बना देते हैं हैवान,
युवाओं को गंदी राजनीति का बनाते हैं मोहरा,
ऐसी दहशतगर्दी को देख दुनिया हैरत में है...

उन आतंकियों के नाक में कर दिया दम,
उनको उनके ही घर में घुसकर मारे हम,
मद में चलते थे जो तानाशाह,
सिर झुकाकर करने लगे समझौता,
ऐसा प्रतिशोध देख दुनिया हैरत में है...

सुश्री सोनिया
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बेरोजगारी:
भारत के समक्ष एक जटिल और विकराल सामाजिक-आर्थिक समस्या

भारत, दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है, आज एक बहुत बड़ी समस्या से जूझ रहा है—बेरोजगारी। ये सिर्फ पैसे की कमी या काम न मिलने की बात नहीं है, बल्कि ये हमारे देश की तरक्की को रोक रही है। इसके कारण समाज में असंतोष बढ़ता है और देश की सुरक्षा को भी खतरा होता है। अगर हम इस समस्या को जल्दी नहीं समझे और सही कदम न उठाए, तो इसका नुकसान सिर्फ आज के युवाओं को हीं नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी भुगतना पड़ेगा।

स्वतंत्रता मिलने के बाद हम सबको यह उम्मीद थी कि सभी के पास रोजगार होगा और देश आगे बढ़ेगा। लेकिन हमारी जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ी कि रोजगार देना मुश्किल हो गया। 1951 से 2011 के बीच हमारी आबादी करीब चार गुना बढ़ गई। 2011 में ये 125 करोड़ थी और अब लगभग 143 करोड़ के आस-पास पहुँच चुकी है। जनसंख्या इतनी तेज से बढ़ी कि नए-नए रोजगार के अवसर सृजित करना मुश्किल हो गया है।

बेरोजगारी के कारण

1. **अधिक जनसंख्या, कम नौकरी:** हमारे देश की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, पर नौकरियों का सृजन उस तेजी से नहीं हो रहा है, जितनी कि लोगों को चाहिए।
2. **शिक्षा का सिस्टम कमजोर:** हमारी पढ़ाई ज्यादातर किताबों तक ही सीमित है, व्यावहारिक ज्ञान कम मिलता है। इसलिए जो परंपरागत तरीके से पढ़कर निकलते हैं, वें आवश्यक कौशल तथा अनुभव की कमी के कारण नौकरी के लिए तैयार नहीं होते।
3. **फैक्ट्रियां और कारोबार कम बढ़े:** नए उद्योग नहीं खुले या उनकी वृद्धि धीमी रही, इसलिए रोजगार के मौके कम हैं।
4. **जरूरी हुनर की कमी:** आज के जमाने में तकनीक के हिसाब से काम करना जरूरी हो चुका है, लेकिन बहुत से युवा इस तरह के हुनर नहीं सीख रहे हैं।
5. **शहर और गांव का फर्क:** ज़्यादातर रोजगार के अवसर शहरों में हैं, लेकिन गांवों में रोजगार कम होने की वजह से वहां के लोग भी परेशान हैं।
6. **सरकारी नीतियों में दिक्कतें:** कई बार जो योजनाएं आती हैं, वो सही तरीके से लागू नहीं होती या भ्रष्टाचार की वजह से उस योजना का फायदा गरीबों तक नहीं पहुंच पाता।

बेरोजगारी से होने वाले नुकसान

जब लोगों को रोजगार नहीं मिलता, तब उनकी उम्मीदें टूटने लगती है। वे उदास और नाखुश हो जाते हैं। इससे समाज में झगड़े, अपराध और असमंजस बढ़ते हैं। बेरोजगारी देश की प्रगति को भी धीमा कर देती है क्योंकि इससे लोगों की खर्च करने की क्षमता कम हो जाती हैं और देश की अर्थव्यवस्था कमजोर होती है।

समस्या का समाधान

1. **प्रैक्टिकल शिक्षा नीति:** हमें ऐसी पढ़ाई करनी चाहिए जो सीधे रोजगार से जुड़ी हो। तकनीकी शिक्षा और कौशल पर जोर देना होगा।
2. **खुद का काम शुरू करने के लिए प्रोत्साहन:** युवाओं को अपने काम-धंधे शुरू करने के लिए सरकार मदद दे।
3. **नई फैक्ट्रियां और बिजनेस बढ़ाएं:** सरकार को उद्योगों में निवेश बढ़ाना चाहिए ताकि लोगों को ज्यादा से ज्यादा नौकरी मिल सके।
4. **जनसंख्या पर नियंत्रण:** परिवार नियोजन पर ध्यान देना

जरूरी है ताकि संसाधनों और रोजगार का संतुलन बना रहे।

5. **ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार:** ग्रामीण क्षेत्रों में खेती के साथ-साथ छोटे-छोटे उद्योग और सेवा क्षेत्र को भी बढ़ावा दें।
6. **सरकारी योजनाओं को सही तरीके से लागू करें:** योजना चाहे कितनी हीं अच्छी क्यों न हो, अगर सही से लागू न किया जाए तो उसका कोई फायदा नही।

निष्कर्ष:

बेरोजगारी व्यापक और जटिल समस्या है, लेकिन सही कोशिशों से इस समस्या का हल किया जा सकता है। अगर हम अपनी पढ़ाई, आर्थिक नीतियों, और जनसंख्या नियंत्रण पर ध्यान दें, तो रोजगार के नए अवसर पैदा हो सकते हैं। इससे न सिर्फ हमारा देश आर्थिक रूप से मजबूत होगा, बल्कि समाज में भी शांति और एकता आएगी। इसलिए बेरोजगारी से लड़ना हम सब की जिम्मेदारी है।

श्री राजेश चौधरी
डाटा एंट्री ऑपरेटर

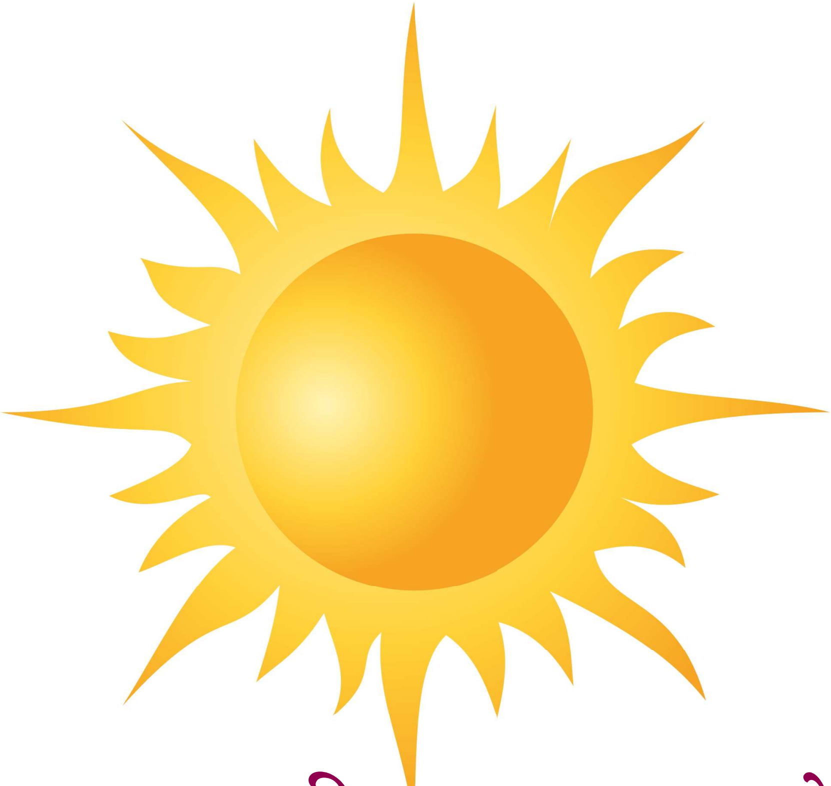

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो सूरज की तरह जलना सीखो

— डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

रवि-रजनी का मधुर- मिलन

सखि! आज अंग क्यों फड़क रहे? क्या प्रियतम आने वाला है?
लगता है मेरे भाग्य खिले और आज प्रणय की बेला है ।
हे सखि! अब मैं सज आऊँ, अँधियार, निराशा तज आऊँ
पहन के अपना श्याम वसन, आँचल में सितारे जड़ आऊँ
कंचन से निज भाल सजा प्रियतम हेतु मांग सँवारूँ
उनकी प्रेम-प्रतीक्षा में, सज दुलहन-सी मैं मुसकाऊँ
हे सखि! तुम सब मंगल-गान करो कि प्रियतम मेरे आएंगे
स्वर्णिम रश्मि से अपने वे मेरी मांग सजाएंगे
फिर मैं मैं न रह पाऊँगी हम प्रणय, मिलन में खोएंगे
मैं प्रियतम में खो जाऊँगी वे मुझमें आन समाएंगे
प्राची से स्वर्णिम रश्मि चली अब प्रियतम आने वाला है
हे सखि! मंगल-गान करो कि आज प्रणय की बेला है।

किन्तु हे सखि! मैं कैसे प्रणय करूँ, कैसे मैं आँखें चार करूँ
प्रियतम की दृष्टि पड़ते ही मैं लाल शर्म से होती हूँ
तजकर सारा शृंगार यहाँ मैं दक्षिण में छिप जाती हूँ
फिर मधुर-मिलन की आशा में मैं पुनः प्रतीक्षा करती हूँ
तुम सब उनका सम्मान करो मैं फिर सज-धज कर आती हूँ
कल्पना मिलन की करती हूँ और मन ही मन इतराती हूँ
आऊँगी, होगा मधुर-मिलन, जीवन मेरा खिल जाएगा
विरह रवि की जाएगी वह रजनी से मिल पाएगा ।

सखि! लो मैं फिर से प्रकट हुई, दृढ़ निश्चय ले मैं सज आई
साहस मैं आज जुटाऊँगी, मैं आज मिलन कर पाऊँगी
पर, प्रियतम मेरे किधर गए, क्या मुझ पर इतना बिफर गए
कि छोड़ मुझे अँधियारी में, अपने संग ज्योति लिए चले ?
नहीं रे सखि! तुमसे मिलने रवि आए थे, स्वर्णिम उपहार भी लाए थे
पर, तुमको न पाकर मेरी सखि, वे विरह में तप कर रोए थे
फिर खोज तुम्हारी लेने को वे दक्षिण दिशा को चले गए
पर, एक दिलासा दिला गए
वे फिर से उत्तर आएंगे, अपनी रजनी को पाएंगे
रवि-रजनी का होगा मधुर-मिलन, नव सृष्टि सृजित हो जाएगी ।
हे सखि! उपहार की मुझको चाह नहीं, बस, प्रेम-भाव की भूखी हूँ

है अद्वितीय वे मेरे लिए, मैं उनके लिए अनूठी हूँ
बस, एक कामना, किसी तरह, अपना हो जाए मधुर-मिलन

हे सखि! यह सच है
मुझको न पाकर मेरे रवि बेचैन बहुत हो जाते हैं
मधुर-मिलन की आशा में वे दिशा-दिशा विचरण करते हैं
मिलन नहीं हो पाने पर वे बहुत व्यथित हो जाते हैं
विरह-वेदना में मेरे नित ताप में तपते रहते हैं
भले मिलन न होता हो पर प्रेम मुझी से करते हैं
मैं नाम रवि का जपती हूँ, वे नाम मेरा ही जपते हैं
मधुर-मिलन की आशा में हम दोनों जलते रहते हैं ।
रवि तो मेरे निर्दोष यहाँ, उनके मन में रोष कहाँ
वे तो मिलन की आशा में नित मेरे द्वार पर आते हैं
पर मैं ही छल कर जाती हूँ, दिल उनका छलनी कर जाती हूँ
सिंदूरी मांग सजाते ही तज उसे विकल कर जाती हूँ ।
पर कैसे हो अपना मधुर-मिलन?
मैं आती हूँ वे जाते हैं, वे आते हैं मैं जाती हूँ
वे उत्तर जब भी जाते हैं मैं दक्षिण में छिप जाती हूँ
वे दक्षिण जब भी आते हैं मैं उत्तर में आ छिपती हूँ
उत्तर-दक्षिण, दक्षिण-उत्तर के इस आँख-मिचौनी में
मैं बीज विरह के बोती हूँ और खुद भी उसमें तपती हूँ ।

मेरी भी इच्छा यही सखी मैं मिलन रवि से कर आऊँ
अपने प्रणय की बेला हो और पान अधर-रस कर पाऊँ
पर, तुम ही सोचो,
क्या रवि से मेरा मधुर-मिलन सृष्टि हेतु श्रेयष्कर है?
यह ऐसा प्रणय जहाँ मिलन नहीं होना ही जग में हितकर है ।
अतः हे सखि! मैं मिलन बिना ही रह लूँगी, मैं विरह वेदना सह लूँगी
पर, रवि ही मेरे प्रियतम होंगे, रजनी उनकी प्रियतमा होगी
बस, रवि से जरा बता देना, है मिलन हमारे भाग्य नहीं
जग, सृष्टि सदा ही खिली रहे, हो भाग्य हमारे विरह सही
प्रकृति सदा ही फूले-फले, सारा जग यूँ ही मुसकाए
भले न हो अपना मधुर-मिलन, पर प्रणय हमारा अमर रहे ।

श्री संतोष कुमार ठाकुर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता – आशीर्वाद या अभिशाप

भूमिका

वर्तमान समय को डिजिटल युग तथा यंत्रों का युग कहा जाता है, जहाँ तकनीक ने मानव जीवन के हर पहलू को घेर लिया है। इनमें से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और तेजी से विकसित हो रही तकनीक है — कृत्रिम बुद्धिमत्ता । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस निस्संदेह 21वीं सदी की सबसे परिवर्तनकारी तकनीकी प्रगति में से एक है। इसके तीव्र विकास ने उद्योगों में नए अवसरों की शुरुआत की है; स्वास्थ्य सेवा से लेकर परिवहन, संचार से लेकर विनिर्माण तक हर चीज में क्रांति ला दी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीनों और कंप्यूटर सिस्टम को इंसानों की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। इसका उपयोग स्वचालन, चिकित्सा, शिक्षा, उद्योग, परिवहन, और कई अन्य क्षेत्रों में हो रहा है। लेकिन जैसे हर जलते दीपक तले अंधेरा होता है वैसे ही, इन आशाजनक प्रगति के बीच, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंधेरे पक्ष को स्वीकार करना और समझना भी आवश्यक है । हालांकि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कई फायदे हैं, लेकिन इसके कई नकारात्मक पहलू भी हैं, जो समाज, आर्थिक व्यवस्था और मानवता के लिए खतरनाक साबित हो सकते हैं ।

1. रोजगार पर प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सबसे गंभीर नकारात्मक पहलुओं में से एक है इसके कारण रोजगार में कमी आना। इसके द्वारा संचालित स्वचालन वैश्विक स्तर पर लाखों नौकरियों को विस्थापित करने की क्षमता रखती है, विशेष रूप से वे जो नियमित और दोहराव वाले कार्यों से संबंधित हैं। जब मशीनें और रोबोट मानव के कार्यों को तेजी और कुशलता से करने लगेंगे, तो कंपनियां लागत बचाने के लिए मनुष्यों की जगह मशीनों को प्राथमिकता देना शुरू कर देंगी। इससे निम्न और मध्यवर्गीय श्रमिक बेरोजगार हो जाएंगे। उदाहरण के तौर पर, फैक्ट्रियों में मैनुअल काम करने वाले लोग, बैंकिंग और काउंटर कर्मचारी, ड्राइवर, आदि की नौकरियां मशीनों और ऑटोमेशन के कारण खतरे में हैं। इसके अलावे, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण आर्थिक लाभ कुछ बड़ी कंपनियों और धनी व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित हो जाएंगे। संपद का यह संकेन्द्रण धन असमानता को बढ़ा सकता है और व्यापक आबादी के लिए आर्थिक गतिशीलता को सीमित कर सकता है। बेरोजगारी बढ़ने से आर्थिक असमानता बढ़ेगी, जिससे सामाजिक तनाव और अपराध भी बढ़ सकते हैं। हालाँकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता में नई नौकरी बनने की संभावना भी भरपूर हैं लेकिन इसका प्रभाव तकनीकी रूप से पिछड़े अथवा अल्प कुशल श्रमिकों के लिए बहुत ही दुखद है।

2. मानवता पर प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में इंसानी भावनाएं, सहानुभूति, और नैतिकता की कमी होती है। मशीनें केवल प्रोग्रामिंग और डेटा के आधार पर निर्णय लेती हैं, वे मनुष्यों की तरह संवेदनशील नहीं होती। इस वजह से वे ऐसी स्थितियों में सही निर्णय नहीं ले पाती जहाँ मानवीय विचार, संवेदना और नैतिकता जरूरी हो। उदाहरण के तौर पर, चिकित्सा क्षेत्र में एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम बीमारी का सही इलाज सुझा सकता है, लेकिन मरीज की मनोदशा, मानसिक स्थिति और परिवार की परिस्थितियों को समझना उसके लिए संभव नहीं है। ऐसे में मशीन के निर्णय मानवीय निर्णय की जगह नहीं ले सकते क्योंकि ऐसे निर्णयों को केवल एल्गोरिदम या बाइनरी लॉजिक तक सीमित नहीं किया जा सकता है। यह सिस्टम अक्सर कठोर ढाँचों पर निर्भर करते हैं जो नैतिक जटिलता को पर्याप्त रूप से पकड़ नहीं सकते है।

3. डेटा सुरक्षा और निजता का संकट

बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र करने, उसका विश्लेषण करने और उसकी व्याख्या करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्षमता व्यक्तिगत गोपनीयता और नागरिक स्वतंत्रता के लिए गंभीर ख़तरा पैदा करती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम द्वारा संचालित निगरानी तकनीक, वास्तविक समय में नागरिकों की गतिविधियों की निगरानी करने के लिए सरकारों और निगमों द्वारा समान रूप से नियोजित की जा रही हैं। चेहरे की पहचान, स्थान ट्रैकिंग, सोशल मीडिया विश्लेषण और पूर्वानुमानित पुलिसिंग उपकरण इसकी अनुप्रयोगों के कुछ उदाहरण हैं जिनका उपयोग व्यक्तिगत जीवन में घुसपैठ करने के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा, इस सिस्टम को हैक करके उसका दुरुपयोग किया जा सकता है, जिससे बड़े पैमाने पर साइबर अपराध, साइबर आतंकवाद और धोखाधड़ी बढ़ सकते हैं। सत्तावादी शासन में, ऐसी तकनीकों ने राज्यों की निगरानी तंत्र को सक्षम किया है जहाँ असहमति को दबाया जाता है, और स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया जाता है। लोकतांत्रिक समाज में भी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता निगरानी के अनियंत्रित विकास से गोपनीयता मानदंडों को नुकसान पहुँचने और मुक्त भाषण और अभिव्यक्ति पर भयावह प्रभाव पड़ने का जोखिम है। इस प्रकार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण निजता और डेटा सुरक्षा की समस्या गंभीर हो जाती है।

4. नैतिक और कानूनी दुविधाएं

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से कई नैतिक और कानूनी सवाल उत्पन्न होते हैं जैसे कि अगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा कोई दुर्घटना होती है तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी? निर्माता की, उपयोगकर्ता

की या कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम की? इसके अलावा, इसके निर्णय में पक्षपात का खतरा भी होता है, क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को जो डेटा दिया जाता है, वह कभी-कभी पूर्वाग्रहपूर्ण हो सकता है। इससे सामाजिक अन्याय और भेदभाव बढ़ सकता है। इसलिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग में नैतिक नियम और कानूनी प्रावधान बनाना चुनौतीपूर्ण है।

5. मनुष्यों की निर्भरता और क्षमता में कमी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अत्यधिक निर्भरता से मानव की अपनी सोचने-समझने और निर्णय लेने की क्षमता कमजोर हो सकती है। जब हम प्रत्येक समस्या के लिए सिर्फ मशीनों का सहारा लेने लगेंगे, तो हमारी रचनात्मकता, समस्या समाधान क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता और विश्लेषणात्मक सोच प्रभावित हो सकती है।

6. सामाजिक अलगाव और मानव संबंधों पर प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग से इंसानों के बीच बातचीत और सामाजिक संपर्क कम हो सकते हैं। आजकल कई लोग सोशल मीडिया, चैटबॉट, और वर्चुअल असिस्टेंट के माध्यम से बातचीत करते हैं, जो वास्तविक सामाजिक संबंधों की जगह नहीं ले सकते। यह अकेलेपन, अवसाद और मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं को बढ़ावा दे सकता है। कुछ हॉलीवुड मूवी जैसे "Her" ऐसी संपर्कों के विषय पर प्रकाश डालती है।

7. शिक्षा पर प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के क्षेत्र में सुधार तो ला सकता है, लेकिन यदि छात्र हर चीज के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर निर्भर हो जाएं, तो उनकी सोचने और सीखने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। साथ ही, इस पर आधारित ट्यूटरिंग सिस्टम के गलत या पक्षपातपूर्ण सुझाव से शिक्षा की गुणवत्ता भी प्रभावित हो सकती है।

8. सुरक्षा खतरे और हथियारों में उपयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग रक्षा क्षेत्र में भी तेजी से हो रहा है, खासकर स्वचालित हथियार, स्वायत्त ड्रोन, हैकिंग टूल्स के निर्माण में। ये हथियार बिना मानव हस्तक्षेप के हमला कर सकते हैं, जिससे वैश्विक सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साइबर हमले के वक़्त पावर ग्रिड, वित्तीय प्रणाली और स्वास्थ्य सेवा नेटवर्क - साइबर हमलों के लिए संभावित लक्ष्य बन जाते हैं जिससे देश की सुरक्षा और अर्थव्यवस्था को हानि पहुँचा सकते है। आतंकवादी तथा विदेशी शत्रु राष्ट्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम में कमज़ोरियों का फायदा उठाकर वित्तीय नुकसान के साथ साथ शारीरिक नुकसान भी पहुँचा सकते है। इसके अलावा यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता कभी खुद की सोच के अनुसार समस्त क्षमता अपने हाथ में लेना चाहे तो वो समग्र सभ्यता के लिए प्रलयकारी हो सकता हैं जिसका एक चित्र हॉलीवुड मूवी "Terminator" एवं " I, Robot" में देखी जा सकती है।

9. सांस्कृतिक और मानवीय विविधता पर खतरा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम मुख्यतः पश्चिमी देशों की तकनीक और डेटा पर आधारित होते है। इससे अन्य संस्कृतियों, भाषाओं और विचारों का प्रतिनिधित्व कम होता है। फलस्वरूप अन्य संस्कृतियों और भाषाओं का समावेश तुलनात्मक रूप से कम देखा जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सिस्टम अगर विविधता को ध्यान में न रखें, तो वे वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक असमानता पैदा करेगी और कम प्रचलित भाषाओं और संस्कृतियों की कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा उपेक्षा से विलुप्ति हो सकती है।

10. तकनीकी त्रुटियां और गलत निर्णय

किसी भी तकनीक की तरह कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी पूरी तरह दोषरहित नहीं है। इसमे भी गलती हो सकती है, जिसके गंभीर परिणाम हो सकते है। उदाहरण के लिए स्वचालित ड्राइविंग कारों का एक्सीडेंट, मेडिकल डायग्नोसिस में त्रुटि या वित्तीय लेनदेन में गड़बड़ी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भरोसेमंदी और नियंत्रण पर एक बड़ा प्रश्न है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक क्रांतिकारी तकनीक है, जिसने मानव जीवन को कई तरह से आसान और प्रभावी बनाया है लेकिन इसके साथ जुड़े कई गंभीर नकारात्मक पहलू भी हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। रोजगार की हानि, नैतिक दुविधाएं, निजता का खतरा, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव और सुरक्षा संबंधी चिंताएं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रमुख नकारात्मक पक्ष हैं। इसलिए हमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास और उपयोग में संतुलन बनाए रखना होगा ताकि इसकी कुशाग्रता का सही और सुरक्षित उपयोग हो सके और इसका सुफल मानवता पर एक आशीर्वाद की तरह साबित हो। इसके लिए सरकारों, वैज्ञानिकों, उद्योग जगत और समाज को मिलकर नैतिक, कानूनी और तकनीकी नियम बनाकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सही और सुरक्षित उपयोग को सुनिश्चित करना होगा। तब जाकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानवता के लिए अभिशाप नही वरदान साबित हो सकेगा।

श्री कौशिक चक्रवर्ती
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

संघर्ष की स्याही से

काँटों से भरी थी राह मेरी,
फिर भी चलते गया, रुका कहीं नहीं ।
हर मोड़ पर अंधेरे मिले मुझे,
पर दिल का दीपक बुझा कहीं नहीं ।

हाथों में थे छाले, आँखों में थे स्वप्न,
धूल से भरा हुआ था मेरा आत्मविश्वास।
लोग हँसे, बोले— "क्या मिलेगा तुझे?"
पर मन ने कहा— "बस थाम ले तपन।"

कभी टूटा, कभी झुका, पर बिखरा कहीं नहीं,
कभी चीखा भीतर से, पर दिखा नहीं।
संघर्ष ने मुझको पत्थर से तराशा,
अब जो हूँ, वो आग है— पर बुझा नहीं।

हर गिरावट ने सिखाया उठना,
हर ठोकर ने सिखाया बचना।
संघर्ष ही तो था मेरा गुरु,
जिसने बताया— खुद पे है विश्वास रखना।

अब जब भी कोई कहता है— "रास्ता कठिन है",
मैं मुस्कुराता हूँ और कहता हूँ— "मैं भी वहीं से आया हूँ।"
संघर्ष अभी भी बाकी है।
समर अभी टला नहीं।
जंग अभी जारी है।
फिर से एक बार जंग जितने की बारी है।

श्री शेखर प्रियदर्शी
लेखापरीक्षक

जीवन — एक अबूझ पहेली

जीवन... यह शब्द जितना सरल लगता है, इसकी गहराई उतनी ही जटिल है। यह एक ऐसी पहेली है, जिसे समझने में ऋषि-मुनि से लेकर दार्शनिक, कवि और आम इंसान तक सदियों से लगे हैं — पर उत्तर अब तक अधूरा है। जीवन कभी कविता सा कोमल लगता है, तो कभी युद्धभूमि सा कठोर। कभी ये लोरी बनकर सुलाता है, तो कभी आंधी बनकर झकझोर देता है।

जन्म से मृत्यु तक की यात्रा — एक रहस्य

जब एक शिशु जन्म लेता है, वह कोरा काग़ज़ सा होता है। उसके जीवन की शुरुआत माता-पिता के चेहरे की मुस्कान से होती है। जैसे-जैसे समय बीतता है, अनुभवों की स्याही से जीवन की कहानी लिखी जाती है। किन्तु यह कहानी कब और कैसे मोड़ ले लेगी — यह कोई नहीं जानता।

हर मोड़ एक नया सवाल खड़ा करता है — क्या यही रास्ता सही है? क्या मेरे निर्णय उचित थे? क्या यह सुख शाश्वत है या क्षणिक? यही जीवन की अबूझ प्रकृति है — हर उत्तर एक नए प्रश्न की ओर ले जाता है।

सुख और दुख — दो पहलू, एक ही सिक्का

जीवन में खुशियाँ उस इंद्रधनुष की तरह हैं जो बारिश के बाद उभरता है — रंगीन, चमत्कारी और आशान्वित। लेकिन इन्हीं इंद्रधनुषों के बीच छिपे होते हैं काले बादल — दुख, निराशा और पीड़ा। कभी किसी प्रियजन का साथ खोना, कभी अपनी असफलताओं से जूझना — ये जीवन का गहरा पक्ष है। परंतु दुख ही तो वह कारक है जो हमे संवेदनशील बनाता है तथा अपने अस्तित्व को गहराई से महसूस करने का अवसर देता है।

रिश्ते — जीवन की जीवंत धड़कन

जीवन केवल स्वयं के अनुभवों तक सीमित नहीं है — यह रिश्तों की डोर से जुड़ा है। माता-पिता का स्नेह, मित्रों की मुस्कान, प्रेमी का साथ, बच्चों की किलकारी — ये सब मिलकर जीवन को अर्थ देते हैं। पर रिश्ते भी स्थायी नहीं होते। कुछ जुड़ते हैं, कुछ टूटते हैं — और यही अस्थिरता जीवन को अबूझ बनाती है। हम अक्सर यही सोचते रह जाते हैं — क्यों कोई व्यक्ति आया? क्यों वो चला गया? इसका उत्तर शायद किसी के पास नहीं।

स्वयं की खोज — सबसे गहरी पहेली

इस संसार में हम सब किसी न किसी उद्देश्य से आए हैं, ऐसा विश्वास अक्सर मन में पलता है। किंतु वह उद्देश्य क्या है? इसे जानने की यात्रा ही "स्वयं की खोज" कहलाती है — और यह खोज सबसे कठिन होती है। कई बार लोग सारी उम्र यह तय नहीं कर पाते कि वे वास्तव में कौन हैं? अपने नाम, पेशे, समाज के परिचय से परे उनकी असली पहचान क्या है? — यह एक ऐसी गुत्थी है जो आजीवन असुलझी रहती है।

अनिश्चितता — जीवन की स्थायी साथी

सब कुछ योजना के अनुसार हो — यह कल्पना मात्र है। जीवन हर दिन नया रूप ले सकता है। एक छोटी सी घटना सब कुछ बदल सकती है। यही अनिश्चितता जीवन को रोमांचक भी बनाती है और डरावना भी। कई बार इस अनिश्चितता से जूझते-जूझते हम थक जाते हैं। परंतु शायद इसी के कारण जीवन बोरिंग नहीं होता — यह हमें सक्रिय, सतर्क और सचेतन बनाए रखता है।

निष्कर्ष: अबूझता ही जीवन की सुंदरता है

यदि जीवन सरल होता, स्पष्ट होता, तो शायद इसकी जिज्ञासा ही समाप्त हो जाती। यही तो जीवन का सौंदर्य है — उसका रहस्यपूर्ण, अप्रत्याशित और जटिल होना। इसलिए जीवन को समझने से पहले उसे महसूस करना सीखो। उसके हर क्षण को गले लगाओ — चाहे वह खुशी हो या दुःख। क्योंकि अंतिम सत्य यही है —

"जीवन प्रश्न नहीं, एक अनुभव है —
इसे हल नहीं किया जा सकता, बल्कि सिर्फ जिया जा सकता है।"

अगर चाहो, तो मैं इसे कविता में बदल दूँ, या इसे ऑडियो फॉर्म में सुना सकूँ। बताओ, किस रूप में जीवन की इस पहेली को और रंगीन बनाया जाए?

श्री मनोरंजन कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

हम थक क्यों जाते हैं?

थकान या थकावट हमारे जीवन का लगभग निरंतर साथी है। हालाँकि, थकान कैसा महसूस होता है, इस बारे में अलग-अलग लोगों के अलग-अलग राय है। कई बार हम बिना काम किए भी थका हुआ महसूस करते हैं। कई बार थकान के कारण हमें कुछ भी करने का मन नहीं करता। दरअसल, काम के अंत में, काम के दौरान और काम के अलावा भी, समय-समय पर शारीरिक और मानसिक थकावट के कारण जब हम थकान से घिर जाते हैं, तब जीवन पूरी तरह नीरस लगने लगता है। दरअसल, शारीरिक परिश्रम, कई तरह की मानसिक चिंताएँ और बेचैनी, यहाँ तक कि लगातार निष्क्रियता भी गंभीर थकान का कारण बन सकती है। कई लोग कहते हैं, 'मैं आज बहुत थक गया हूँ!' लेकिन वे अक्सर उस थकान का कारण खोजते समय भ्रमित हो जाते हैं। क्योंकि, जाँच या परीक्षण से पता चला है कि उस थकान के कारण और प्रभाव को बिल्कुल अलग नहीं किया जा सकता है। यानी लगातार निष्क्रियता कभी-कभी चिड़चिड़ापन और थकान का कारण बनती है।

फिर, वह थकान काम में अरुचि का कारण बनती है। रूस में कुछ कारखानों में, यह पाया गया है कि हवा को कृत्रिम रूप से आयनीकृत करके श्रमिकों के स्वास्थ्य और कार्य क्षमता में सुधार हुआ है। वह वातावरण थकान दूर करने में भी काफी मददगार है। बेशक, थकान और थकावट कठिन शारीरिक श्रम, प्रदूषित वातावरण और मानसिक विकारों के कारण नहीं होती है। वह थकान भी विभिन्न रोगों का एक विशेष लक्षण है! थकान का फ्लू, सर्दी और सिरदर्द से गहरा संबंध है। अस्पताल में जब किसी बड़े ऑपरेशन के बाद मरीजों को लंबे समय तक बिस्तर पर पड़े रहना पड़ता है, तो वे भी थक जाते हैं। यह थकान अपक्षयी रोगों का एक ही लक्षण है। शारीरिक थकान वास्तव में मानव शरीर के प्रत्येक ऊतक की थकान का एक उत्पाद है। जब हमारे शरीर के ऊतक कड़ी मेहनत और तीव्र उत्तेजना के कारण किसी भी उत्तेजना का जवाब देने में अस्थायी रूप से असमर्थ हो जाते हैं, तो शरीर में थकान या थकावट के लक्षण दिखाई देते हैं।

श्री संजय बनर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

खुद को कमज़ोर समझना सबसे बड़ा पाप है।
— स्वामी विवेकानन्द

गौतम बुद्ध और विश्व शांति

गौतम बुद्ध मूल रूप से सिद्धार्थ गौतम थे। वे आत्म-खोज और ज्ञान की यात्रा के माध्यम से गौतम बुद्ध बन गए, जिसमें उनके राजसी जीवन का त्याग और आध्यात्मिक सत्य की खोज शामिल थी। दुख और नश्वरता को देखने के बाद, उन्होंने समझ की खोज शुरू की, अंततः बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया।

इस प्रक्रिया पर अधिक विस्तृत नज़र इस प्रकार है- सिद्धार्थ का जन्म एक राजसी परिवार में हुआ था, जो दुख, बुढ़ापे और मृत्यु की वास्तविकताओं से दूर था। उनका सामना एक बीमार व्यक्ति, एक वृद्ध व्यक्ति, एक अंतिम संस्कार जुलूस और एक भीख माँगने वाले साधु से हुआ, जिसने उन्हें जीवन की कठोर वास्तविकताओं से अवगत कराया और उन्हें अपने विशेषाधिकार प्राप्त अस्तित्व पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया। सिद्धार्थ ने अपने राजसी जीवन को त्याग दिया, अपने परिवार और महल को छोड़कर आत्मज्ञान की तलाश में निकल पड़े। उन्होंने विभिन्न तपस्वी प्रथाओं में भाग लिया और आलार कालाम और रुद्रक रामपुत्र नामक ज्ञानी शिक्षकों से दीक्षा ग्रहण की, लेकिन पाया कि इन प्रथाओं से पूर्ण मुक्ति नहीं मिलती। उन्होंने बोधगया में बोधि वृक्ष (एक अंजीर का पेड़) के नीचे ध्यान लगाया, जहाँ उन्होंने अंततः मारा की शक्तियों को हराने के बाद आत्मज्ञान प्राप्त किया, जो सांसारिक इच्छाओं और आसक्तियों का प्रतीक एक राक्षस था। ज्ञान प्राप्ति के बाद, सिद्धार्थ को बुद्ध (जागृत व्यक्ति) के रूप में जाना जाने लगा। उन्होंने दूसरों को ज्ञान प्राप्ति का मार्ग सिखाना शुरू किया, जिसे उन्होंने मध्य मार्ग कहा, जिसमें संतुलन और अतिवाद से बचने पर जोर दिया गया। उन्होंने अपना पहला उपदेश वाराणसी के निकट सारनाथ में दिया और उनकी शिक्षाओं ने बौद्ध धर्म का आधार बनाया।

संक्षेप में, राजकुमार से बुद्ध तक सिद्धार्थ की यात्रा में जीवन में निहित दुख को पहचानना, सांसारिक आसक्तियों का त्याग करना, कठोर आत्म-अनुशासन और ध्यान के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना और मुक्ति के मार्ग का शिक्षक बनना शामिल था। गौतम बुद्ध द्वारा बताए गए पंचशील नामक पाँच सिद्धांत हैं- 1. जीवों की हत्या से बचना - इसका साथ देने वाला गुण दया और करुणा है। 2. चोरी से बचना - इसका साथ देने वाला गुण उदारता और त्याग हैं। 3. यौन दुराचार से बचना - इसका साथ देने वाला गुण संतोष और ईमानदारी के प्रति सम्मान है। 4. झूठ बोलने से बचना - इसका

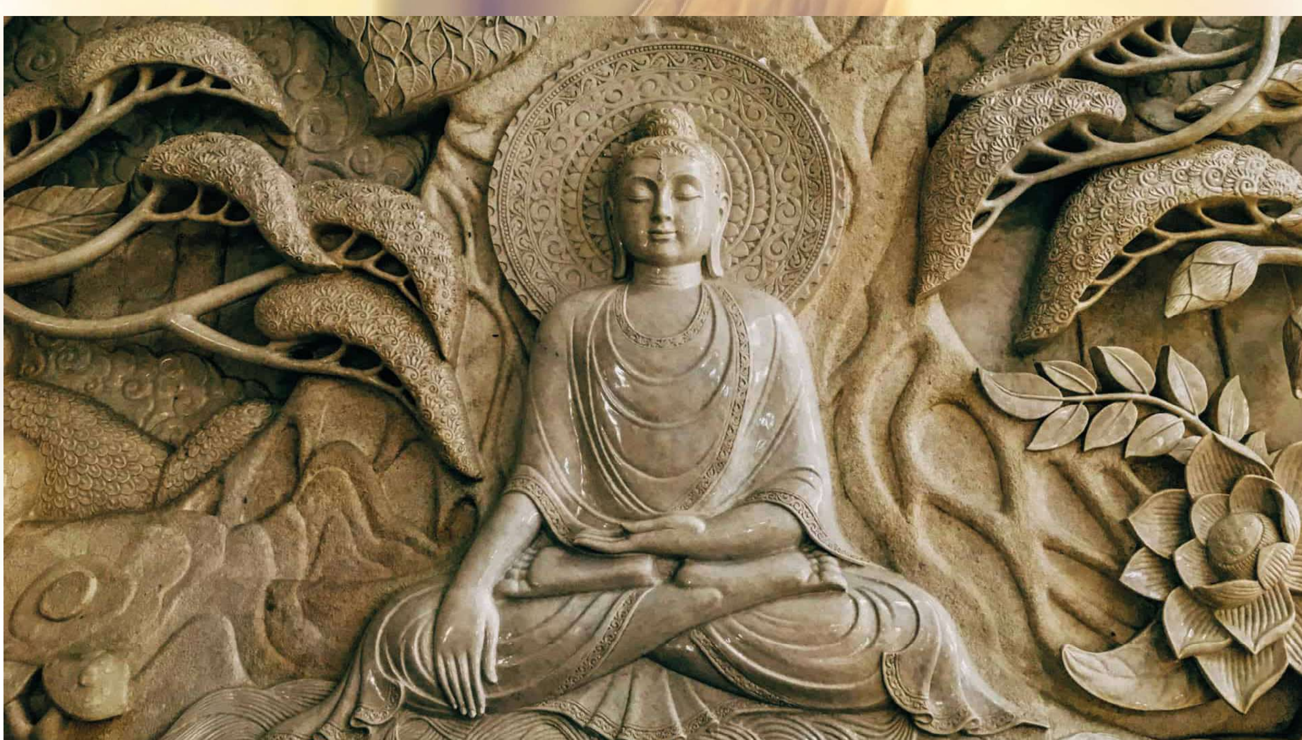

साथ देने वाला गुण ईमानदार और भरोसेमंद होना है। 5. मन को धुंधला करने वाले नशीले पदार्थों से बचना।

गौतम बुद्ध के सिद्धांत चार आर्य सत्यों पर आधारित हैं – दुख मौजूद है, दुख का कारण, दुख का अंत, तथा दुख के अंत का मार्ग। तीन विष, जिन्हें दुख का मूल कारण और आध्यात्मिक मुक्ति में बाधा माना जाता है, वे हैं लालच, घृणा और अज्ञानता। दुःख-निरोध मार्ग को समझाने के लिए गौतम बुद्ध ने अष्टाँगिक मार्ग को प्रतिपादित किया जिसे अष्टमार्ग भी कहा जाता है, वे हैं सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति तथा सम्यक् समाधि। बौद्ध धर्म के मूल तत्व बुद्ध की शिक्षाएँ हैं, जिसमें दुख, दुख की उत्पत्ति तथा दुख को समाप्त करने का मार्ग शामिल है।

बुद्ध की शिक्षाएँ सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा, करुणा और सहानुभूति पर जोर देती है। बुद्ध की नश्वरता की शिक्षाएँ चीजों की क्षणभंगुर प्रकृति पर जोर देती है और परिवर्तन को स्वीकार करने और अपनाने की आवश्यकता पर जोर देती हैं। बुद्ध की सचेतनता की शिक्षाएँ वर्तमान में मौजूद रहना और अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों के बारे में जागरूकता विकसित करना है। बुद्ध की शिक्षाएँ हिंसा और घृणा को पूरी तरह से अस्वीकार करने का काम करती है, जो करुणा और शांति के साथ आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। बुद्ध ने दुःख-निरोध के आठ साधन बताए, जिन्हें अष्ट मार्ग भी कहा जाता है, तनाव और चिंता को कम करता है, मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करता है, आत्म-जागरूकता बढ़ाता है, सहानुभूति विकसित करता है तथा आध्यात्मिक विकास का अनुभव करने में मदद करता है। बौद्ध धर्म सुखमय जीवन बिताने का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः हम कह सकते हैं कि बौद्ध धर्म मन से शांति का संचार करके उसका बाहर प्रसारण करना चाहता है। राजनैतिक स्तर पर बौद्ध धर्म किसी पक्ष में नहीं पड़ता है। उसके पास मैत्री का ही सबसे बड़ा बल है, जो तटस्थ है।

वहीं दूसरी ओर देखा जाए तो आतंकवाद और युद्ध का उद्देश्य देश की जनता समझती है या नहीं। आप किसे हरा रहे है – किसी नेता को या देश की जनता को? आप किसे अपना दुश्मन समझ रहे है– देश के नेता को या देश की जनता को? जीतने और न जीतने पर आपको क्या मिलेगा? दूसरों को आतंकित करने से आपको क्या मिलेगा? दूसरों की जगह और निजता का अतिक्रमण करने की क्या जरूरत है?

कई मामलों में यह समझा जाता है कि मानव अपने लाभ और व्यापार के उद्देश्य से दूसरों की अंतरात्मा की आवाज को दबाते है। लोग क्यों स्वार्थी हैं? हम क्यों हथियार और गोला-बारूद बना रहे हैं और उन्हें बेच और खरीद रहे हैं? हर हथियार और गोला-बारूद लोगों, लोगों के आवास, अस्पतालों, राजमार्गों, स्कूल भवनों आदि को नष्ट करने के लिए तैयार किया जाता है, जिससे हवा, पानी, धरती और पर्यावरण प्रदूषित होता है। इसका मतलब लोगों को जहर देना और मारना है। जो लोग यह दावा करते हुए युद्ध में जाते हैं कि वे राष्ट्र की सेवा कर रहे है, वे गलत हैं। वे खुद को सर्वशक्तिमान समझते है क्योंकि उन्हें राष्ट्र के लोगों ने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना है। उनके पास सेना को नियंत्रित करने और सेना को किसी भी कम शक्तिशाली देश के खिलाफ युद्ध में शामिल होने का निर्देश देने की पूरी शक्ति है। वे एक राष्ट्र के मुखिया से लड़ना चाहते है लेकिन वे इतने अंधे है कि वे यह नहीं समझते कि लोग दोनों तरफ से मरेंगे।

ऐसा केवल भारत और पाकिस्तान के बीच ही नहीं, बल्कि इजरायल-फिलिस्तीन और गाजा-इजरायल और रूस और यूक्रेन के बीच भी युद्ध के दौरान हुआ है। इन युद्धों के दौरान दुनिया भर के लोग किसी न किसी तरह से प्रभावित होते है। इससे पहले प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध लड़े जा चुके हैं। कई करोड़ लोग मारे गए और बहुत सारी संपत्तियाँ नष्ट हो गई। युद्धों के अध्ययन से यह सच्चाई सामने आती है कि राज्य के मुखिया के अत्याचार, आत्म-सम्मान और अहंकार के कारण हजारों निर्दोष लोग मारे जाते हैं। हमने महान कलिंग युद्ध से सबक नहीं लिया, जिसमें नदी का जल लोगों के खून से रंग गई थी। राजा अशोक ने युद्ध करने के लिए विलाप किया और युद्ध के परिणामों को महसूस किया और महसूस किया कि वह एक मृत व्यक्ति को जीवन नहीं दे सकता। तब उन्होंने उसे चंडाशोक से धर्माशोक में परिवर्तित कर दिया और बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया और दुनिया में शांति स्थापित करने के उद्देश्य से बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

आजकल देश आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नहीं बल्कि खुद को शक्तिशाली बनाने के लिए लड़ाकू उपकरणों और हथियारों को इकट्ठा करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। हथियारों का व्यापार देशों के बीच मुख्य व्यवसाय रहा है। हर देश अपने बजट का कुछ हिस्सा रक्षा उद्देश्य के लिए रखता है। हम रक्षा उद्देश्य के लिए क्यों धन दे रहे हैं? रक्षा उद्देश्य के लिए धन खर्च करने की

क्या आवश्यकता है? क्योंकि हम पर आक्रमण और हमारी भूमि पर अतिक्रमण का खतरा बना रहता है। इसलिए पड़ोसी देशों के साथ हमारे अच्छे संबंध नहीं है, जिसके कई कारण हो सकते हैं। भारत का पड़ोसी देश पाकिस्तान हमेशा अपनी अर्थव्यवस्था को सुधारने की कोशिश करने के बजाय भारत को परेशान करने की कोशिश करता है। रूस एक साल से अधिक समय से यूक्रेन पर हमला कर रहा है। दुनिया देख सकती है कि यूक्रेन की संपत्ति किस तरह तबाह हो रही है और लोग किस तरह से वहां रह रहे है या देश छोड़कर दूसरे देशों में शरण ले रहे हैं। आम लोगों का क्या दोष है। क्या यह है कि उन्होंने गलत राष्ट्राध्यक्ष को चुना है। इसके पीछे कई कारण हो सकता है, लेकिन वह कारण युद्ध लड़ना या तनाव पैदा करना हो सकता है। इस युद्ध में दुनिया के लगभग सभी देश तनाव में हैं और किसी न किसी तरह से इसमें शामिल हैं और प्रभावित हैं।

हाल ही में श्रीलंका और बांग्लादेश में राजनीतिक अशांति रही है। दोनों ही मामलों में संघर्ष का मूल सत्ता की भूख है जो नागरिकों के लिए असहनीय है। यह देखा गया है कि सत्ता की भूख राजनीतिक नेताओं को गलत दिशा में ले जाती है। इस कारण वे झूठे वादे करके और अपने वादे पूरे न करके लोगों को धोखा देने की कोशिश करते हैं। वे अपनी इच्छा पूरी करने के लिए अनैतिक और अवैध काम करते हैं। इससे लोगों में असंतोष और अशांति पैदा होती है और आपसी झगड़े होते हैं। भारत में विभिन्न धर्मों, जातियों, समुदायों और विभिन्न आस्थाओं के बीच असहिष्णुता के कारण लोगों के बीच संघर्ष पैदा हो रहा है। कुछ झूठे प्रचार के कारण भी तनाव और संघर्ष पैदा हो रहा है। ऐसा देखा गया है कि यह सही न सोचने और सच न बोलने के कारण होता है।

निष्कर्ष यह निकलता है कि झगड़ना, लड़ना, दूसरों को परेशान करना, लोगों में अशांति पैदा करना, युद्ध भड़काना, झूठे वादे करके लोगों को धोखा देना, दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करना, अपने गलत कामों को छिपाने के लिए झूठा प्रचार करना आदि से केवल सामाजिक द्वेष बढ़ता है। इसलिए मुझे आश्चर्य होता है कि उन्होंने ये कुकर्म कहां से सीखे हैं। उन्हें सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा, करुणा और सहानुभूति की शिक्षा क्यों नहीं दी गई है। बुद्ध ने जीवन की नश्वरता के बारे में ठीक ही कहा था। हम जर्मनी के चांसलर हिटलर और भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से क्या सीखते हैं। क्या हम यह तय नहीं कर पा रहे है कि हमें किसका अनुसरण करना चाहिए। हम यह क्यों नहीं समझते कि किसे कैसे याद किया जाता है?

शांति के प्रति समर्पण के लिए पहचाने जाने वाले कई व्यक्तित्व हैं महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, जॉन लेनन, अल्बर्ट आइंस्टीन, जेन एडम्स, डोरोथी डे, मलाला यूसुफजई, सोक्रेटिस सुकरात, नेल्सन मंडेला, कन्फ्यूशियस, जीसस क्राइस्ट, बेंजामिन फ्रैंकलिन, और दुनिया में बहुत से शांति प्रेमी और दार्शनिक पैदा हुए हैं। उन्होंने समाज को कई अच्छे सबक सिखाए हैं। फिर नेताओं को उन अच्छे सबकों के बारे में क्यों नहीं पता।

इसलिए हर जगह युद्ध जैसी स्थिति देखकर मुझे भगवान गौतम बुद्ध की यह बात याद आती है। उनके बताए मार्ग पर चलकर हम दुखों से मुक्ति पा सकते है। जीवन की नश्वरता को समझकर हम मतभेदों और दुर्भावनाओं से मुक्ति पा सकते है। लोगों के बीच प्रेम पैदा करके दुनिया में शांति स्थापित की जा सकती है। इसलिए बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करने से निश्चित रूप से युद्ध, संघर्ष, दुर्व्यवहार की इच्छा समाप्त हो जाएगी और जिसके कारण दुनिया में शांति कायम होगी।

श्री करुणाकर साहू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दिल्ली का बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल)

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि इस वर्ष (वर्ष 2025) राजभाषा विभाग की स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूरे हुए हैं, तद्नुसार राजभाषा विभाग की स्थापना के उपलक्ष्य में राजभाषा विभाग द्वारा 26 जून 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में "राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह" का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भारत के केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री बंडी संजय कुमार, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

आप सभी मन में सोच रहे होंगे कि इस लेख का शीर्षक लोटस टेम्पल है तो फिर राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह का विवरण क्यों? दरअसल किसी भी जगह भ्रमण करने अथवा घूमने का कोई न कोई आधार होता ही है। उसी तरह इस वर्ष नई दिल्ली स्थित बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल) दर्शन करने का आधार राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह बना। इस भव्य सम्मेलन में शामिल होने हेतु मुझे दिल्ली जाने और वहां जाकर दिल्ली शहर को देखने, जानने का अवसर मिला। वैसे तो कई बार मुझे दिल्ली जाने का अवसर मिला है, बचपन में भी अपने माता-पिता के साथ मैं दिल्ली घूम आया हूं। पर इस बार की दिल्ली कुछ अलग सी जान पड़ी। तो फिर क्या झट से हम लोग (मैं अपने परिवार के साथ) कोलकाता से राजधानी एक्सप्रेस पर सवार होकर अगले दिन सुबह 11.00 बजे तक नई दिल्ली पहुंच गए। इस समय दिल्ली में मौसम बहुत ही खुशगवार लग रहा था। न तो ज्यादा गरम और न ही ज्यादा ठंडी,

शायद यह जून माह का अंत और सावन के आगमन का समय था। हम लोग एक ऑटो पर सवार होकर न्यू दिल्ली स्टेशन से अपने गंतव्य स्थल की ओर चले गये।

दिल्ली शहर इतना बड़ा है कि एक दिन में इसे देख पाना तो असंभव ही है, फिर भी हमने मन में घूमने की इच्छाओं को प्राथमिकता देते हुए एक दिन में ही दिल्ली घूमने का विचार किया। इस बार दिल्ली की चौड़ी-चौड़ी सड़कें देखकर मेरा मन खुश हो गया। कोलकाता में कुछ एक जगह को छोड़कर ऐसी चौड़ी सड़कें देखने को कम मिलती हैं, चूंकि मैं कोलकाता में रहता हूं। दिल्ली में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली थी और फ्लाईओवर का तो जाल सा बिछा हुआ था। इस बार की सड़कें काफी साफ-सुथरी और दूर-दूर तक अच्छी खासी हरियाली भी थी। शायद दिल्ली को पुन: देश का दिल बनाने का अप्रतिम प्रयास परिलक्षित हो रहा है। किसी भी शहर या महानगर में कुछ ऐसी चीजें हैं, जिस कारण वह सुव्यवस्थित बनती है। उसमें आवास, स्वच्छता, पार्क, यातायात इत्यादि शामिल होती हैं और शायद दिल्ली महानगर भी इस विकास की ओर क्रमश: अग्रसर है। खैर हम लोग सबसे पहले इंडिया गेट, जंतर-मंतर, कुतुबमिनार होते हुए बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल) पहुंच गए। यहाँ काफी भीड़ थी और मंदिर की भव्यता दूर से ही दिख रही थी। वैसे मैं यहां एक बात कहना चाहता हूँ कि जब भी हम मंदिर शब्द सुनते हैं तो हमारे मन में अनायास ही एक ऐसे मंदिर की छवि बन जाती है, जहां भगवान की अलग-अलग मूर्तियां हों और पूरे धर्म-कर्म एवं श्रद्धा भाव से पूजा-पाठ होती हो। हालांकि भारत देश में एक ऐसा मंदिर भी है, जहां एक भी मूर्ति नहीं है, और वह है नई दिल्ली के बहापुर, कालकाजी स्थित बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल)। नई दिल्ली स्थित बहाई उपासना मन्दिर के शिल्पकला की प्रेरणा कमल के फूल से मिली है, जोकि एक अत्यन्त सुन्दर फूल है और ऐसी शुद्धता का प्रतीक है जो भारत के धर्मों और उपासना के अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। भारत का राष्ट्रीय पुष्प माना जाने वाला कमल दिव्य पुष्पों में से एक है। संस्कृत में कमल को कमला, पद्म आदि नामों से जाना जाता है। कमल के अन्य नाम हैं कंज, निरजा, अंबुजा, जलोरुहा, सरिसुरुहा, पद्मासन, कमलासन, पुंडरीक आदि। कमल जल को अलंकृत करता है, इसलिए इसे संस्कृत में कमलम भी कहा जाता है। कमलम शब्द की उत्पत्ति "कम्" धातु से हुई है जिसका अर्थ है जल और "अलम्" प्रत्यय का अर्थ है अलंकृत करना।

कमल फूल की विशेषता है कि ये केवल उथले पानी में उगते हैं और इनके तने लंबे, हवादार और चमकीले और सुगंधित होते हैं। 4-10 इंच व्यास वाले ये फूल पानी से ऊपर उठते हैं। शाम को फूल बंद हो जाता है और रात में पानी में वापस चला जाता है। सुबह सूरज की पहली किरण के साथ यह फिर से (अपनी पंखुड़ियाँ खोलकर) बाहर निकलता है, जो पुनर्जन्म का प्रतीक है। प्रत्येक फूल 2-5 दिनों तक रहता है और समय के साथ गहरा होता जाता है। प्रत्येक फूल में पंखुड़ियों की संख्या लगभग 23-50 तक होती है। यह फूल विभिन्न रंगों और आकारों में खिलता है। कमल पाँच रंगों में उपलब्ध है - लाल, गुलाबी, सफ़ेद, नीला और बैंगनी। प्रत्येक रंग किसी न किसी गुण का प्रतीक है। यहां मैं सफेद कमल के गुण के विषय में कहना चाहूँगा, चूंकि बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल) का रंग भी बाहर से पूर्णत: सफेद है।

सफेद: सफेद कमल पवित्रता, ज्ञान और सृजन का प्रतीक है। भगवान ब्रह्मा और देवी सरस्वती जी को सफेद कमल पर विराजमान देखा जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कमल समृद्धि, पवित्रता, दिव्यता, ज्ञान, शिक्षा, दिव्य जन्म, सृजन, सौंदर्य, वैराग्य, उर्वरता, आध्यात्मिक विकास और आत्मज्ञान का प्रतीक है। कमल के फूल की उत्पत्ति कीचड़ में होने के बावजूद भी पवित्रता और पुनरुत्थान का प्रतीक है। इसकी तुलना उस आत्मा से भी की जाती है जो आत्मज्ञान के मार्ग पर अनेक कष्टों और कठिनाइयों से गुज़रती है। नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने कमल पुष्प का सबसे अच्छा वर्णन कुछ इस प्रकार किया है- "भारतीय संस्कृति सौ पंखुड़ियों वाले एक खिले हुए कमल के समान है, जिसकी प्रत्येक पंखुड़ी एक क्षेत्रीय भाषा और उसके साहित्य का प्रतिनिधित्व करती है।"

अत: मुझे लगता है कि दिल्ली का सफेद बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल) जो कि पूर्णत: कमलाकार है, वह कमल पुष्प के समान पवित्रता, दिव्यता, सौंदर्य, आध्यात्मिक विकास और आत्मज्ञान का प्रतीक है।

भारतीय उप-महाद्वीप का यह बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल) दुनिया के विभिन्न भागों में खड़े आठ मंदिरों में सबसे नया है, इनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट बनावट और पहचान है। बहाई उपासना मन्दिर जल के नौ बड़े तालाबों से घिरा हुआ है जो न केवल

भवन की सुन्दरता को बढ़ाते हैं अपितु प्रार्थना हॉल को प्राकृतिक रूप से ठण्डा रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। मुख्य भवन से सटा हुआ एक सहायक भवन है जिसमें कार्यालय, पुस्तकालय, सभा भवन और तालाब के किनारे की प्रदर्शनी है। बहाई उपासना मन्दिरों की सामान्य विशेषता यह है कि इनके नौ किनारे होते हैं। नौ सबसे बड़ा अंक है और यह व्यापकता, एकमेवता और एकता का प्रतीक है।

नई दिल्ली के बहापुर, कालकाजी स्थित बहाई उपासना मंदिर का दर्शन कर बाहर आते समय वहां स्थित गाईड/मंदिर सेवकों के माध्यम से पता चला कि बहाई उपासना मंदिर के भीतर केवल बहाई धर्म के और पूर्व के अवतारों द्वारा दिए गए पवित्र लेखों को पढ़ा या गाया जाता है। बाकी के समय में, शान्तिपूर्वक प्रार्थना और ध्यान के लिए सभी का स्वागत किया जाता है। प्रार्थना हाल में किसी तरह के प्रवचन या भाषण की अनुमति नहीं है न ही किसी तरह का अनुष्ठान होता है। बहाई लोग बाब को ईश्वर का एक स्वतंत्र संदेशवाहक और बहाउल्लाह (अरबी में "ईश्वर की महिमा") का अग्रदूत मानते हैं, जो बहाई धर्म के संस्थापक हैं।

बहाई उपासना मंदिर (लोटस टेम्पल) से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं–

- इस मंदिर की ऊँचाई जमीन से लगभग 34.27 मीटर है।
- इस मंदिर में लगभग 1300 लोगों के बैठने की व्यवस्था है।
- कमलाकार बहाई उपासना मंदिर में पंखुड़ियों की संख्या 27 है।
- पंखुड़ियाँ सफेद कंक्रीट से बनी हैं। पंखुड़ियों के बाहर की तरफ सफेद ग्रीक संगमरमर जड़े हुए हैं, जो कि ग्रीस के माउंट पेंटेली से लाया गया है।
- यह मंदिर चारों ओर से कुल 9 तालाबों से घिरा हुआ है।
- इस भव्य मंदिर के वास्तुकार प्रसिद्ध पार्शियन फरीबुर्ज़ साहबा हैं।
- 21 अप्रैल 1980 को इसका निर्माण आरंभ हुआ और 24 दिसंबर, 1986 को ईश्वर की एकता, धर्मों की एकता और मानवजाति की एकता को समर्पित, इसका औपचारिक उद्घाटन हुआ।

इस प्रकार अंत में मैं कहना चाहता हूँ कि हमारी यह दिल्ली की यात्रा अविस्मरणीय रही। यह शहर इतिहास, संस्कृति और आधुनिकता का एक अनूठा मिश्रण पेश करता है। इंडिया गेट और कुतुब मीनार जैसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा करके हम अपने भारतीय इतिहास और वास्तुकला की समृद्ध विरासत को जान और समझ सकते हैं। अंत में भारत में भ्रमण का आनंद लेने और अतीत की विरासत को जानने का सबसे आसान और सटीक माध्यम है यात्रा करना।

श्री राजीव दास
वरिष्ठ अनुवादक

संगीत - अनुपम अनुभूति

किसी देश की सभ्यता, संस्कृति की पहचान वहाँ की कला होती है। भारतवर्ष के कोने-कोने में अनगिनत कलाओं का दिग्दर्शन, यहाँ की विरासत और पहचान है। इनमें ललित कलाओं को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। पाँच ललित कलाओं में से एक है-संगीत। संगीत का अर्थ है-नृत्य, वाद्य और गीत का समाहार अर्थात् जिसमें गायन, वादन और नृत्य का समावेश हो वह संगीत कला है। भारतीय संगीत में नाद और स्वरों का अद्भुत मिश्रण है। संगीत-अध्येता इसकी निरंतर साधना करने के बाद प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। राग को निश्चित ताल एवं लय में निबद्ध कर इसे शास्त्रीय रूप प्रदान किया गया है। भारतवर्ष की विशिष्ट परंपरा रही है कि किसी भी विधा के लिए देवी-देवता का आश्रय लिया जाता है। नटराज शिव ने चौदह बार डमरू निनादित कर हमारे संगीत में ताण्डव नृत्य का अमूल्य दान दिया है। देवी पार्वती ने लास्य नृत्य का उपदान देकर इसे लोकरंजित कर दिया। पुनः वाग्देवी माँ सरस्वती का आविर्भाव हुआ। इनके हाथों में वीणा और पुस्तक क्रमशः संगीत एवं ज्ञान का प्रतीक है। मान्यता है कि सृष्टि की रचना के उपरांत ब्रह्माण्ड में कोई भी ध्वनि या स्वर नहीं गूंजता था। भगवती सरस्वती के हाथों की वीणा की झंकार से चतुर्दिक स्वर व्याप्त हो गया और विभिन्न ध्वनियों की अलग-अलग पहचान बनी।

प्राचीनतम शाश्वत ज्ञान-स्रोत वेदों के रूप में हमारे समक्ष प्रकट हुआ। चार वेदों में सामवेद ऋचा-गायन से संबंध रखता है। यह गायन जिस शैली में की जाती है उसे ध्रुपद-शैली कहते हैं। भारतीय संगीत में सा, रे, गा, मा, पा आदि मात्र बारह स्वर हैं। इनमें सा एवं पा दो अचल स्वर हैं अर्थात् इसकी ध्वनि तीव्र और कोमल में विभाजित न होकर सदैव एकरूप रहती है। शेष सभी स्वरों की तीव्र और कोमल दो ध्वनियां हैं। इन्हीं बारह स्वरों के आधार पर छह राग बनाए गए। प्रत्येक राग की छह रागिनियां हैं। इस तरह, भारतीय संगीत में छह राग और छत्तीस रागिनियों की सहायता से अनेक राग-रागिनी तथा स्वर-लिपियों को तैयार किया गया। कालांतर में भारतीय संगीत उत्तर-दक्षिण की दो धाराओं में विकसित हुई और संपूर्ण देश संगीत लहरी में डूबने-उतरने लगा।

भारतीय संगीत की आध्यात्मिक शक्तियों के कारण इसे भारतवासियों ने ईश्वर-प्राप्ति का सुगम साधन बनाया और इसकी पहुँच मंदिरों तक हो गई। ईश-प्राप्ति का उदाहरण है- सूरदास। इन्होंने एक पद लिखा है- हाथ छुड़ाए जात हो, निर्बल जानि मोहि। हृदय से जब जाओगे तो जानूँगा तोही। - भजन गाते हुए कवि को अनुभूति हुई कि बाल रूप गोपाल उनके सामने बैठे हैं। सूरदास ने अनायास श्रीकृष्ण का हाथ पकड़ लिया और कृष्ण हाथ छुड़ाने लगे। मान्यता है कि श्रीकृष्ण ने उन्हें अपने बाल रूप का दर्शन कराया था।

संगीत परंपराओं ने अपने पैर मंदिरों से बाहर पसारना शुरू किया और राजे-राजवाड़े एवं अमीर-उमरां की बैठकखाने तक इसकी धमक सुनाई देने लगी। संगीत विशारदों को राज्याश्रय प्राप्त होने लगा और अनेक संगीत घराने विकसित होने लगे। प्रत्येक घराने की अपनी-अपनी गायन शैली और अलग पहचान बनी। इन घरानों में प्रमुख हैं- दिल्ली घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना, राजस्थान घराना, बेतिया (मल्लिक) घराना (बिहार) आदि। बेतिया घराने की कुछ खास बातें आपके सामने प्रस्तुत हैं। किसी राजकर्मी ने बादशाह अकबर की कान भरकर संगीत सम्राट तानसेन को ध्रुपद गाने का आदेश दिलवाया। तानसेन ने इस फन में अपनी अनभिज्ञता स्पष्ट की। भारतीय संगीत का इतिहास साक्षी है कि ध्रुपद गायन सीखने के लिए स्वयं संगीत सम्राट् तानसेन को बिहार आना पड़ा। उन्होंने बेतिया घराने के जिस गुरू से ध्रुपद गायकी की शिक्षा ली उन्हें ग्वालियर में बसा दिया। आज ग्वालियर का ध्रुपद घराना विख्यात है। कालान्तर में बंगाल के विष्णुपुर जागीरदार के पुत्र को ध्रुपद सीखने की धुन सवार हुई। वे भी बेतिया आए और जिस गुरू से संगीत सीखा उसे विष्णुपुर में बसा दिया। बंगाल के विष्णुपुर ध्रुपद घराने ने भी ख्याति अर्जित कर ली। दुर्भाग्यवश गुरू पदवी पर आसीन यह बेतिया घराना जहाँ का तहाँ रह गया। आज भी इनकी ख्याति कम नहीं हुई है किन्तु वर्तमान में कुछ गिने-चुने गुरू ही इस घराने में शेष हैं। आज आवश्यकता है इस घराने को संरक्षण प्रदान करने की ताकि यह अमूल्य धरोहर अपनी अस्मिता बचा सके।

सुरों में इतनी शक्ति है कि इससे चिकित्सा भी संभव है। आधुनिक चिकित्सा-क्षेत्र की गवेषणा इस क्षेत्र में जारी है। तानसेन

के संबंध में किंवदंती है कि दीपक राग गाने से उनके शरीर का तापमान इतना बढ़ गया कि वे अचेत हो गए। उन्हें मृतप्राय अवस्था में उपचार हेतु अन्यत्र ले जाया जा रहा था। किसी गाँव के कुएं के पास उन्हें रखा गया। कौतुहलवश कुछ पनिहारिन वहाँ आ पहुँचीं और उत्सुकतावश पूछा कि इन्हें क्या हुआ है? कहारों से पूरी कहानी सुनने के बाद दो पनिहारिनों ने तानसेन को खुले स्थान पर रखने का अनुरोध किया। दोनों ने समवेत स्वर में मेघ मल्हार गायन प्रारंभ किया। कुछ देर बाद प्राकृतिक वर्षा होने लगी, तानसेन के निश्चेष्ट शरीर पर बूंदों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे स्वस्थ होकर उठ बैठे। पनिहारिनों के नाम तानी एवं तोम बताया जाता है। महान गायक पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ने भी जर्मनी के राजा को अपने गायन से निद्रा देवी की गोद में सुला दिया था। जबकि वे महीनों से न सो पाए थे। उपस्थित तत्कालीन सभी चिकित्सक यह चमत्कार देखकर स्तब्ध थे।

शास्त्रीय संगीत का प्रभाव चराचर जगत पर समान रूप से पड़ता है। कृष्ण की मुरली की धुन पर गोपियों का बेसुध होकर दौड़ना, राग विहाग के प्रभाव से वन-पशु हिरण का दौड़कर वहाँ उपस्थित होना, दीपक राग के प्रभाव से दीपक का जलना और मेघ-मल्हार के गायन से मेघों का बरसना अनायास ही अद्भुत शब्द निःसृत करता है। इस क्षेत्र के अनेकानेक महान् गायक, वादक एवं नर्तकों ने विश्व भर में इसे प्रसारित करने का स्तुत्य कार्य किया है। यही कारण है कि विभिन्न देशों की सीमाओं को तोड़कर शास्त्रीय संगीत जगतव्यापि हो गया है। इसी कारण आज अनेक देशों से संगीत की शिक्षा ग्रहण करने भारी संख्या में विदेशी भी भारत की ओर अपना रूख कर रहे हैं।

यद्यपि मुगलकाल में ठुमरी, टप्पा, दादरा, तराना, गजल आदि विभिन्न गायन शैली का विकास हुआ और इसमें बदलाव भी आया। कई नए-नए वाद्य यंत्रों का अविष्कार भी हुआ। इतना ही नहीं, इस युग में नृत्य की भी अनेक शैलियों ने विस्तार पाया। इस काल में भी संगीत का उत्कृष्ट गुण कर्णप्रियता यथावत बनी रही। दुःख की बात है कि आध्यात्मिक चेतनापूर्ण प्राचीन भारतीय संगीत जहाँ मन और मस्तिष्क को शांति प्रदान करने के साथ-साथ अपने माधुर्य गुण से भरापूरा था वहीं इसके स्थान पर जो संगीत आज विकसित हो रहा है उसका मन-मस्तिष्क एवं हृदय पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है- स्वयं अनुभव करने की बात है। यह संगीत तालबद्ध अवश्य है पर अटपटा स्वर, बोल और कर्कश ध्वनियों का मेल मात्र उत्तेजना ही प्रदान कर पा रहा है, शांति नहीं। आने वाले समय में इसका प्रभाव हृदय गति के लिए कितना घातक होगा यह तो समय ही बताएगा। आवश्यकता है अपनी धरोहर को सहेजने एवं पुष्पित पल्लवित करने की। तब भर्तृहरि की उक्ति- साहित्य संगीत कला विहीनः, साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनः- में निहित संगीत प्रेम साकार हो पाएगा और हम अपने आपको कलंकित होने से बचा सकेंगे तथा संगीत का सम विषम नहीं होगा।

श्री अमित कुमार साह,
कनिष्ठ अनुवादक

हमारे जीवन में मोबाइल फ़ोन का दखल

आज के डिजिटल युग में मोबाइल फ़ोन हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। यह सच है कि मोबाइल फ़ोन ने हमारे संवाद करने, जानकारियाँ प्राप्त करने और हमारी दिनचर्या को संचालित करने के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं परंतु हमारे जीवन में मोबाइल के बढ़ते दखल ने हमारे रिश्तों, मानसिक स्वास्थ्य, उत्पादकता इत्यादि पर नकरात्मक प्रभाव भी डाला है ।

मोबाइल ने निस्संदेह हमारे जीवन को अत्यधिक आसान बना दिया है । ये त्वरित जानकारियाँ प्रदान करने के साथ साथ हमें हमारे प्रियजनों से जुड़े रहने में सक्षम बनाता है, ऑनलाइन शॉपिंग और मोबाइल बैंकिंग जैसी कई सुविधाएँ प्रदान करता है। मोबाइल से हम अपने जीवन के पलों को कैद करके तुरंत साझा कर सकते हैं और वर्तमान में घट रही घटनाओं से भी तुरंत अवगत होते हैं। निस्संदेह मोबाइल ने मानव जीवन को काफी सरलीकृत कर दिया है, परंतु मोबाइल के सकरात्मक गुणों के बावजूद, हमारे जीवन में इसके दखल के कई नकारात्मक परिणाम भी हैं, जैसे –

1. **मोबाइल की लत लगना:** मोबाइल की लत लग सकती है और इसके अत्यधिक उपयोग से कई नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं, जिनमें एकाग्रता में कमी, तनाव में वृद्धि और उत्पादकता में कमी आदि शामिल हैं।
2. **सामाजिक अलगाव:** मोबाइल हमें दूसरों से जोड़ते तो हैं, लेकिन ये सामाजिक अलगाव भी पैदा करते हैं। मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से आमने-सामने का संचार कम हो जाता है जिससे अकेलापन और अलगाव की भावनाएँ बढ़ती हैं।

3. **मानसिक स्वास्थ्य पर नकरात्मक प्रभाव :** मोबाइल का अत्यधिक उपयोग, चिंता, तनाव और अन्य मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को बढ़ावा देता है।
4. **नींद में खलल:** स्क्रीन के संपर्क में लगातार रहने और मोबाइल से लगातार आने वाली सूचनाओं से स्लीप पैटर्न बिगड़ जाता है, जिससे थकान, चिड़चिड़ापन और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।
5. **उत्पादकता में कमी:** मोबाइल काफ़ी हद तक ध्यान भटकाता है, हमारी उत्पादकता को कम करता है और दैनिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की हमारी क्षमता को नकरात्मक रूप से प्रभावित करता है।

मोबाइल ने दूसरों के साथ बातचीत करने के हमारे तौर तरीके को भी बदल दिया है। हालाँकि ये जुड़ाव के अवसर प्रदान करते हैं, लेकिन मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से आमने-सामने की बातचीत धीरे धीरे कम होती जा रही है जिससे मानवीय रिश्तों में प्रगाढ़ आत्मीयता कम होते जा रही है । माता-पिता द्वारा मोबाइल का अत्यधिक उपयोग बच्चों की उपेक्षा का कारण बन सकता है,

जिससे माता-पिता तथा बच्चों के अंतर्वैयक्तिक संबंध खराब हो सकते हैं और बच्चे के विकास पर इसका नकारात्मक असर पड़ सकता है। साथ ही अल्प आयु में ही मोबाइल की लत लग जाने से बच्चों से उनके बचपन की मासूमियत छीन जाती है तथा बच्चों के स्क्रीन टाइम को यदि माता-पिता नियंत्रित नहीं कर पाए तो बच्चों की आँखों पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

मोबाइल के उपयोग के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए, मोबाइल के इस्तेमाल की अच्छी आदतें विकसित करना ज़रूरी है, जैसे मोबाइल के इस्तेमाल के लिए समय सीमा निर्धारित करना, स्क्रीन-मुक्त क्षेत्र निर्धारित करना आदि। मोबाइल के इस्तेमाल के प्रति सचेत रहना चाहिए , यह पहचानना जरूरी है कि यह कब मानवीय संबंधों, हमारी उत्पादकता या मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डाल रहा है। ऐसे ऐप्स का इस्तेमाल करना चाहिए जो मोबाइल के स्वस्थ इस्तेमाल को बढ़ावा देते हैं जैसे कि स्क्रीन टाइम ट्रैक करने वाले ऐप्स। आमने-सामने की बातचीत के लिए समय निकालना चाहिए तथा सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। मोबाइल के इस्तेमाल में संतुलन बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए ताकि यह हमारे अमूल्य समय को नष्ट न कर पाए।

हमारे जीवन में मोबाइल का दखल एक जटिल समस्या है लेकिन हम इसके स्वस्थ उपयोग करने संबंधी आदतें विकसित कर, सीमाएँ निर्धारित कर एवं आमने-सामने की बातचीत को प्राथमिकता देकर इसके नकारात्मक परिणामों से अपने जीवन एवं रिश्तों को बचा सकते हैं।

श्री वसीम मिन्हास,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

युवा, मानसिक स्वास्थ्य: बहुआयामी दृष्टिकोण और सुधार की राह

मानसिक स्वास्थ्य हमारे सोच, भावना और व्यवहार को संतुलित रखने की शक्ति प्रदान करता है, जो जीवन के हर क्षेत्र में हमारी सफलता और खुशहाली का आधार है। भारत में यह विषय लंबे समय तक उपेक्षित रहा, और युवाओं के लिए यह समस्या और भी जटिल साबित हो रही है। किशोरावस्था से वयस्क बनने की यात्रा में शारीरिक, भावनात्मक, शैक्षिक और सामाजिक बदलाव आते हैं। माता-पिता, शिक्षक, समाज और अपने आदर्शों के बीच फँसे युवा कई बार घुटन महसूस करते हैं। आँसू छुपाकर मुस्कुराना उनकी मजबूरी बन जाती है, लेकिन अंदर ही अंदर टूटता हुआ मन कभी अचानक हार मानकर आत्महत्या, नशे या गहरे मानसिक अवसाद से घिर जाते हैं ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, भारत में युवाओं की आत्महत्या दर दुनिया में सबसे अधिक है। अगर युवा पीढ़ी ही मानसिक रूप से बीमार, असहाय हो तो हम कैसे उम्मीद करें कि भारत एक विकसित और मजबूत राष्ट्र बनेगा? इसीलिए, युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को बहुआयामी दृष्टिकोण से देखना बेहद जरूरी है — जिसमें ऐतिहासिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, जैविक, भौगोलिक और भावनात्मक सभी पक्ष शामिल हों।

अंततः — **कोई भी राष्ट्र तब तक स्वस्थ नहीं कहा जा सकता जब तक उसका युवा मानसिक रूप से स्वस्थ न हो।**

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत में मानसिक रोगों को लंबे समय तक अंधविश्वास और कलंक के दायरे में रखा गया। भूत-प्रेत, कर्मफल जैसी धारणाओं ने मानसिक रोगों को न केवल गलत समझा, बल्कि, पीड़ितों को समाज में अपमानित और अलग-थलग भी किया। ब्रिटिश काल में बने मानसिक चिकित्सालय भी मानवीय उपचार का केंद्र न होकर, रोगियों को समाज से दूर रखने का साधन थे। "पागलखाना" जैसे शब्दों ने इस कलंक को और गहरा किया।

आज भी कई गाँवों में मानसिक रोग को गंदी आत्माओं का प्रकोप माना जाता है। लोग पहले ओझा, तांत्रिक या झाड़-फूँक वाले के पास जाते हैं, और जब स्थिति बिगड़ जाती है तब डॉक्टर की याद आती है।

इतने सालों में मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं मिल पाई क्योंकि दिखने वाला शारीरिक रोग अधिक महत्वपूर्ण समझा गया, जबकि अदृश्य मानसिक दर्द को नज़रअंदाज कर दिया गया। यही कारण है कि मानसिक स्वास्थ्य, विशेषकर युवाओं का मानसिक स्वास्थ्य, आज इतना बड़ा संकट बनकर देश के सामने खड़ा है।

राजनीतिक और नीति से जुड़े आयाम

भारत के संविधान में ''स्वास्थ्य'' राज्य सूची का विषय है, लेकिन मानसिक स्वास्थ्य अक्सर बजट और नीतियों में पीछे रह जाता है। 2014 की राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य नीति और 2017 का मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम इस दिशा में बदलाव के प्रयास रहे, पर ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वयन में कमी रही।

केंद्र सरकार की 'किरण' हेल्पलाइन और राष्ट्रीय टेली-मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे कदम सराहनीय हैं, लेकिन व्यापक समस्या के सामने यह प्रयास अपर्याप्त साबित हुए हैं। स्कूलों और कॉलेजों में परामर्श सेवाओं की घोषणाएँ तो होती हैं, परंतु धरातल पर सुविधाएँ बहुत सीमित हैं। जब तक नीति-निर्माताओं में इच्छाशक्ति नहीं आएगी, तब तक युवा मानसिक स्वास्थ्य उपेक्षित ही रहेगा।

भौगोलिक चुनौतियाँ

भारत का विशाल और विविध भौगोलिक परिदृश्य मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की असमान पहुँच को उजागर करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में न मनोचिकित्सक हैं, न प्रशिक्षित काउंसेलर और न ही प्रभावी हेल्पलाइन तक पहुँच। ग्रामीण युवा अक्सर घुटन, डर या निराशा में फँसकर चुप रहना पसंद करते हैं।

शहरों में भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। प्रतियोगिता, सोशल मीडिया का दबाव, अकेलापन और तेज़ रफ्तार जीवन शहरी युवाओं को प्रभावित करती है। मेट्रो शहरों में परिवार से दूर रह रहे लाखों युवा काम का तनाव और सामाजिक अलगाव झेलते हैं।

पूर्वोत्तर, हिमालयी और आदिवासी क्षेत्रों में तो स्थिति और भी खराब है। वहां बुनियादी सड़क, संचार, और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव युवाओं को मानसिक संकट में डाल देता है। प्राकृतिक

आपदाओं या संघर्षग्रस्त क्षेत्रों के युवाओं को भय, हिंसा और असुरक्षा का अतिरिक्त बोझ उठाना पड़ता है। इसीलिए भौगोलिक दृष्टिकोण से **एक ही नीति पूरे देश में लागू नहीं हो सकती** — हर क्षेत्र की अलग-अलग ज़रूरतों को पहचानकर काम करना होगा।

आर्थिक आयाम

भारतीय युवा अपनी पढ़ाई, नौकरी और सम्मानजनक जीवन के सपने संजोते हैं, परंतु बेरोजगारी और आर्थिक अस्थिरता उनकी मानसिक शांति को बुरी तरह तोड़ देती है। कोचिंग हब में आत्महत्या की घटनाएँ, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव, पारिवारिक अपेक्षाओं का भार — ये सब युवाओं को डिप्रेशन और हताशा की ओर धकेलते हैं।

गरीब या ग्रामीण युवाओं के लिए तो मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ दूर का सपना हैं। कई बार वे दर्द को शराब, ड्रग्स या अन्य नशे से दबाने की कोशिश करते हैं। कोविड-19 महामारी ने रोज़गार, शिक्षा और भविष्य की अनिश्चितता को और गहरा दिया।

साथ ही सोशल मीडिया पर अमीरी और आडंबर को देखकर कई युवा हीनभावना और असंतोष का शिकार होते हैं। इसीलिए केवल परामर्श सेवाओं से बात नहीं बनेगी — रोज़गार बढ़ाना, कौशल विकास, और युवाओं के लिए आर्थिक सुरक्षा देना भी मानसिक स्वास्थ्य सुधार का अभिन्न अंग होना चाहिए।

सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू

भारतीय समाज में मानसिक बीमारी को आज भी कमजोरी माना जाता है। "लड़के रोते नहीं", "लड़कियों को सहना चाहिए" जैसे वाक्य युवाओं को अपनी भावनाएँ छुपाने पर मजबूर करते हैं। पितृसत्ता, विवाह-दहेज का दबाव, यौन शोषण और कैरियर में हस्तक्षेप — यह सब विशेषकर लड़कियों के मानसिक स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालते हैं।

इसके अलावा, सोशल मीडिया पर "आदर्श ज़िंदगी" के झूठे प्रदर्शन ने युवा मन में तुलना, चिंता और अकेलेपन को बढ़ाया है।

संयुक्त परिवारों का विघटन भी युवाओं से भावनात्मक सहारा छीन लेता है। बुजुर्गों का अनुभव, प्रेम, सहानुभूति कम होती जा रही है। शिक्षा व्यवस्था में भी भावनात्मक विकास की बजाय केवल अंक और रैंक पर ज़ोर है, जो मानसिक संतुलन को बिगाड़ता है।

जैविक दृष्टिकोण

किशोर और युवा अवस्था में हार्मोनल बदलाव, न्यूरोकेमिकल परिवर्तन और मस्तिष्क की संरचना में बदलाव युवाओं को भावनात्मक रूप से अस्थिर बनाते हैं। इसी कारण 15–25 वर्ष की आयु में डिप्रेशन, एंग्जायटी और बायपोलर जैसे विकार ज़्यादा देखे जाते हैं।

यदि परिवार में मानसिक बीमारी का इतिहास रहा हो, तो खतरा और बढ़ जाता है।

साथ ही नशा, नींद की कमी, पोषण की कमी (जैसे विटामिन B12, आयरन की कमी) भी मानसिक असंतुलन को जन्म देती है। देर रात तक मोबाइल, गेमिंग और सोशल मीडिया का इस्तेमाल नींद छीन लेता है, जो वैज्ञानिक रूप से मानसिक रोगों का प्रवेश द्वार मानी जाती है।

सामाजिक असमानताएँ

जातिगत भेदभाव, धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति घृणा, क्षेत्रीय असमानताएँ — यह सब युवाओं के आत्मसम्मान और आत्मबल को तोड़ देते हैं। जब कोई युवा अपने धर्म, जाति, लिंग या भाषा के कारण अपमानित महसूस करता है, तो उसका मानसिक संतुलन बिगड़ता है।

संविधान समानता की गारंटी देता है, लेकिन सामाजिक व्यवहार में भेदभाव अब भी दिखता है। युवाओं को गरिमा और समान अवसर देना मानसिक स्वास्थ्य सुधार की नींव साबित हो सकती है।

मुख्य चुनौतियाँ

- **प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी** — मनोचिकित्सक, काउंसलर, सामाजिक कार्यकर्ता की भारी कमी।
- **मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता का अभाव** — माता-पिता, शिक्षक और डॉक्टर तक लक्षण पहचान नहीं पाते।
- **कलंक और शर्म** — मानसिक बीमारी को 'पागलपन' मानकर मदद लेने में देरी।
- **सुविधाओं में असमानता** — ग्रामीण-शहरी, अमीर-गरीब, पुरुष-महिला के बीच गहरी खाई।
- **अंधविश्वास** — झाड़-फूँक जैसी प्रथाएँ।
- **नीति क्रियान्वयन में कमजोरी** — अधिनियम और

योजनाओं का धरातल पर सीमित असर।

- **डिजिटल मीडिया का दुष्प्रभाव** — सोशल मीडिया ट्रोलिंग, साइबरबुलिंग, स्क्रीन-एडिक्शन।

इन चुनौतियों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि मानसिक स्वास्थ्य केवल डॉक्टरों या दवाओं का मामला नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी सहयोग से ही इसे ठीक किया जा सकता है।

हाल के प्रयास

सरकारी और सामाजिक संगठनों ने हाल ही में कई सकारात्मक पहल की हैं।

- **मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम,** 2017 ने इसे मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी। इसका उद्देश्य यह था कि मानसिक रूप से परेशान व्यक्ति को, गरिमा के साथ, बिना भेदभाव, सही इलाज मिल सके।
- **किरण हेल्पलाइन:** केंद्रीय स्तर पर शुरू की गई **किरण हेल्पलाइन** (टोल-फ्री 24x7) युवाओं को तुरंत काउंसलिंग देने का प्रयास है।
- **राष्ट्रीय टेली-मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम:** टेली-काउंसलिंग से दूर-दराज़ के युवाओं तक पहुँचने में मदद मिली है, भले ही यह अभी शुरुआती स्तर पर है।
- **आयुष्मान भारत** में स्कूल-आधारित मानसिक स्वास्थ्य सत्र की पहल।
- **द लाइव लव लाफ फाउंडेशन** (दीपिका पादुकोण द्वारा स्थापित): डिप्रेशन, आत्महत्या पर खुलकर बातचीत की पहल।

ये प्रयास आशा की किरण दिखाते हैं, पर करोड़ों युवाओं की तुलना में अब भी बहुत ही अपर्याप्त है ।

आगे की राह और समाधान

भारत में युवा मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने के लिए बहुस्तरीय रणनीति अपनानी होगी:

- **नीति और बजट:** मानसिक स्वास्थ्य बजट को बढ़ाकर कुल स्वास्थ्य बजट का 5% किया जाए, जिला-स्तर पर परामर्श अनिवार्य बनाया जाए।
- **शिक्षा:** पाठ्यक्रम में भावनात्मक शिक्षा, जीवन कौशल, संवाद और टीमवर्क की ट्रेनिंग की सुविधा प्रदान करना।
- **सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार:** कलंक तोड़ने के लिए जागरूकता अभियान, माता-पिता और शिक्षकों को संवेदनशील बनाना।
- **आर्थिक उपाय:** रोजगार, कौशल विकास, मुफ्त या रियायती मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ।
- **तकनीकी उपाय:** टेली-काउन्सेलिंग, डिजिटल हेल्पलाइन, एआई-चैटबॉट आधारित गोपनीय परामर्श की व्यवस्था मुहैया कराना।
- **पारिवारिक स्तर:** परिवार में संवाद को बढ़ावा देना, बच्चों की भावनाओं को महत्व देना।
- **वंचित समूहों के लिए:** दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, संघर्षग्रस्त क्षेत्रों के युवाओं के लिए अलग परामर्श की व्यवस्था मुहैया कराना।

निष्कर्ष

भारत के युवा ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति हैं, और उनका मानसिक रूप से स्वस्थ रहना राष्ट्र निर्माण की नींव है। हमें यह स्वीकारना होगा कि मानसिक स्वास्थ्य कोई शर्म की बात नहीं, बल्कि हर युवा का अधिकार है। ऐतिहासिक अंधविश्वास, सामाजिक कलंक, और भौगोलिक असमानताओं को तोड़कर, नीति, समाज, परिवार और तकनीक का सामूहिक प्रयास ही इस संकट का समाधान दे सकता है।

समय रहते यदि हम बहुआयामी रणनीति अपनाएँ, तो मानसिक स्वास्थ्य के संकट को अवसर में बदला जा सकता है। क्योंकि —

'कोई भी राष्ट्र तब तक स्वस्थ और समर्थ नहीं बन सकता, जब तक उसके युवा मानसिक रूप से मजबूत, सशक्त और खुशहाल न हों।"

श्री अजय चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत देश महान

सर पर हिमालय है इसका ताज,
हृदय में बहती नदियों की माला,
तीन दिशा से सागर हैं इसकी शान,
ऐसा है मेरा भारत देश महान।

रंग बिरंगे फूल के जैसे हिंदू मुस्लिम,
सिख ईसाई है इसकी संतान,
वृक्षों में कलख करती कोयल, खेतों में,
लहलहाते फसल, मिट्टी की सोंधी,
खुशबू है इसकी पहचान,
ऐसा है मेरा भारत देश महान।

वीर-धीर योगी ऋषि करते हैं,
सदियों से वास यहाँ,
माता-पिता की सेवा करते हैं,
पुत्र श्रवण कुमार यहाँ,
कर्मवीर कर्त्तव्यपरायण हैं इंसान यहाँ,
ऐसा है मेरा भारत देश महान।

नेताजी की वीरता पर है शीश नमन और सम्मान
लहराता तिरंगा है यहाँ हर घर की शान
वीर हथेली पर लेकर जान करते हैं
न्योछावर प्राण,,,
ऐसा है मेरा भारत देश महान।

सुश्री सोनिया
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय के श्री राना देब, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (वाणि.)/ए.एम.जी.-IV (एफ.ए.पी.) द्वारा रचित आलेख, Institute of Cost and Management Accountants of India (ICMAI) के मासिक जर्नल (Monthly Journal - May 2025) में प्रकाशित-

श्री राना देब, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (वाणि.)/ए.एम.जी.-IV (एफ.ए.पी.) द्वारा Institute of Cost and Management Accountants of India (ICMAI) के मासिक जर्नल (Monthly Journal- May 2025) में "C&AG of India a Regulatory Body of Indian Auditing System rolls on to achieve VIKSIT BHARAT: 2047", शीर्षक आलेख प्रकाशित की गई है, जो कि इस कार्यालय के लिए अत्यंत गौरव और हर्ष का विषय है। तदनुसार उक्त प्रकाशित आलेख के विषय में पाठकों को अवगत कराने हेतु संबंधित जर्नल में प्रकाशित आलेख का स्नैपशॉट आपके समक्ष प्रस्तुत है-

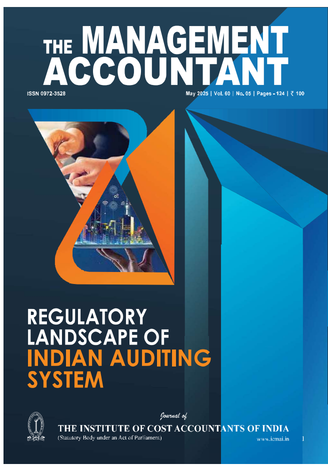

COVER STORY

C&AG OF INDIA - A REGULATORY BODY OF INDIAN AUDITING SYSTEM ROLLS ON TO ACHIEVE VIKSIT BHARAT: 2047

Abstract

C&AG of India-one of the Bulwarks of the Democratic System of India through its Strategic Management Process rolls on to become a Global Leader in the public sector auditing and accounting. Through its Strategic Plan to achieve Viksit Bharat 2047, following the Global Accepted Standards/ Principles of Financial Disciplines, C&AG will distribute the benefits of Global expertise and become a stakeholder of India's advancement across various Goals as set in SDGs and development of India - 'Sabka Saath, Sabka Vikash'.

CMA Rana Deb
Senior Audit Officer (Com.)
C&AG of India
O/ o The Pr. Accountant General (Audit-II)
Kolkata
deb.rana9@gmail.com

Introduction:

1947- The Year of Joy for the Indians as India became independent from the British rule. Thereafter, so many years have passed and we tried to make this democratic country developed and peaceful. India's advocacy for 'Vasudhaiva Kutumbakam' (The World is One Family) and it's role in amplifying the voice of the Global South demonstrated the nation's commitment to sustainable development, as evidenced during our G20 Presidency. The Vision of Government of India is to transform India into a developed nation by it's 100th year of Independence in 2047-Viksit Bharat@2047.

The Supreme Audit Institution (C&AG), one of the Bulwarks of the Democratic System of India, plays a vital role in shaping India into 'Developed India' by 2047 *i.e.* Viksit Bharat 2047. The C&AG of India being the Constitutional Authority[1] is responsible for accounting and auditing the public exchequer. Fiscal Federalism is the backbone of India's economic governance. Over the past decades, Government of India has laid a robust foundation for fiscal federalism through increase in the Gross Transfer of resources/ funds (*viz*. Rs.5.35 Lakh Crore in 2013-14 to Rs. 21.12 Lakh Crore in 2024-25)[2] to the States. The C&AG through its reports[3] can suggest[4]/ guide the Government in shaping 'Developed India by 2047'.

Vision of C&AG:

Vision of the C&AG of India is to be a **Global**

[1] Article-148 of the Constitution of India: establishes C&AG, Article-149: deals with Duties & Powers of the C&AG (DPC Act, 1971 passed by the Parliament of India), Article-151: deals with the C&AG's Audit Reports.
[2] Source: RBI Report: State Finances: A Study of Budget of 2024-25).
[3] The Accountability of the Executives (Council of Ministers) to the Indian Parliament/ Legislature is secured through C&AG's Audit Reports (*viz*. Report on Finance Accounts, Report on Appropriation Accounts, Report -Civil, Report-Revenue Receipt, and Report -Commercial).
[4] Suggestions/ Recommendations in Audit Reports on important Tangible and Intangible resources (*viz*. Infrastructure Development, Natural Resources, Blue Economy, Arts & Cultures, Gender Equality, Poverty, Health & Education, Peace, Justice & Strong Institutions including the subjects as set forth in SDG).

कोलकाता में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के आधिकारिक दौरे की कुछ झलकियाँ

आई.ए.एंड ए.डी. पूर्वी क्षेत्र क्रिकेट प्रतियोगिता 2024-25 की झलकियाँ

कार्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियाँ

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियाँ

हिंदी अनुभाग द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन

- ★ टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।
- ★ मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए।
- ★ शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- ★ अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- ★ अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

राजभाषा हिंदी संबंधी प्रावधानों का अनुपालन करना हम सभी सरकारी कार्मिकों का संवैधानिक दायित्व है।

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700 064